एलेन जी. व्हाइट

महान संघर्ष



New Covenant Publications: Hindi

ISBN: 359-2-85933-609-1

ISBN: 359-2-85933-609-1

प्रकाशन डेटा में कैटलॉगिंग

संपादित और डिज़ाइन किया गया: न्यू कोवेनेंट पब्लिकेशन्स इंटरनेशनल ग्रुप

यूनाइटेड किंगडम में मुद्रित।
पहली छपाई 26 मई 2020

द्वारा प्रकाशित: New Covenant Publications International Ltd.,

Kemp House, 160 City Road, London, EC1V 2NX

वेबसाइट पर जाएँ:: www.newcovenant.co.uk

यह पृष्ठ स्वेच्छा से खाली छोड़ा गया है।

New Covenant Publications



International Ltd.

सुधारित पुस्तकें, परिवर्तित मन

New Covenant Publications International Ltd.,
Kemp House, 160 City Road, London, EC1V 2NX

मेल पता: newcovenantpublicationsintl@gmail.com

आभार

यह पुस्तक ईश्वर को समर्पित है।

प्रस्तावना

अंतर्राष्ट्रीय न्यूकॉवेनेंट प्रकरशन परठक को स्वर और् पथृवी को जोड़नेवरली दिव्य योजनर सेपनुः जोड़तर हैऔर् प्रेम केव्यवस्थर की अनंततर को मजबतू कर्तर है। यह लोगो, वाचा का संदूक, मसीह यीशुऔर् उनके लोर्ों के बीि की घदनष्ठतर और् पर्मेश्वर् केव्यवस्थर की कें द्रीयतर कर प्रतीक है। (2) जैसा लिखा है, परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। (यिर्मयाह अध्याय 31:31-33; यिर्मयाह अध्याय 8:8) इसदलए, नई वरिर उन लोर्ों को र्ले लर्रती हैदजनकेदिलों मेंउसकर प्रेम और् दनयम एकजटु और् अंदकत होतेहैं, यहरं तक दक दहसं क संघर्ा, व्यदििरर् और वह भी ऐसे विरोध के बीच, जिसका सामना करना असंभव प्रतीत होता है।

असंख्य शताब्दियों से, कई लोगों ने कष्टदायक यातनाएं, अकल्पनीय उत्पीड़न और आक्रामक युद्धों का सामना किया है, जो सत्य को मिटाने और परमेश्वर के ज्ञान को समाप्त करने के लिए रचे गए थे। विशेष रूप से अंधकार युग में, सत्य को मानव परंपराओं और लोकप्रिय अज्ञानता द्वारा काफी हद तक छिपा दिया गया था, क्योंकि दुनिया के निवासियों ने ज्ञान को तुच्छ समझा और वाचा का उल्लंघन किया। बुराइयों के साथ समझौते की इस बीमारी ने इस तरह की असीम पतनशीलता और शैतानी अमानवीयता को उकसाया, कि कई लोगों के जीवन को अन्यायपूर्वक बलिदान कर दिया गया, जिन्होंने विवेक के अधिकार को छोड़ने से इनकार कर दिया। फिर भी, खोया हुआ ज्ञान पुनः प्राप्त किया गया, विशेष रूप से सुधार काल के दौरान

इतिहास, विशेष रूप से 16 वीं शताब्दी के सुधार युग के दौरान, सत्य के एक महत्वपूर्ण क्षण, मौलिक परिवर्तन और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न अशांति को दर्शाता है, जैसा कि प्रतिशोधी सुधार (काउंटर-रेफॉर्मशन) आंदोलन में परिलक्षित होता है। हालांकि, इस ग्रंथ के माध्यम से, सुधारकों और अन्य प्रत्यक्षदर्शियों के दृष्टिकोण से इस अद्वितीय क्रांति के अचूक महत्व को फिर से खोजा जा सकता है। उनकी नज़रों से,, इन विध्वंसकारी लड़ाइयों और ऐसी असाधारण प्रतिरोध की गहन कारणों को समझा जा सकता है। कोई भी व्यक्ति इस दौरान उत्पन्न अपार रहस्यों, कटु विवादों और अलौकिक हस्तक्षेपों की गहराई में जा सकता है।

हमारा उद्देश्य: "सुधारित पुस्तकें, परिवर्तित मन," उस विशिष्ट साहित्य की शैली को उजागर करता है, जो एक महत्वपूर्ण युग में लिखा गया था और उसके प्रभाव को दर्शाता है। यह व्यक्तिगत सुधार, पुनर्जन्म और परिवर्तन की अनिवार्यता को भी प्रतिध्वनित करता है। जिस प्रकार लगभग 500 साल पहले गुटेनबर्ग की प्रिंटिंग प्रेस और अनुवाद के माध्यम से सुधारित विश्वास के सिद्धांतों का प्रसार हुआ था, उसी प्रकार डिजिटल प्रेस, ऑनलाइन पुस्तकालयों और सोशल मीडिया के माध्यम से इन अंतिम समयों में सत्य का प्रकाश हर भाषा में प्रसारित होगा।

विषयसूची

अध्याय 1 - शैतान का, पाप में गिरना 5
अध्याय 2 - मनुष्य का पतन 7
अध्याय 3 - उद्धार की योजना 9
अध्याय 4 - ख्रीस्त-यीशु का पहला आगमन 12
अध्याय 5 - यीशु की सेवकाई 16
अध्याय 6 - यीशु का बदला हुआ रूप 19
अध्याय 7 - ख्रीस्त का पकड़वाया जाना 22
अध्याय 8 - यीशु का न्याय होता है। 25
अध्याय 9 - ख्रीस्त का क्रूसघात 29
अध्याय 10 - ख्रीस्त का पुनरुज्जीवन 33
अध्याय 11 - पाठ ११ - ख्रीस्त का स्वर्गारोहण 38
अध्याय 12 - पाठ १२ - ख्रीस्त के चेले 40
अध्याय 13 - पाठ १३ - स्तिफनुस की मृत्यु 44
अध्याय 14 - पाठ १५ - यहूदियों ने पौलुस को मार डालने का निर्णय किया 47
अध्याय 15 - पाठ १६ - पौलुस यरूशलेम जाता है 50
अध्याय 16 - पाठ १७ - महान धर्मपतन 53
अध्याय 17 - पाठ १८ - पाप का रहस्य 56
अध्याय 18 - पाठ १९ - मृत्यु अनन्त काल तक का दुःखमय जीवन नहीं 59
अध्याय 20 - पाठ २० - धर्म सुधार 63
अध्याय 21 - पाठ २१ - मण्डली और दुनिया में एकता होती है 66
अध्याय 22 - पाठ २२ - विलियम मिल्लर 68
अध्याय 23 - पाठ २३ - पहिला दूत के समाचार 71
अध्याय 24 - पाठ २४ दूसरा दूत के समाचार 75
अध्याय 25 - पाठ २५ - आगमन के आन्दोलन का उदाहरण 77
अध्याय 26 - पाठ २६ - दूसरा उदाहरण 81

अध्याय 27 - पाठ २७ - पवित्र स्थान 85
अध्याय 28 - पाठ २८ - तीसरे दूत के समाचार 88
अध्याय 29 - पाठ २९ - एक मजबूत बेदी 92
अध्याय 30 - पाठ ३० - प्रेतवाद 95
अध्याय 31 - पाठ ३१ - लालच 99
अध्याय 32 - पाठ ३२ - डगमगाहट 102
अध्याय 33 - पाठ ३३ - बाबुल के पाप 105
अध्याय 34 - पाठ ३४ - जोरों की पुकार 108
अध्याय 35 - पाठ ३५ - तीसरा दूत के समाचार बन्द हुए 110
अध्याय 36 - पाठ ३७ - सन्तों को छुटकारा मिला 114
अध्याय 37 - पाठ ३८ - सन्तों को पुरस्कार मिलता है 117
अध्याय 38 - पाठ ३९ - पृथ्वी उजाड़ की दशा में 118
अध्याय 39 - पाठ ४० - दूसरा पुनरुत्थान 120
अध्याय 40 - पाठ ४१ - दूसरी मृत्यु 122

अध्याय 1 - शैतान का, पाप में गिरना

श्रीमती एलेन जी ह्वाईट कहती है कि प्रभु ने मुझे दर्शन में बताया कि शैतान स्वर्ग में सम्मानित दूत था। वह यीशु के बाद दूसरा आदरवान व्यक्ति था। उस के चेहरे से नम्रता और खुशी झलकती थी। वह दूसरे दूतों के जैसा पवित्र था। उसका कपाल उठा हुआ और चौड़ा था जो बुद्धिमान होने का संकेत था। उस का शरीर सुडौल था। वह सज्जनता और गौरव से परिपूर्ण था। जब मैं देखी - ईश्वर ने अपने पुत्र यीशु और पवित्रात्मा से कहा कि चलो हम मनुष्य को अपने स्वरूप बनाएँ। शैतान उस वक्त यीशु से डाह करने लगा। वह चाहता था कि मनुष्य की सृष्टि के समय उस की सलाह भी लेनी चाहिए थी। वह ईर्ष्या, द्वेष और घृणा से भर गया। वह स्वर्ग में सब दूतों से बड़ा पर ईश्वर का पुत्र से छोटा माना जाता था। वह यीशु से बहुत बड़ा गौरव पाना चाहता था। इस समय तक स्वर्ग में कोई गड़बड़ी नहीं थी। ईश्वर के राज्य की शासन-व्यवस्था सब ठीक-ठाक थी। GCH 1.1

ईश्वर के शासन और इच्छा के विरूद्ध चलना ही सब से बड़ा पाप का उदय हुआ। ऐसा लगा कि स्वर्ग की शासन-व्यवस्था ही डगमगा गयी। स्वर्ग दूतगण अपने प्रधान दूत (शैतान) के अe न में एक कम्पनी बनाने लगे। सब दूत छिन्न-भिन्न हो गये। लुसीफर ईश्वर का राज्य के विरूद्ध दूसरे दूतों को भड़काने लगा। यीशु का अधीन में नहीं रह कर अपने को उस से अधिक ऊँचा दर्जा में रखना चाहता था। कुछ दूतगण तो शैतान से मिल गए पर अधिकांश ईश्वर की बुद्धि और महिमा को जान कर तथा यीशु को अपने राज्य का अधिकार ठहराने को सही समझ कर उस के पक्ष हो कर लड़ने लगे। इस प्रकार आपस में दूतगण लड़ पड़े। जो दूत शैतान के पक्ष में थे, उन्होंने ईश्वर की अगम और असीम बुद्धि को देखा, जिसने यीशु को ऊँचा उठा कर उसे असीम शक्ति और अधिकार दिये थे। इसलिये ईश्वर के पुत्र के अधिकार का विरोध करने लगे। सब दूतों को ईश्वर के सामने बुलाकर इस मामला को ईश्वर ने सुलझाना चाहा। यहाँ फैसला किया गया कि शैतान को स्वर्ग से बाहर निकाला जाये। शैतान के सहदूतों को भी जिन्होंने विद्रोह किया था, उन्हें भी। तब स्वर्ग में लड़ाई छिड़ गई। सब दूत लड़ने लगे। शैतान चाहता था कि यीशु पर विजय प्राप्त करे और उस के पक्ष में जो दूत थे उन पर भी। लेकिन अच्छे और सच्चे दूतों की विजयी हुई। शैतान और बुरे दूत स्वर्ग से ढ़केल कर गिरा दिए गए। GCH 1.2

जब शैतान और उस के दूत स्वर्ग से नीचे गिरा दिये गए तो उनकी पवित्रता और महिमा सब सदा के लिए खत्म हो गई। लड़ाई के पहले पश्चाताप करने का काफी अवसर उन्हें दिया गया था। पर ढिठाई से पश्चाताप नहीं किए। उस के द्वारा पाप जगत में आया और विद्रोह का बीज भी बोया गया। अभी उन को अन्तिम दिन में पाप की सजा देने के लिए रखा गया है। GCH 2.1

जब शैतान के होश आये तो उसने सोचा कि अब ईश्वर की मेहरबानी उस पर नहीं होगी, तब वह उस के विरूद्ध काम करने लगा। अपने साथी दूतों के साथ सलाह कर ईश्वर की शासन-

व्यवस्था के विरूद्ध उत्पात मचाने लगा। जब आदम और हव्वा अदन-बारी में थे तो शैतान उन को बर्बाद करने का उपाय सोचने लगा। अपने बुरे दूतों के साथ सलाह करने लगा। जब तक ये दम्पत्ति ईश्वर की आज्ञा मानते रहेंगे तब तक उनका सुखी जीवन का अन्त न होगा। जब तक वे ईश्वर की आज्ञा मानेंगे तब तक शैतान उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता था और न अपने पक्ष में ला सकता था। इसलिये उन्होंने सोचा कि ईश्वर का अनाज्ञाकारी बनाने के लिये तथा ईश्वर का क्रोध उन पर भड़काने के लिये और अपने कब्जे में करने के लिये कुछ करना है। इस विचार से शैतान ने साँप का रूप धारण किया और उन से बात कर उनकी रूचि जगायी। उसने ईश्वर की कही हुई सच्चाई के प्रति भ्रम पैदा किया और कहा - 'क्या सचमुच ईश्वर ने जो कहा है, सत्य है ?' ऐसा भ्रम पैदा कर उसने ईश्वर की असीम योजना को बिगाड़ डाला, जिसमें भलाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष का फल नहीं खाने के लिये बोला गया था। GCH 2.2

आधारित बाईबिल अध्याय - यहेजकेल २८:१-१९

यशाः १४-१२-२० प्रकाशित वाक्य १२:७-९॥ GCH 3.1

अध्याय 2 - मनुष्य का पतन

एलेन जी ह्वाईट कहती है - 'मैंने पवित्र स्वर्ग दूतों को सदा अदनबारी में घुमते देखी। वे आदम और हव्वा को बागन में रहने का मतलब बताते थे। शैतान और बुरे दूतों को स्वर्ग से गिरने का कारण समझाते थे। स्वर्ग दूतों ने उन्हें चेतावनी दे कर समझाया था कि वे बागन में अकेला न घुमें। ऐसा हो सकता था कि शैतान के सम्पर्क में कभी आ जायेंगे। दूतों ने उन्हें उमझाया था कि ईश्वर के निर्देश का ठीक-ठाक पालन करें। सम्पूर्ण रूप से आज्ञा मान कर ही वे सुरक्षित रह सकते हैं। यदि वे ईश्वर के पूर्ण आज्ञाकारी बने रहेंगे तो शैतान उनका कुछ बिगाड़ न सकेगा। GCH 4.1

शैतान ने हवा के साथ बात कर उसे ईश्वर की आज्ञा नहीं मानने के लिए बहकाया। हवा की पहली गलती अपने पति से भटकने की थी। दूसरी, वर्जित वृक्ष का फल न खाने के आस-पास घूमना, और तीसरी गलती परीक्षा में डालने वाले शैतान की बात सुननी थी। इस के बाद ईश्वर की बातों पर भी संदेह करना था। जिस दिन तुम इसका फल खाओगे निश्चय उस दिन तुम मर जाओगे। उस ने सोचा कि ईश्वर ने जैसा कहा है वैसा नहीं हो सकता है। वह अनाज्ञाकारी बनी। उसने हाथ बढ़ा कर फल तोड़ लिया और खाया भी। यह देखने और खाने दोनों में मनभावन लगता था। यह सोच कर ईष्र्या कर रही थी कि जो फल अच्छा है। उसे खाने से मना कर ईश्वर ने अच्छा नहीं किया है। अपने पति को लालच में डालकर फल भी खाने को दी। जो कुछ साँप ने कहा था उसे भी उसने अपने पति को बताया। शैतान को बोलने की शक्ति मिली है उस पर भी वह आश्चर्य कर रही थी। GCH 4.2

आदम के चेहरे में जो उदासी थी मैंने उसे देखी। वह भयभीत और विस्मित दिखाई दे रहा था। उस के मन में एक संघर्ष चल रहा था। वह सोच रहा था कि यही वह दुश्मन है जिस के विषय उन्हें चेतावनी दी गई थी। अब उस की धर्मपत्नी मरेगी। वे अलग हो जायेंगे। हव्वा को वह बहुत प्यार करता था। बहुत उदास के साथ अन्त में उसने भी फल को छीन कर खा डाला। इसे देख कर शैतान बहुत खुश हुआ। उसने स्वर्ग में विद्रोह किया था। जो उस के पीछे चलते हैं उन पर वह सहानुभूति दिखा कर उनसे प्रेम करता है। वह गिरा और दूसरों को भी गिराता है। अब उसने स्त्री को ईश्वर की बातों पर सन्देह करवा कर उसकी असीम बुद्धि के विषय और उद्धार की योजना के विषय अविश्वास पैदा किया। शैतान को मालूम था कि स्त्री के साथ उसका पति भी पाप करेगा। आदम अपनी पत्नी के प्रेम-वश में होकर, ईश्वर की आज्ञा नहीं मानकर, पाप में गिरा। GCH 5.1

मनुष्य के पाप में गिरने की खबर पूरे स्वर्ग में फैल गई। स्वर्गदूतों का वीणा बजाना बन्द हो गया। दूतों ने उदास होकर अपने मुकुट उतार कर फेंक दिए। सारा स्वर्ग में सनसनी फैल गई। इस दम्पत्ति को क्या करना होगा, इसका विचार होने लगा। वे डरने लगे कि कहीं वे जीवन का वृक्ष का फल खाकर अमर पापी तो न बन जाएँ। ईश्वर ने कहा कि उन्हें अदनबारी से निकाल बाहर करना होगा। तुरन्त स्वर्ग दूतों को जीवन का वृक्ष के पास कड़ा पहरा में लगा दिया गया। यह शैतान

की ही योजना थी कि आदम और हव्वा ईश्वर की आज्ञा तोड़े। ईश्वर का क्रोध का शिकार बनें। जीवन का वृक्ष का भी फल खायें। अमर पापी बनकर सदा उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते रहें। पर पवित्र दूतों को भेज कर उन्हें बागन से निकाला गया। इन दूतों के हाथ में चमकती हुई तलवारें थीं। GCH 5.2

इस तरह शैतान को, मनुष्य को ठगने में, सफलता मिली। अपने पतन के साथ दूसरों को भी दुःख दिलाया। वह स्वर्ग से बाहर हुआ और ये पारादीश से। GCH 5.3

आधारित बाईबिल अध्याय - उत्पत्ति ३ का पूरा। GCH 5.4

अध्याय 3 - उद्धार की योजना

जब यह मालूम हुआ कि जिस जगत की सृष्टि कर ईश्वर ने वहाँ मनुष्य को रखा था, वह पाप में गिर कर दुःख-कष्ट बीमारी और मृत्यु लाई है और इससे बचने का कोई उपाय नहीं है तो स्वर्ग में उदासी छा गई। आदम के वंश के सब लोग मरेंगे। मैंने यीशु के चेहरे में उदासी और सहानुभूति की झलक देखी। मैंने तुरन्त ही एक तेज ज्योति देखी जो पिता के पास आकर घेर ली। जब यीशु पिता से बात कर रहा था तो दूतों की चिन्ता और भी बढ़ गयी। तीन बार वह पिता की महिमा रूपी ज्योति से ढाँकी गयी पर आखिर में निकला। उसके चेहरे में घबड़ाहट और कष्ट की झलक नहीं थी। पर उदारता और नम्रता से ऐसा भरा हुआ दिखाई दिया जिसका शब्दों से वर्णन नहीं किया जा सकता है। अन्त में उसने स्वर्गदूतों का दल को बता दिया कि मनुष्य को बचाने का उपाय हूँढ़ा गया है। उसने कहा कि मैं पिता से अर्जी कर रहा था। मनुष्य को बचाने वास्ते। मैं अपने प्राण को बलिदान करना चाहता हूँ, जिसके द्वारा मनुष्य को उद्धार प्राप्त हो। उस के खून की कीमत से, ईश्वर की व्यवस्था को मानने से, वह ईश्वर का अनुग्रह उनके लिये प्राप्त करे। फिर से सुन्दर बागन में आकर जीवन का वृक्ष का फल खा सके। GCH 6.1

शुरू में तो स्वर्गदूतों के बीच हर्ष नहीं देखा गया था। क्योंकि उनका कप्तान (यीशु) ने उन के बीच उद्धार की योजना के विषय कुछ भी नहीं बताया था। पर कुछ न छिपा कर अपनी मृत्य का भी अन्त में वर्णन किया। उसने कहा कि वह पिता के वचनों और पापी मानव के बीच खड़ा होकर पुल बनेगा। वह उन के पापों और अपराधों का बोझ ढोयेगा। इस पर भी बहुत कम लोग उसे ईश्वर का पुत्र सरीखा मानेंगे। प्रायः सब लोग उसे घृणा कर इन्कार करेंगे। वह स्वर्ग की सब महिमा को छोड़ कर पृथ्वी में मनुष्य का अवतार लेकर आयेगा। मनुष्य के समान दीन होगा। अपने अनुभव से सब प्रकार की परीक्षाओं और प्रलोभनों का सामना करेगा जिसे मानवजाति को करना पड़ता है। अपने अनुभव से उन्हें परीक्षाओं से बचायेगा। अन्त में एक शिक्षक होने के नाते उन्हें बचा कर अपना काम पूरा करेगा। उसे वह मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाकर शैतान की युक्ति अनुसार सब प्रकार के कष्टों को झेल कर अन्त में मरना पड़ेगा। स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक पापी की तरह क्रूस क्राठ का दुःख भी उठाना होगा। उसे ऐसी बुरी मौत मिलेगी जिसे स्वर्गदूत भी न देख कर अपने चेहरे ढाँक लेगें। सिर्फ शारीरिक वेदना नहीं मानसिक वेदना भी उसे सहन करना पड़ेगा। शारीरिक वेदना तो मानसिक वेदना से ज्यादा होगी। सारा जगत के पापों का बोझ उस पर पड़ेगा। उसने उन्हें बताया कि मर कर तीसरा दिन जी उठ कर अपने पिता के पास जाकर पापियों की बिचवाई करेगा। GCH 6.2

स्वर्गदूतों ने उसको घुटना टेक प्रणाम किया। उन्होंने अपना जीवन व्यौछावर कर दिया। यीशु ने कहा कि मरने के द्वारा वह बहुत लोगों को बचायेगा। इस ऋण को स्वर्गदूत चुका नहीं सकते हैं। केवल यीशु का जीवन ही मनुष्यों का उद्धार कर सकता है। GCH 7.1

यीशु ने उन्हें कहा कि इस बचाव काम में उनका भी हिस्सा है, उन्हें भी काम करना चाहिए। उनके साथ रह कर विभिन्न समय में दृढ़ करना है। यीशु को मनुष्य का स्वभाव लेना था। पर उसकी शक्ति स्वर्गदूतों की शक्ति से बढ़कर है। उन्हें यीशु की नम्रता को देखनी थीं। यीशु का दुःख तकलीफ को, जिसे लोग देंगे, देखकर स्वर्गदूत भारी संवेदना से भर जायेंगे। प्रेमवश उसे बचाने की कोशिश करेंगे। पर वे उस के ऊपर जो दुःख कष्ट होगा उसे रोक न पायेंगे। वे उस के पुनरूज्जीवन में भी भाग लेंगे जिसको पिता ने पहले से उपाय किया था। GCH 7.2

पवित्रता की उदासी से उसने दूतों को शान्ति प्रदान कर उत्साहित किया। उसके बाद बताया कि जिन्हें वह बचा लेगा वे उसके साथ होंगे। अपनी मृत्यु के कारण सबों का पाप मिटा डालेगा। मृत्यु का सरदार की शक्ति का विनाश करेगा। उसका पिता उसे स्वर्ग का राज्य देगा जो सब राज्यों से श्रेष्ठ होगा। वह उस पर सदा राज्य करता रहेगा। शैतान और दुष्ट लोग सब विनाश किये जायेंगे। वे फिर कभी राज्य में गड़बड़ी नहीं फैलायेंगे और न अपवित्र करेंगे। यही नयी पृथ्वी और नया आकाश होंगे। यीशु ने स्वर्गदूतों से कहा कि ईश्वर की योजना में शामिल होकर आनन्द करो क्योंकि पतित मनुष्यों का उद्धार मेरी मृत्यु के द्वारा होगा। अतः स्वर्ग में ईश्वर के साथ आनन्द करो। GCH 8.1

अब स्वर्ग में ऐसा आनन्द छा गया जो वर्णन से परे हैं। स्वर्गदूतों ने ईश्वर की महिमा और स्तुति के गीत गाये। उन्होंने वीणा बजाते हुए ऐसा गीत गाया जो पहले नहीं गाये थे क्योंकि परमेश्वर का असीम अनुग्रह से उसका पुत्र यीशु को उपद्रवी जाति के लिये जगत में आकर प्राण देना था। यीशु का निःस्वार्थ बलिदान को देखकर प्रशंसा और महिमा के गीत गाये गये। क्योंकि वह ईश्वर के पास धरती पर आने को राजी हुआ है वह इस जगत में आकर दुःख कष्ट झेलते हुए दूसरों के वास्ते नींदनीय मरण मरने को तैयार हुआ है। GCH 8.2

स्वर्गदूत ने कहा कि ईश्वर ने अपना प्यारा एकलौता पुत्र को बिना हिचकिचाहट के दे दिया है। न ही ईश्वर को सोचना पड़ा कि क्या वह अपना पुत्र को जगत में भेजे, कि पापियों को मरने दे ? स्वर्गदूत सोच रहे थे कि क्या उनमें से कोई होगा जो इस जगत में आकर पापियों के लिए म रे ? मेरा राक्षक दूत ने कहा कि ऐसा कोई दूत में योग्यता नहीं थी कि वह आकर इनके लिए मरे। पाप इतना बढ़ा था कि स्वर्गदूत की मृत्यु उसका मूल्य नहीं चुका सकता था। यीशु मसीह को छोड़ कर कोई उनकी बिचवाई नहीं कर सकता था और न पाप की मंजूरी का बदला चुका सकता था। सिर्फ वही एकमात्र है जो खोया हुआ मानव को दुःख कष्टों से भरी, आशाहीन गर्त से बचा सकता है। स्वर्गदूतों को स्वर्ग से उतरने और चढ़ने का काम सौंपा गया। उन्हें परमेश्वर के पुत्रों का दुःख-दर्द और कष्टों में शान्ति का मलहम लगाने को कहा गया। बुरे दूतों से ईश्वर की प्रजाओं की रक्षा का काम भी सौंपा गया। शैतान हर समय उनके बीच में अंधकार लाता है इस वक्त ईश्वर का वचन रूपी प्रकाश से उज्वलित करने को कहा गया। खोये हुओं को बचाने के लिये कोई दूसरा उपाय

नहीं था न व्यवस्था को बदला जा सकता था और न ही ऐसे ही क्षमा दी जा सकती थी। इसलिये ईश्वर का पुत्र यीशु को मनुष्यों का, आज्ञा तोड़ कर पाप करने के कारण, मरना पड़ा। GCH 8.3

शैतान अपने दूतों के साथ फिर आनन्द करने लगा क्योंकि मनुष्य को छुड़ाने के लिये यीशु को स्वर्ग की महिमा को छोड़ कर धरती में आना पड़ा। अपने दूतों को पहले से शैतान ने बता दिया कि जब यीशु मनुष्य का रूप लेगा तो उस पर विजय प्राप्त करेगा, वह उद्धार की योजना को भी बिगाड़ डालेगा। GCH 9.1

श्रीमती ह्वाईट कहती है कि उस वक्त शैतान को ऊँचा उठाया गया और उनके बीच खुशी दिखाई दी। उसके बाद अभी जैसा है वैसा दिखाया गया। वह अभी भी अंधकार का राकुमार है और उसका डील-डौल पहले जैसा है परन्तु वह एक पतित स्वर्गदूत है। अभी उसके चेहरे से चिन्ता, घबड़ाहट, ईष्र्या, ठाग, बदमाशी, नाखुश और सब प्रकार की बुराई झलकती हैं। उसका पहले का चेहरा बहुत सुन्दर था। उसका चेहरा आँखों से पीछे की ओर ढालू था और उसमें सिकुड़न आई थी। मैंने देखा कि वह अपने को बहुत दिनों से नीचा बनाया था इसलिये उसके सब अच्छे गुण खत्म हो चुके थे। इस के बदले सब बुरे गुण भरे पड़े थे। उसकी आँखों से धूर्तता झलकती थी, पर आँखों की रोशनी तो थी। उसका शक्ल तो बड़ा था पर उसकी माँसपेशियाँ ढीली-ढाली थी जो हाथों और चेहरों से झूल रही थीं। मैंने देखा कि उसकी ठोढ़ी बाईं हाथ पर टीकी हुई थी। ऐसा लग रहा था कि वह गहरी चिन्ता में डूबा हुआ है। जब वह मुस्कराता है तो मुझे डर सा लगता है। वह शैतानिकआचार-विचार और धूर्तता से परिपूर्ण था। जब वह किसी को अपना शिकार बनाता है और उसे अपने कब्जे में करता है, तब ही इस प्रकार की हँसी हँसता है। GCH 9.2

यशायाह ५३ के कुछ अंश हैं, पर सब नहीं। GCH 10.1

अध्याय 4 - ख्रीस्त-यीशु का पहला आगमन

श्रीमती ई. जी. ह्वाईट अपने दर्शन की बात कहती है कि जब यीशु मनुष्य का अवतार लेने वाला था तो मुझे स्वर्ग से उतारा गया। उस वक्त उसने अपने को नम्र बनाकर शैतान की परीक्षा का भी सामना किया। GCH 11.1

यीशु का जन्म के समय कोई तड़क-भड़क नहीं था। वह गौशाला की चरणी में जन्मा फिर भी इस दुनियां के मनुष्यों के जन्म से अधिक ही आदर ज्योतिषियों से पाया। स्वर्गदूत जब यीशु के जन्म की खबर देने गडेरियों के पास पहुँचे तो एक बड़ी ज्योति भी साथ आई। स्वर्गदूतों ने अपनी वीणाओं को बजा कर स्वागत के लिये महिमा के गीत गायें। उन्हों ने बहुत जोश के साथ यीशु के जन्म को पतित मानव को बताया। वह इस पृथ्वी में आकर मनुष्यों के लिए मर कर सुख और शान्ति और अनन्त जीवन लायेगा। ईश्वर ने पुत्र का आगमन को सम्मानित किया और स्वर्गदूतों ने उपासना की। GCH 11.2

जब उसका बपतिस्मा हुआ तो स्वर्गदूत ऊपर से उस पर छाया डाल रहे थे। पवित्रात्मा कबूतर के रूप में उस पर आया और उजाला किया तो लोग बहुत आश्चर्य करने लगे। ईश्वर की आवाज उस वक्त सुनाई दी - 'तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझसे अति प्रसन्न हूँ। GCH 11.3

यूहन्ना को निश्चय मालूम नहीं था कि त्राणकर्ता बपतिस्मा लेने के लिये उसके पास जर्दन नदी में आया है। ईश्वर ने उसे पहचानने के लिये एक चिन्ह दिया था जिसे देखकर वह पहचान सके। वह चिन्ह तो यह था कि कबूतर आकर उसके सिर पर बैठेगा और चारों ओर महिमा का प्रकाश छा जायेगा। यूहन्ना ने अपने हाथ को यीशु की ओर इशारा करके कहा देखो-मनुष्य का पुत्र जगत का पाप उठ ले जाता है। GCH 11.4

यूहन्ना ने अपने चेलों को बतलाया कि प्रतीज्ञा का उद्धारकर्ता यीशु मसीह यहीं है जो जगत को बचायेगा। अपने काम के अन्तिम समय में यूहन्ना ने अपने चेलों को सिखाया कि तुम लोग यीशु को देखो और उसके पीछे चलो, क्योंकि वह एक महान शिक्षक है। यूहन्ना का जीवन शुष्क था। वह निःस्वार्थ के साथ-साथ उदास भी रहता था। उसने ख्रीस्त का पहला आगमन की सूचना दी, पर ताज्जुब, काम करने का अवसर नहीं मिला जिससे वह उसका आनन्द नहीं पा सका। वह जानता था कि यीशु को जब अपने शिक्षक के रूप में बतायेगा तो उसे (यूहन्ना) मरना पड़ेगा। उसकी पुकार (प्रचार) सिर्फ जंगल में ही सुनाई पड़ी। वह एकान्त जीवन बिताता था उसने अपने सांसारिक पिता का परिवार में न रह कर घर का सुख से वंचित रहा। अपना काम करने वह एकान्त में चला गया। बहुत लोग अपना काम-धंधा छोड़ कर इसका उपदेश सुनने के लिए गाँव-घर से मरूभूमि की ओर चले। यूहन्ना ने यीशु का मार्ग तैयार किया था। उसने निडर होकर लोगों को बताया था कि पाप का क्या परिणाम होगा और ईश्वर का मेम्ना का मार्ग तैयार किया था। GCH 12.1

यूहन्ना का प्रभावशाली उपदेश से हेरोद डगमगा गया था। उसने बहुत इच्छुक हो कर पूछा कि उस का चेला बनने के लिए क्या करना होगा ? यूहन्ना को मालूम था कि वह (हेरोद) अपना भाई की पत्नी से शादी करना चाहता था। उसका भाई अभी जिन्दा था और उसने कहा था कि ऐसा करना उचित न होगा। हेरोद इस पर राजी नहीं था। उसने अपने भाई की पत्नी से शादी कर उसके द्वारा यूहन्ना को पकड़ कर जेल में डलवाया। पर हेरोद उसे छोड़ना चाहता था। जेल में रहते हुए यूहन्ना ने यीशु के बड़े-बड़े काम के विषय सुने थे। उसने तो कभी यीशु के उपदेश नहीं सुने थे, पर चेलों ने उसे बतलाया था और उसे सान्तवना दिया था। इसके तुरन्त बाद हेरोद ने यूहन्ना बपतिस्मा देने हारा को कत्ल करवा दिया। इसमें उसकी पत्नी का हाथ था। श्रीमती ह्वाईट कहती है कि यीशु के थोड़े चेलों ने उस के (यीशु) उपदेश और शान्ति के वचन सुने, वे यूहन्ना बपतिस्मा के उपदेशों से अधिक प्रभावशाली थे। यीशु के वचन अधिक सम्मानजनक और ऊपर उठानेवाले थे। उनमें अधिक आनन्द मिलता था। GCH 12.2

यूहन्ना, एलिय्याह नबी के आत्मा और शक्ति से यीशु के पहिला आगमन की गवाही देने आया था। फिर एलेन ह्वाईट कहती है कि मुझे दर्शन में दिखाया गया है कि अन्तिम दिनों का क्रोध के समय और यीशु का द्वितीय आगमन के पहले जो लोग संवाद सुनायेंगे तो ठीक एलिय्याह की आत्मा और अधिकार का प्रयोग करेंगे। GCH 13.1

यीशु का बपतिस्मा होने पर आत्मा ने उसे जंगल में लिया जहाँ शैतान से उसकी परीक्षा की। भयंकर तथा कठिन प्रलोभन और परीक्षा के समय पवित्रात्मा उसके साथ था। यीशु बिना खाये-पीये चालीस दिन तक था। उसके चारों ओर का दृश्य बहुत ही खराब था जिसे मनुष्य अन्दाज लगा सकता था। उस निर्जन स्थान में यीशु जानवरों के साथ अकेला था और शैतान भी वहाँ पर परीक्षा करने के लिए तैयार बैठा था। एलेन ह्वाईट कहती है कि मैंने यीशु का चेहरा को पीला देखा और उपवास कर दुःख सहने के कारण दुबला-पतला भी देखा। पर वह तो ठहराया हुआ काम को करने आया था और उसे पूरा करना ही था। GCH 13.2

परमेश्वर के पुत्र की दुःख-तकलीफ का फायदा शैतान ने उठाया। उस पर विजय प्राप्त करने की आशा से उसने उस पर हर तरह की परीक्षाएँ लाईं क्यों कि यीशु ने मनुष्य का अवतार लिया था अतः शैतान को आशा थी कि जैसा उसने आदम-हव्वा को परीक्षा में गिराया था वैसे ही इसे भी गिरा देगा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर को रोटी बना कर खा लो। उसने यीशु को मसीह होने का प्रमाण देने का लालच देकर उसकी स्वर्गीय शक्ति प्रदर्शन करने को कहा। यीशु ने नम्र भाव से जवाब देते हुए कहा - “लिखा है, मनुष्य सिर्फ रोटी से अकेला नहीं जीता है पर हरेक वचन जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।” GCH 14.1

यीशु को परमेश्वर का पुत्र होने सम्बन्धी शैतान उस से तर्क करने चाहता था। उसने उस की दयनीय स्थिति का गर्वपूर्वक चर्चा कर अपने को यीशु से बढ़िया साबित करना चाहता था। परन्तु

स्वर्ग से जो वचन बोला गया था कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ। वही यीशु के लिए दुःख में धीरज धरने का काफी सहारा था। मैंने देखा कि यीशु अपने सारे कामों के दौरान अपनी शक्ति और पुत्र होने का परिचय, शैतान को देना उचित न समझा। शैतान के पास यीशु जगत का उद्धारकर्ता है, इसका काफी प्रमाण था। उसके इस अधिकार को न मानने के कारण ही शैतान स्वर्ग से बाहर हुआ है। GCH 14.2

यीशु को उसकी शक्ति की परीक्षा करने के लिये शैतान ने उसे यीरूशलेम मन्दिर की चोटी पर ले कर बैठाया और उसे वहाँ से नीचे डेगने कहा, इस बार शैतान पवित्र शास्त्र की बातों को बोलते हुए कहा कि लिखा है कि स्वर्ग दूतगण तुझे गिरने से बचा लेंगे। तुझे जमीन पर ठोकर खाने नहीं देंगे। यीशु ने फिर उसे उत्तर दिया, - "तू अपने परमेश्वर की परीक्षा मत कर।" शैतान चाहता था कि वह अपने पिता की मदद व दया की आशा लगा कर अपना जीवन को खतरे में डालेगा और अपना काम पूरा करने नहीं सकेगा। उसे आशा थी कि उद्धार की योजना असफल हो। लेकिन योजना की नीव इतनी मजबूत थी कि शैतान को उसे उखाड़ फेंकना या बिगाड़ना कठिन था। GCH 14.3

मैंने देखा कि ख्रीस्त सब मसीहियों के लिए एक अच्छा उदाहरण बना जब वे परीक्षा में पड़ते हैं या विवाद में हँसते हैं। उन्हें धीरज धरे रहना चाहिए। उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि अपना काम कराने के लिये ईश्वर को आश्चर्य काम करवाना है। जब तक कोई विशेष उद्देश्य न हों और ईश्वर की महिमा प्रगट न हो तो उसे आश्चर्य कर्म नहीं कराना है। यदि यीशु अपने को जमीन पर जबर्दस्ती गिराता तो ईश्वर की महिमा नहीं होती। इसे स्वर्गदूत और शैतान को छोड़ कोई नहीं देखते। यीशु दुश्मन के विरूद्ध यदि अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता तों वह परीक्षा में गिर जाता। यदि ऐसा होता तो यीशु को उससे समझौता करना होता न कि अपना दुश्मन को हराना। शैतान उसे पहाड़ की ऊँची चोटी पर बैठा कर संसार का सारा वैभव एक ही मिनट में दिखा कर बोला कि मैं ये सब तुझे दे देंगा यदि तू मुझे झुक कर प्रणाम करे। यीशु ने शैतान को डाँटते हुए कहा - "हे शैतान, तू दूर हट जा, क्योंकि लिखा है कि प्रभु अपने ईश्वर को छोड़ किसी की उपासना न करना।" GCH 15.1

शैतान ने यीशु को जगत का राज्य और उस का वैभव को दिखाया था। संसार को बहुत लुभावना ढंग से दिखाया था। यीशु को बोला सिर्फ एक बार प्रणाम करने से ही मिल जायेगा। जगत में अपना अधिकार जमाना छोड़ देगा। शैतान को मालूम था कि उस की शक्ति सीमित है और उसे छीना जायेगा, जब उद्धार की योजना का काम पूरा होगा। मनुष्यों को छुड़ाने के लिये यदि यीशु मरेगा तो उसका अधिकार पृथ्वी पर समाप्त होगा और उसे मरना पड़ेगा। इसलिये वह यीशु को उसके काम से हटाने चाहता था। यदि हो सके तो उद्धार करने का एक बड़ा उपाय यीशु ने शुरू किया था उसे शैतान को रोकना था। यदि उद्धार कराने का काम असफल होता तो शैतान

का अधिकार जगत से नहीं उठता। यदि शैतान सफल होता तो यह कह कर झूठी बड़ाई करता कि मैं जगत में राज्य कर रहा हूँ ईश्वर नहीं। GCH 15.2

जब यीशु ने स्वर्ग की महिमा और अधिकार को छोड़ा तो शैतान बहुत खुश हुआ। वह सोचता था कि वह अब उस के कब्जे में आ जायेगा। आदम-हव्वा को तो उसने बड़ी आसानी से ट्ण दिया और यीशु को भी बहुत आसानी से ठ्ण कर अपना राज्य और प्राण को बचाने सोचा था। यदि वह यीशु को पिता की इच्छा के विरूद्ध चलाने में सफल होता तो उसका मनोरथ पूर्ण हो जाता। यीशु ने शैतान से कहा था कि तू मेरे पीछे हट जा। उसे सिर्फ ईश्वर के सामने झुकना है। समय आ रहा था तब यीशु शैतान का सारा अधिकार छीन लेता और पृथ्वी पर के सब प्राणी उसके अधीन होते। शैतान ने दावा किया संसार का सब अधिकार उसके पास है और वह उसे यीशु को देने के लिये तैयार है बशर्ते कि वह उसे झुक कर प्रणाम करे। इसके लिये यीशु को दुःख भी नहीं सहना पड़ेगा। पर यीशु अपने विचार पर अटल रहा। पिता ने इस राज्य को पाने के लिए यीशु को दुःख-तकलीफ सह कर मृत्यु दण्ड भी पाने का उपाय किया था। इसलिये वह सहज से नहीं पर कठिनाई से राज्य पाना अच्छा समझा। वह उचित ढंग से जगत का उत्तराधिकारी बना। उसे इस पर सनातन का अधिकार मिला। शैतान को भी मार डालने का अधिकार मिला, जिससे वह भविष्य में यीशु को या किसी सन्त को भी न तंग करे। GCH 16.1

आधारित वचन लूका २, ३१-२२, मत्ती ४ अध्याय GCH 16.2

अध्याय 5 - यीशु की सेवकाई

जब शैतान ने परीक्षा करना समाप्त किया तब वह यीशु से थोड़ी देर के लिये दूर चला गया। उस जंगल में स्वर्गदूत आ कर उसकी सेवा-टहल करने लगे। उन्होंने उसे भोजन दिया और उसे सबल बनाया। ईश्वर का आशीर्वाद भी मिला। शैतान ने कठिन परीक्षा यीशु पर लायी थी पर वह गिराने से चूक गया। यीशु के सेवकाई के आनेवाले दिनों में फिर से उस पर अपनी परीक्षा लाने की आशा करने लगा। जो लोग यीशु को नहीं ग्रहण करेंगे, उनके बीच में आकर गड़बड़ी फैला कर जो यीशु को मानेंगे उनसे घृणा कर उन्हें मार डालने की युक्ति बनाने को सोचा। शैतान ने अपने दूतों के साथ एक विशेष सभा बुलायी। यीशु के विरूद्ध कुछ न कर सकने के कारण वे नाराज थे और गुस्सा भी हो रहे थे। उन्होंने सोचा कि आगे और भी अधिक चालाकी से लोगों के पास आकर मन में सन्देह का विचार लें आयें और कहें। कि यीशु जगत का उद्धारकर्ता नहीं है। उस पर विश्वास मत करो। ऐसा काम कर यीशु को उसके कामों में नीरस करना चाहते थे। यहूदी लोग चाहे जितना सख्त अपने धर्म को पालन करेंगे पर यदि उनके मन में भविष्यवाणी के विषय अंधा बना दिया जाये और यीशु के आने का विश्वास उठा दिया जाये और उसे एक साध आरण मनुष्य की तरह उनकी समझ में डाले और मसीह का आना अभी देर है, कहें तो हमारा काम कुछ हद तक सफल होगा। GCH 17.1

मैंने देखा कि यीशु की सेवकाई के दिनों में शैतान और उसके साथी, लोगों के मन में ईष्र्या, द्वेष और अविश्वास फैलाने में बहुत व्यस्त रहते थे। यीशु जब सच्चाई के द्वारा उनके पापों के विरूद्ध कुछ कहता था तो वे उस पर गुस्सा हो जाते थे। शैतान और उसके साथी यीशु को मार डालने की सलाह देते थे। एक बार यीशु को मार डालने के लिये उन्होंने पत्थर भी उठाया तो स्वर्गदूत आकर उसे बचा लिए और उसे सुरक्षित जगह ले गए। दूसरी बार जब वह उपदेश दे रहा था तो बहुत से लोग मिल कर उसे पकड़ लिये और उसे पहाड़ की चोटी से नीचे गिराने के लिए ले चले। जब यीशु को दूतों ने उसे छुड़ा लिया और उनके बीच से छिपा कर ले गये तो वे आपस में वाद-विवाद करने लगे कि क्या किया जाये। GCH 17.2

शैतान अभी भी विश्वास कर रहा था कि उद्धार की बड़ी योजना असफल होकर ही रहेगी। उसने लोगों के मन कठोर बना कर यीशु के प्रति कडुवाहट उत्पन्न किया। शैतान आशा करता था कि यीशु बहुत कम लोगों को अपना चेला बनाने सकेगा। इतनी कम संख्या में पाकर यीशु अपना बड़ा बलिदान देकर पछतायेगा। मैंने देखा कि एक या दो व्यक्ति भी उस पर यह विश्वास करे कि यह परमेश्वर का पुत्र है। जो पापियों को बचाने आया है, तो भी यीशु अपनी योजना को पूरा करता। GCH 18.1

यीशु ने शैतान का उस काम को तोड़ना शुरू किया जिसके द्वारा लोगों को कष्ट देकर सता रहा था। उसके बुरे काम के द्वारा दुःख कष्ट झेल रहे थे, उन्हें चंगा कर छुड़ाया। बीमारों को चंगा

किया, लंगड़ों को चंगा कर कूदने-फाँदने का ताकत देकर ईश्वर की महिमा करवायी। अँधों को दृष्टि दिया और जो कमजोर थे उन्हें और शैतान के बंधन में वर्षों से थे उन्हें चंगा कर सबल बनाया। अपने मधुर वचनों से डरते-काँपते और नीरस लोगों को शान्ति और ढाढ़स दिये। उसने मुर्दो को जिलाया और उन्होंने ईश्वर की असीम शक्ति का गुणगान किया। जिन्होंने उस पर विश्वास किया उन सब के लिए बहुत बड़ा काम किया। जिन कमजोर लोगों को शैतान दुःख दे कर सता रहा था उन्हें यीशु ने उसके कब्जे से छुड़ा लिया, उन्हें अच्छा स्वास्थ्य देकर आनन्दित किया। GCH 18.2

यीशु का जीवन प्रेम, दान और सहानुभूति से भरा हुआ था। जो लोग, उनके पास आकर अपना दुःखड़ा सुनाते थे उनकी अर्जी को सुनने के लिये हमेशा तैयार रहते थे। उसकी स्वर्गीय शक्ति का प्रदर्शन बहुत लोग अपने जीवन में करने लगे। फिर भी बहुत से लोग उसके काम के पूरे होने पर उस नम्र व्यक्ति, जब कि एक महान शिक्षक भी था, उसे इन्कार किये। यीशु के साथ दुःख उठाना नहीं चाह कर शासक वर्ग के लोग उस पर विश्वास करना छोड़ दिया। वह तो एक दुःखभोगी और उदास से मरा हुआ व्यक्ति था। कुछ ही लोग थे जो उस के संयम और निःस्वार्थ जीवन से प्रभावित हुए। कुछ लोग जगत का सुख भोग की ओर आकर्षित हुए। बहुत से लोग तो यीशु के पीछे चले और उसके उपदेशों को सुने। उसके मुँह से जो मधुर वचन निकलते ये उसका आनन्द लेते थे। वे इतनी सरल और सीधी-साधी बात करते थे कि अनपढ़ लोग भी समझ जाते थे। GCH 19.1

शैतान और उसके बुरे दूत व्यस्त रहा करते थे। उन्होंने यहूदियों की आखों को अंधा बना कर उनकी समझ शक्ति को भी धुंधला कर दिया। शैतान ने शासक वर्ग के बीच यह षड्यन्त्र रचा कि यीशु को मार डालें। उन्होंने यीशु को लाने के लिए आदमी भेजे और जब ये उसके पास पहुँचे तो बहुत ताज्जुब करने लगे। मनुष्यों की दुर्दशा को देखकर यीशु सहानुभूति और कृपा से भरा था उसे वे देख सके। उन्होंने यह भी देखा कि यीशु उन गरीब-लाचारों से बहुत ही नम्रता और करूणा से पेश आया। उन्होंने यह भी सुना कि यीशु ने शैतान की शक्ति को अधिकार के साथ डाँटा और भूतग्रस्त लोगों को मुक्त किया। यीशु के मुँह से मीठे वचन को सुनकर मनमुग्ध हो गये। उसे पकड़ने की हिम्मत न हुई। वे यीशु को बिना लाये याजकों और प्राचीनों के पास लौटे। पकड़कर न लाने पर उनसे पूछा गया, क्यों तुम यीशु को पकड़ नहीं लाया ? यीशु के आश्चर्य कार्यों और ज्ञान की बातें जो सुनें थे, उन्हें बताने लगे। प्रेम से भरी ज्ञान की जो बातें उन्होंने सुनी थी, उसके विषय चर्चा कर कहने लगे कि किसी आदमी ने अब तक उसके समान उपदेश नहीं दिये हैं। प्रधान याजक ने उन्हें धोखा खाने का दोष लगाया। कोई-कोई तो नहीं लाने के कारण लज्जित भी हुए। प्रधान याजक ने मजाक करते हुए पूछा कि क्या कोई शासक ने उस पर विश्वास किया है ? मैंने दर्शन में देखा कि बहुत से प्राचीन व्यक्ति और मजिस्ट्रेट ने यीशु पर विश्वास किया। परन्तु शैतान ने उन्हें जनवाने से रोके रखा। ईश्वर से डरने के बदले लोगों की निदां से अधिक डरने लगे। GCH 19.2

उद्धार की योजना को अब तक शैतान की धूर्तता और द्वेष, बर्बाद नहीं कर सका था। जिस उद्देश्य से और जो काम पूरा करने के लिये यीशु इस दुनियाँ में आया था वह नजदीक होता जा रहा था। शैतान और उस के दूतों ने यीशु के लोगों को ही उसके विरूद्ध भड़का कर उसके खून का प्यासा बनाया। उन्होंने उसके विरूद्ध क्रूरतापूर्ण दोषारोपण किया। उन्होंने सोचा कि यीशु इस बुरा व्यवहार से चिढ़ कर अपनी नम्रता और संयम कायम नहीं कर गुस्सा होगा। GCH 20.1

इधर शैतान अपनी योजना बना रहा था और उधर यीशु अपने चेलों को बता रहा था कि उसे बहुत दुःख-तकलीफ उठाना पड़ेगा। वह क्रूसघात किया जायेगा और तीसरा दिन में जी उठेगा, पर चेले समझ न सके। उसने जो बातें बतायी थी उससे समझने में सुस्त पड़ गये थे। GCH 20.2

यूहन्ना ७:४५, ४६, ८:५९ लूका ४:२९, २४:६-८

अध्याय 6 - यीशु का बदला हुआ रूप

मैंने देखा कि चेलों का विश्वास इस रूपान्तर से बहुत मजबूत हुआ। ईश्वर ने यीशु के चेलों को कहा, यीशु मसीह ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह है, उसका पक्का प्रमाण देना चाहा। उनके नीरस और कडुवा जीवन की अभिज्ञाता के समय अपना विश्वास से न भटकें इसी ख्याल से यह प्रमाण दिया गया। पहाड़ पर के रूपान्तर के समय ईश्वर ने मूसा और एलिय्याह को यीशु के दुःख और मृत्यु सम्बन्धी बात करने को भेजा था। स्वर्गदूतों को भेजने के बदले ईश्वर ने उन्हें भेजा, जो दुनियाँ में रहकर यहाँ के दुःख-तकलीफों से गुजरें हैं। यीशु मसीह की चमकदार और महिमापूर्ण चेहरा को देखने के लिये कुछ ही चेलों को चुना गया था। उन्होंने उसका श्वेत वस्त्र की चमकीलापन को देखा और ईश्वर की महिमा की तेज ध्वनि को भी सुना - “यह मेरा प्रिय पुत्र है उसकी सुनो।” । GCH 21.1

एलिय्याह ईश्वर के साथ चला-फिरा था। उसका काम आनन्दमय नहीं था। ईश्वर ने उसके द्वारा जगत के पापों को फटकारा था। वह ईश्वर का नबी था। अपने प्राण को बचाने के लिये एक जगह से दूसरे जगह भागता-फिरता था। उसको जंगली जानवरों की तरह शिकार खेला जाता था। ईश्वर ने एलिय्याह को जीवित रूप में स्वर्ग उठा लिया था। स्वर्गदूतों ने उसे उठा कर महिमा के साथ स्वर्ग में बैठा दिया था। GCH 21.2

मूसा को ईश्वर ने इस जगत में बहुत आदर दिया था। उसके पहिले जितने लोग जीते थे, उन सब से वह बड़ा माना जाता है। वह ईश्वर के साथ मित्र के समान आमने सामने बात करता था। महिमामय ज्योति से घिरा हुआ ईश्वर को देखने का मौका मूसा को मिला था। मूसा ही के द्वारा ईश्वर ने इस्राइली जाति को मिस्त्र की दासता की बेड़ी से छुड़ाया था। मूसा इस्राइलियों के बीच एक विचवाई कर्ता था। वह सदा इस्राइली और ईश्वर के बीच का क्रोध की वकालत करता था। जब ईश्वर का क्रोध इस्राइलियों के पाप के कारण उन पर भड़क उठता था तो मूसा ही था जो दोनों को मेल कराता था। ईश्वर ने प्रतिज्ञा की कि यदि मूसा चाहे तो वह इस्राइल को नष्ट कर दें और मूसा से ही एक बड़ी जाति उत्पन्न करें। मूसा ने ईश्वर से ऐसा नहीं करने के लिये गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की और अपना प्रेम दिखाया। मूसा ने बड़े दुःख के साथ ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा कि हे ईश्वर तू उन से अपना गुस्सा हटा दें और बदले में मेरा नाम को जीवन की पुस्तक से काट दें। GCH 21.3

जब इस्राइलियों को जंगल में पीने का पानी नहीं मिल रहा था तो वे ईश्वर और मूसा के विरूद्ध कुडकुड़ा कर कहने लगे कि मूसा हमें तथा हमारे बच्चों को मार डालने के लिए जंगल में लाया है। ईश्वर ने उनका कुडकुड़ाना को सुन कर मूसा को अपनी लाठी से पत्थर पर पीटने को कहा ताकि उनके लिये पीने का पानी मिले। मूसा ने चट्टान को मार कर पानी निकाला और अपने लिये गौरव प्राप्त किया। इस भगोड़ी जाति का लगातार कुडकुड़ाने के कारण मूसा को बहुत उदास होना

पड़ा। येड़ी देर के लिए मूसा ने ईश्वर का नेतृत्व को भूला दिया कि कैसे उसने उन्हें अगुवाई की थी। उनका कुडकुड़ाना तो मूसा के विरूद्ध नहीं था पर ईश्वर के। उसने अपने वास्ते सोचा कि उनसे प्रेम करने के बदले वह कितना दुःख सहा और इसके बदले कितना थोड़ा प्रेम पाया। GCH 22.1

दूसरी बार जब मूसा चट्टान को मारा तो ईश्वर का आदर करने में चूक गया और इस्राइलियों के सामने उसका गौरव नहीं कर सका। ईश्वर मूसा से नाराज हो कर बोला कि तू कभी कानान देश में प्रवेश न करेगा। इस्राइलियों के लिये ईश्वर की योजना थी कि उन्हें ऐसी परिस्थिति में डालकर जरूरत के मुताबिक आश्चर्य कर्म कर उनके मनों को अपनी ओर खींचना जिससे वे उसकी महिमा करें और ईश्वर को सदा स्मरण करें। GCH 22.2

जब मूसा पर्वत से दस आज्ञा की दो पट्टियों को लेकर उतर रहा था तो उसने इस्राइलियों को सोने का बछड़ा की पूजा करते देखा तो वह बहुत गुस्सा होकर उसे फेंक कर तोड़ डाला। मैंने देखा कि मूसा ने ऐसा कर पाप नहीं किया। वह तो ईश्वर की महिमा के लिये ईष्र्या कर रहा था और उसी का गुस्सा था। परन्तु जब वह अपनी महिमा चाह रहा था जो ईश्वर के लिए था, उसमें उसने पाप किया। ईश्वर ने इसी कारण उसे प्रतिज्ञा किया हुआ देश जाने नहीं दिया। GCH 23.1

शैतान मूसा के विरूद्ध कोई पाप हूँढ़ रहा था ताकि वह उस पर दोष लगा सके। जब मूसा ने अपने को ऊपर उठाया तो ईश्वर उससे नाराज हुआ। इस बात में शैतान मूसा को गिराने में सफल हुआ। इस पाप के कारण मूसा शैतान का अधीन हुआ और पाप के कारण मरना पड़ा। यदि वह ईश्वर के कहने के मुताबिक चट्टान को नहीं मारता और दूसरी बार बात करके पानी निकालता तो निश्चय ईश्वर उसे कानन देश पहुँचाता। मूसा को जीते जी स्वर्ग ले जाता। GCH 23.2

मुझे दर्शन मिले कि मूसा मर गया। उसका शरीर सड़ने के पहले मिखाएल स्वर्गदूत आकर उसे जीवित कर दिया। शैतान मूसा का शरीर को पाने का दावा पेश करता है पर मिखाएल दूत जिला कर उसे स्वर्ग ले गया। शैतान ने उस का मुर्दा को पाने का प्रसन्न कर ईश्वर से लड़ाई की। मूसा का शरीर को लेने के कारण शैतान ने ईश्वर को अन्यायी ठहराया। मिखाएल ने शैतान को नहीं घुड़का जौभी की, उसकी ही परीक्षा से ईश्वर का दास पाप में गिरा था। रख्रीस्त ने नम्रता से अपने पिता से बात कर कही कि - हे ! शैतान तुझे ईश्वर घुड़कता है। यीशु के साथ कुछ चेले खड़े थे उनके बीच में उसने कहा कि तुममें से कोई तो मृत्यु को न चखोगे, जब तक स्वर्ग का राज्य नहीं आता हैं। रूपान्तर के समय यह प्रतीज्ञा पूरी होती है। यीशु का चेहरा बदल कर सूर्य जैसा चमकने लगा। उसका वस्त्र श्वेत और चमकीला था। मूसा मर गया था पर जिलाया गया था। वह उनलोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो मर गए हैं पर यीशु के दूसरे आगमन के समय जी उठेंगे। एलिय्या नबी नहीं मरा था। वह जीते जी स्वर्ग चला गया। वह उन लोगों को दिखाता है जो यीशु के दूसरे आगमन के समय नहीं मरेंगे पर अमरता में बदल कर स्वर्ग चले जायेंगे। चेलों ने यीशु का इस

महिमामय दृश्य को आश्चर्यचकित हो कर देखा। इसके बाद बादल ने उन्हें छिपा लिया। एक गौरवपूर्ण तथा कम्पानेवाली आवाज सुनाई दी - ‘यह मेरा प्रिय पुत्र है जिसकी तुम सुनो। GCH 23.3

मत्ती १७, मरकुस ९, निर्गमन ३२:३२ गिनती २०:११ यहूदा ९

अध्याय 7 - ख्रीस्त का पकड़वाया जाना

जब यीशु अपने चेलों के साथ फसह पर्व मना रहा था तो मुझे दर्शन मिले कि मैं स्वर्ग से पृथ्वी में उतर रही हूँ। शैतान ने यहूदा इस्कारियोती को यीशु का एक चेला कहलवा कर उसके द्वारा यीशु को पकड़वाया। यहूदा का मन तो हमेशा कुटिल रहता था। वह तो यीशु की सेवकाई के पूरे समय उसके साथ रहा और उसके बहुत बड़े और अचम्भे काम देख कर मोहित हुआ था लेकिन वह एक बहुत लालची व्यक्ति था। वह पैसों का बहुत प्रेमी था। जब मरियम के द्वारा यीशु के पावों पर दामी तेल ढाला गया तो उसने इसकी शिकायत की थी। मरियम तो अपने प्रभु यीशु को प्यार करती थी। उसने उसके बहुत से पाप क्षमा किये थे और उसका भाई लाजर को भी जिलाया था। इसलिये वह सोचती थी कि यीशु को देने के लिये कुछ कीमती चीज की जरूरत है। यह तेल जितना अधिक कीमती होगा उतना ही अच्छा होगा अपनी कृतज्ञता प्रगट करने वास्ते। यहूदा अपना लालचपन को छुपाते हुये कहता है कि इसे तो बिक्री कर गरीबों की मदद की जा सकती थी पर क्यों बरबाद किया जा रहा है। इसे बिक्री कर पैसे को गरीबों को देने का मन यहूदा को नहीं था पर वह इस पैसों को खजाने में रखकर किसी समय अपना खर्च चलाना चाहता था। वह तो बहुत स्वार्थी था और प्रायः मंडली के रूपये जो उसके हाथ में थे उसे गरीबों को ना देकर उसका दुरूपयोग करता था। यहूदा ने कभी भी यीशु की जरूरतों और सुख-सुविधाओं का ख्याल नहीं किया। अपने लालचपन को छुपाने के लिये प्रायः गरीबों का नाम लेता था। इस काम के द्वारा मरियम की उदारता ने यहूदा का लालची स्वभाव को लताड़ा। GCH 25.1

यहूदा के मन को परीक्षा में डालने के लिये इस तरह से रास्ता साफ किया गया जिसका ताक शैतान देख रहा था। यहूदी लोग यीशु से घृणा करते थे। पर उसके युक्तिपूर्ण और ज्ञान से भरपूर उपदेश को सुनने के लिये भीड़ लगा देते थे। इस तरह से पुरोहित और प्राचीन लोगों का ध्यान इस ओर गया। लोग उसके उपदेशों को सुनने के लिये उत्तेजित हो जाते थे क्योंकि वह एक महान गुरू था। यहूदियों की महासभा (सन् हेड्रिन) के अधिकारी भी यीशु पर विश्वास करते थे लेकिन अपने को उसका चेला बोल कर स्वीकार नहीं करते थे। क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उनको महासभा (सन् हेड्रिन) से निकाला जाये, वे लोगों के मन को यीशु की ओर से हटाने का कुछ उपाय सोचने लगे। उनको डर हो रहा था कि सब लोग यीशु की ओर न चले जायें। अपने लिये वे कुछ बचाव नहीं देख पा रहे थे। वे सोचते थे तो यीशु को मार डाले या अपनी पदवी से हट जायें। यदि यीशु को मार भी डाले तो भी उसके बहुत से मजबूत चेले हैं। यीशु ने लाजरस को जिलाया था और वह इसके विषय में एक जीवित गवाही दे सकता था। बहुत से लोग लाजरस को देखने आते थे। उन्होंने सोचा कि क्यों न लाजरस का भी कत्ल किया जाये और उसको देखने की उत्तेजना को बन्द किया जाये। ऐसा करने के पश्चात्त वे लोगों को यहूदियों की परम्परा का धर्म की ओर खींच कर उन्हें राई, सरसों और पुदीना के भी दसवाँस दिला सकते थे। जब यीशु अकेला रहेगा उसी समय मारने का

विचार किया गया। जब भीड़ में यीशु को मार डालने की कोशिश की जाये तो लोग उससे प्रेम करते हैं। वे उल्टे हम पर पत्थर बरसायेंगे कहकर डरते थे। GCH 26.1

यहूदा का चरित्र उन्हें मालूम था। वह पैसे के लिये कितना लोभी था। यदि उसे कुछ पैसे दे दिए जाते हैं तो वह निश्चय ही यीशु को हमारे हाथों में धरा देगा। उसका पैसे का लोभ ने अपना गुरू (यीशु) को दुश्मनों के हाथ पकड़वाने के लिये राजी किया। शैतान सीधा, यीशु को पकड़वाने के लिये मन में काम कर रहा था और उस फसह पर्व की बिमारी के अन्त में यह काम किया गया। यीशु ने दुःख के साथ अपने चेलों को बताया कि तुम लोग मेरे कारण ठोकर खाओगे। पतरस ने बड़े गर्व से कहा - "हे ! प्रभु यदि तेरे कारण सब ठोकर खायें तो खाने दे पर मैं नहीं खाऊँगा।" यीशु ने कहा कि शैतान ने तुझे पकड़ कर गेहूँ की तरह फटकने चाहा है पर मैंने तुम्हारे लिये प्रार्थना की है तू विश्वास में बना रहेगा। जब तुम स्थिर हो जाओगे तो अपने भाईयों को भी दृढ़ करो। GCH 26.2

मैंने यीशु को अपने चेलों के साथ गेतसीमानी बागन में देखा। बहुत उदास होकर यीशु ने अपने चेलों से कहा कि जागते रहो और प्रार्थना करते रहो जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो। यीशु को मालूम था कि उनका विश्वास परख जायेगा और उन्हें उदास होना पड़ेगा। पर जागते रह कर प्रार्थना करते रहने से उन्हें विश्वास में स्थिर रहने के लिये बल प्राप्त होगा। यीशु वहाँ रो-रो कर प्रार्थना करने लगा - हे पिता ! यदि हो सके तो यह दुःख का प्याला मेरे सामने से दर कर, फिर भी यह मेरी इच्छा नहीं, तेरी इच्छा हो तो पूरी हो। यीशु एक भारी संबेदना से प्रार्थना कर रहा था। खून के समान पसीने उसके चेहरे से गिर पड़े। स्वर्गदूतों की छाया उस पर थी। वे उसे देख रहे थे। पर एक ही दूत को उसके पास जा कर मदद करने की आज्ञा थी। स्वर्गदूतों ने स्वर्ग में अफसोस कर अपने-अपने वीणा बाजा फेंक दिए और यीशु का दुःख-कष्ट को उदास होकर देख रहे थे। स्वर्ग में उदासी छा गयी थी। वे चाहते थे कि यीशु को इस दुःख से छुड़ा ले परन्तु कप्तान स्वर्गदूत ने ऐसा करने से मना किया। क्योंकि यदि ऐसा किया जाता तो यीशु को मरना नहीं पड़ता और मनुष्यों को बचाने का काम भी पूरा नहीं होता। GCH 27.1

प्रार्थना करने के बाद यीशु अपने चेलों को देखने आया। वे सो रहे थे। उस संकट की घड़ी में यीशु ने अपने चेलों की प्रार्थना के द्वारा शान्ति और मदद नहीं पायी। कुछ देर पहले ही पतरस ने अपने को बड़ा वीर साबित किया था। अभी वह गहरी नींद में सो रहा था। यीशु ने उसकी बातों को याद दिलाते हुए व्यंग शब्दों में कहा कि क्या तुम लोग मेरे साथ एक घन्टा भी नहीं जाग सकते हो ? यीशु ने तीन बार बहुत दुःखित हो कर प्रार्थना की। इतने में यहूदा अपना दल लेकर पहुँच गया। वह यीशु को पहले की तरह सलाम करने आ गया। उसका दल ने उसे घेर लिया। वहाँ यीशु ने अपना स्वर्गीय अधिकार का प्रयोग कर कहा - 'तुम जिसे ढूँढ़ते हो ? मैं वही हूँ, इसे सुनकर वे पीछे जमीन पर गिर पड़े। यीशु ने उनको जनवाने चाहा कि वह अपना अधिकार का प्रयोग कर अपने को उनके हाथ से, चाहे तो छुड़ा सकता है। GCH 28.1

जब दुश्मन लोग अपनी ढाल और तलवार के साथ गिर पड़े तो दूतों को आशा लग रही थी कि यीशु बचेगा। वे उठ कर फिर यीशु को घेरने लगे तो पतरस ने गुस्सा से एक व्यक्ति का कान काट डाला। यीशु ने पतरस से कहा कि अपनी तलवार म्यान में रख ले। तुम यह नहीं सोचते हो कि मैं अपने पिता से प्रार्थना कर पलटानों का बारह दल नहीं माँग सकता हूँ। मैंने देखा कि यीशु जब यह कह रहा था तो दूतों के चेहरे खुशी से चमक रहे थे। वे फिर से यीशु को घेर कर उसके दुश्मनों से छुड़ाना चाह रहे थे। यीशु की इस बात को सुन कर उनमें फिर उदासी छा गई कि ऐसे में पवित्र शास्त्र की बात कैसे पूरी होगी ? इसे सुनकर चेलों के मन हतास-नीरस से भर गये। उन्होंने यीशु को ले जाते देखा। GCH 28.2

चेले डर कर भाग गए। यीशु अकेला रह गया। शैतान की क्या यही विजय है? और स्वर्गदूतों के बीच में क्या ही दुःख और सन्ताप का कारण हुआ ! पवित्र दूतों के दलों में से एक-एक को इस दृश्य को देखने भेजा गया। यीशु पर जो भी दोष या अपमान या मार क्रूरता से पड़ रही थीं उनको रेकार्ड रखने को कहा गया। हर दुःख का अनुभव यीशु ने किया उसे भी लिखने कहा गया। क्योंकि इसे जीवित चरित्र में उन्हें देखना था। GCH 29.1.

मत्ती २६, मरकुस १४, यूहन्ना १३

अध्याय 8 - यीशु का न्याय होता है।

स्वर्गदूत पृथ्वी को उतरे थे उस वक्त उन्होंने अपने चमकीले मुकुट को दुःख से उतार फेंका था। जब उनका कप्तान यीशु दुःख उठा रहा था और काँटों का मुकुट पहना था तो उन्हें बड़ा दुःख लगा। शैतान और उसके दूत न्यायालय में मनुष्य की हमदर्दी और मानवता को बिगाड़ने में व्यस्त थे। वहाँ का वातावरण बहुत ही बिगाड़ दिया गया था। मुख्य पुरोहित और प्राचीन लोग उनके प्रभाव से यीशु को अपमान कर रहे थे। यह अपमान इतना घृणित था कि मनुष्य के सहने से बाहर था। शैतान को आशा थी कि इस प्रकार की निंदा से वह घबड़ा कर ईश्वर से शिकायत करना चाहे व अपना स्वर्गीय शक्ति व्यवहार करें। अपने को लोगों से छुड़ा कर उद्धार की योजना को पूरा न कर सके। GCH 30.1

यीशु के पकड़े जाने पर पतरस भी यीशु के पीछे चला गया। वह देखने के लिये तरस रहा था कि यीशु को लोग क्या कहेंगे। जब उसे यीशु के साथ होने का दोष लगाया गया तो यीशु को इन्कार कर दिया। अपने प्राण को खतरे में पड़ा देख कर, जब उसे कहा गया कि तुम उसके साथ थे तो वह मुकर कर कहने लगा - "मैं उसे नहीं जानता हूँ"। उसके चेले सत्यवादी के रूप में जाने जाते थे यहाँ पतरस ने उन्हें ठ्ग कर विश्वास दिलाया कि वह उसके चेलों में से नहीं है। इस प्रकार पतरस ने शपथ खाते हुए तीसरी बार यीशु को इन्कार किया। यीशु कुछ ही दूर पर था। वह पतरस की ओर मुड़कर उदास मन से घुड़कने की दृष्टि से देखा। उपरौठी कोठरी में यीशु की कही हुई बात को और अपना गर्व वचन को याद किया। उसने कहा था कि यदि तेरे कारण सब को ठोकर खाना पड़े तो मैं कभी भी नहीं खाऊँगा। उसने अपने प्रभु को कोसते और शपथ खाते हुए इन्कार किया था। यीशु की उस पैनी दृष्टि ने पतरस का दिल को चूरचूर कर दिया और उसे बचा लिया। वह सिसक-सिसक कर रोते हुए पश्चात्ताप करने लगा। उसका मन बदल गया और अपने भाईयों को सम्भालने को कहा गया। GCH 30.2

भीड़ के अधिकांश लोग यीशु को मार डालने के लिये तुले हुए थे। बड़ी क्रूरता से कोड़ा लगाने के बाद उसको बैंगनी वस्त्र से ओढ़ाया गया मानो उसे राजा बना दिया गया और उसके सिर पर काँटों का मुकुट पहना दिया। एक सरकंडा उसके हाथ में देकर मजाक करते हुए उसे यह कह कर सलाम करने लगे - 'जय हो यहूदियों का राजा !' उस सरकंडा को छीन कर उसी से उसके सिर पर मारे। इस मार से काँटों का मुकुट सिर और कपाल पर चुभ गए और लहू बह कर चेहरे और दाढ़ी को भिगों दिये। GCH 31.1

दूतों के लिए इस दर्दनाक दृश्य को देखा न गया। यीशु को वे उसके शत्रुओं से छुड़ा सकते थे परन्तु उनका कप्तान के कहने पर कि यीशु को इसी तरह कष्ट उठा कर मनुष्यों के लिए उद्धार कमाना है, छोड़ दिए। यीशु को मालूम था कि दूतगण उसकी इस प्रकार की परिस्थिति से अवगत हैं। मैंने दर्शन में देखा कि एक कमजोर दूत भी यीशु को उन उग्रवादियों से छुड़ा सकता था। यीशु

जानता था कि यदि पिता से अर्जी करता तो तुरन्त स्वर्गदूत उसे छुड़ाने के लिये दौड़े आते परन्तु मनुष्यों को बचाने के लिये जरूरत थी कि वह दुष्टों से दुःख कष्ट भोगे। GCH 31.2

क्रोधित भीड़ के सामने यीशु दीन-हीन हो कर खड़ा था। उस पर नीच से नीचतर दोष लगाया जा रहा था। उन्होंने उसके चेहरे पर थूका। यही चेहरा से ईश्वर के नगर में उजियाला होगा औ उसी चेहरे की ज्योति को लोग एक दिन देख कर भागेगे और छिपेंगे, उसे वे नहीं जानते थे। इतने पर भी यीशु गुस्सा होकर उनकी ओर नहीं देखा। चुपचाप अपने हाथ से इसे पोंछ लिया। उन्होंने उसके वस्त्र से ही उसका चेहरा और आँखों को ढाँक कर मारा और पूछा - 'बोलो किसने तुझे मारा।' दूतों के बीच में सनसनी फैल गई। वे बचाना चाह रहे थे, पर फिर कप्तान दूत ने उन्हें मना किया। GCH 31.3

यीशु का जहाँ न्याय हो रहा था वहाँ चेले जाकर देखना चाहते थे। वे आशा कर रहे थे कि यीशु अपनी दैवी शक्ति से अपने को दुश्मनों के हाथों से मुक्त कर लेगा। बुराई का बदला भी चुकायेगा, ऐसी आशा कर रहे थे। विभिन्न दृश्य को देखकर उनकी आशाएँ उठती गिरती थीं। कभी डर से ठगा जाने का धोखा खाते थे। उन्हें यीशु के रूपान्तर के समय जैतून पहाड़ से सुनाई दिया था - 'यह मेरा प्रिय पुत्र है जिसकी तुम सुनो' । इसको स्मरण कर अपना विश्वास को दृढ़ करते थे। यीशु के आश्चर्य कर्मों को याद करने लगे - 'अँधों को आँख दिया था, बहिरों के कान खोले थे, भूतों को भूतग्रस्त लोगों से हटाया था, मुर्दो को जिलाया था, यहाँ तक कि आँधी-तूफान को भी बन्द किया था। इन्हें याद कर विश्वास नहीं हो रहा था कि यीशु मरेगा। वे आशा लगा कर देख रहे थे कि अपनी शक्ति दिखायेगा। अपनी डाँट से खून के प्यासे लोगों को खदेड़ेगा। एक बार यीशु ने मन्दिर के ओसारे में सर्राफों और जानवरों के बिक्रेताओं को खदेड़ दिया वैसा ही करने की आशा उसके चेले लगा रहे थे। GCH 32.1

यीशु को धोखा देकर पकड़वाने के कारण यहूदा शर्म और पश्चाताप से नीरस हो उठा था। जब यीशु को ठट्ठा करते हुए देखा तो वह बहुत ही शर्मिन्दा हो उठा। वह रूपये-पैसे को यीशु से अधिक प्यार करता था। वह नहीं जानता था कि दुश्मन लोग यीशु को बेइज्जत कर इतना कठोर दुःख देंगे। वह सोचता था कि यीशु आश्चर्य रूप से उसके बीच से भाग जायेगा। जब उसने क्रोधित उग्रवादियों को न्यायालय में यीशु के खून का प्यासा देखा तो तुरन्त भीड़ के बीच आकर कहने लगा कि मैंने इस निर्दोष व्यक्ति को तुम्हारे हवाले किया है, इसे छोड़ दो। उसने उनके दिए हुए रूपये भी वापस कर दिये। इस बात को सुनकर पुरोहित लोग घृणा और घबड़ाहट में पड़ गए कि क्या करना होगा। वे लोगों को जनवाना नहीं चाहते थे कि यीशु का एक चेला के द्वारा उन्होंने उसे पकड़ा है। यीशु को चोर की तरह पकड़ कर गुप्त रूप से न्याय करने को छिपाना चाहते थे। पर यहूदा की स्वीकृति और दोषी होने का चेहरा से लोगों को पता चला कि घृणा के कारण ही यीशु को पकड़ा गया है। यहूदाज जोर से चिल्ला उठा कि यीशु निर्दोष है तो पुरोहित ने कहा - 'इससे हमारा क्या आता जाता है, तू अपना देख लें' । यीशु को वे अपने कब्जे से जाने देना नहीं चाहते थे

यहूदा वेदना से परिपूर्ण था। जिन लोगों ने पैसे का लालच देकर यीशु को पकड़वाने कहा था, उसे उन्हीं लोगों के पैरों तले फेंक दिया। अपने मानसिक वेदना का बोझ और खूनी होने का डर से, बाहर जाकर अपने आप को फाँसी दे दिया। GCH 32.2

उस भीड़ में यीशु के साथ सहानुभूति करने वाले बहुत थे। बहुत से प्रश्नों और दोषारोपण का कुछ भी उत्तर न देने से वे चकित थे। उस के चेहरे पर उसका कुछ प्रभाव नहीं दीख रहा था। वह चुपचाप और शान्त से खड़ा था। देखने वाले ताज्जूब कर रहे थे। उसका संयम, नियन्त्रित मुख और अनोखा सहनशीलता को देखकर न्यायालय में बैठे लोंगो के चरित्र से उसके चरित्र की तुलना कर कह रहे थे, कि यह तो उनसे बढ़कर है, यह तो एक राजा होने का गुण रखता है। अपराधी होने का कोई चिन्ह उसके चेहरे में नहीं दिखाई देता था। उसकी आँखें सामान्य रूप से दीखती थीं न झुकी हुई थी और न कोई सन्देह था। उसका कपाल चौड़ा और ऊपर उठा हुआ था। उसके चरित्र में दृढ़ता और नम्रता का सिद्धान्त भरा हुआ दिखाई देता था। उसका ८ गरज और सहनशीलता मनुष्य के समान नहीं था जिसे देख बहुत लोग काँप उठे। यहाँ तक कि हेरोद राजा और पिलातुस गवर्नर भी उसका ईश्वर जैसा महान चरित्र को देखकर ताज्जूब करने लगे। GCH 33.1

पिलातुस को शुरू से ही मालूम था कि वह एक साधारण मनुष्य नहीं, पर एक उत्तम चरित्रवाला व्यक्ति है। उसने तो उसे बिल्कुल निर्दोष मान लिया था। जो दूतगण पिलातुस का इस विश्वास को तथा यीशु के प्रति उसकी सहानुभूति को देख रहे थे, सहम गये। उनमे से एक दूत उसकी पत्नी को स्वप्न में दर्शन दे कर कहा कि यह निर्दोष व्यक्ति है। इसके विरूद्ध कछ हानि करने का आदेश मत देना। तरन्त उसकी पत्नी ने एक व्यक्ति को पिलातुस के पास भेजा और बताया कि मैंने इसके विषय स्वप्न देखा है कि यह एक पवित्रजन है। दूत भीड़ को चीरते हुए यह समाचार देने के लिये पिलातुस के पास पहुँचा। इसको पढ़ कर वह डर गया। उसने सोचा कि इस व्यक्ति को कुछ नहीं करना है। यदि लोग यीशु को मार डालना चाहें तो मैं राजी नहीं हूँगा, पर बचाने की कोशिश करूंगा। GCH 34.1

जब पिलातुस ने सुना कि हेरोद राजा यरूशलेम में है तो वह यीशु को उसी के पास भेज कर इस जटिल समस्या का समाः I न करने से अपने को बरी करना चाहा। उसने दोष लगाने वालों के साथ यीशु को उसके पास भेजा। हेरोद कठोर बन गया था। उसने यूहन्ना को कत्ल करवाया था और अभी तक उसका विवेक काम नहीं कर रहा था। वह यीशु के विषय सुना था कि बहुत बड़ा-बड़ा आश्चर्य काम करता है तो सोचने लगा कि हो सकता है यूहन्ना ही जीवित होकर आया है। उसका विवेक उसे दोषी ठहरा रहा था इसलिये वह डर कर काँपने लगा था। पिलातुस ने यीशु को हेरोद के पास भेजा था। हेरोद सोच रहा था कि पिलातुस इस काम से हेरोद की शक्ति, अधिकार और न्याय को सम्मान करता है। पहले इन दोनों में अनबन था पर इस काम से संधि I हुई। हेरोद यीशु को बहुत दिनों से देखना चाहता था। वह उसका कोई बड़ा आश्चर्य कर्म देख कर सन्तुष्ट होना

चाहता था। पर यीशु उसकी इस बड़ी चाह को पूरा करने के लिये तैयार नहीं था। स्वर्गीय आश्चर्य कर्म तो सिर्फ दूसरों की मुक्ति के लिये करना था अपने लिये नहीं। GCH 34.2

हेरोद और उसके दुश्मनों ने बहुत सवाल पूछे और दोष भी लगाये लेकिन उसने उनका कोई उत्तर नहीं दिया। जब यीशु हेरोद के सामने नीडर खड़ा था तो उसका आदर न करने के कारण वह उससे गुस्सा हुआ। वह अपने सिपाहियों के साथ मिल कर उसको बेइज्जत करने लगे। हेरोद भी यीशु का ईश्वर सरीखा महिमामय चेहरा को देख कर मुग्ध हो गया। वह भी उसे अपराधी ठहराने से डरा और फिर पिलातुस के पास भेजा। GCH 35.1

शैतान और उसके बुरे दूत पिलातुस की परीक्षा कर रहे थे कि वह अपना अधिकार रखता है कि नहीं। उन्होंने उसे सलाह दी कि जब दूसरे लोग यीशु को दोषीगार ठहरा कर मार डालना चाहते हैं और उन्हें इजाजत नहीं देगा, तो उसे भी कोई आदर नहीं देगा, उसकी बात नहीं सुनेगा। उसे एक झूठा चरित्रवाला घोषित किया जायेगा। अपना अधिकार और शक्ति खोने के डर से वह यीशु को क्रूसघात करने के लिये राजी हुआ। बल्कि यीशु को खून करने का दोष को दोष लगाने वालों के ऊपर डाला। वे चिल्ला कर कहने लगे कि इस का दोष हमारे और हमारे बाल-बच्चों के ऊपर पड़े। पिलातुस अब तक अपना विवेक के अनुसार अपने को निर्दोष नहीं मान रहा था। अपना स्वार्थी इच्छा से तथा पृथ्वी पर आदर मान पाने के लालच से उसने एक निर्दोष व्यक्ति को मरने के लिये दुश्मनों के हाथ में सौंप दिया। यदि पिलातुस अपना विवेक के अनुसार चला होता तो यीशु को कोई कुछ नहीं कर सकता था। GCH 35.2

यीशु को जब न्यायालय में दोष लगाने का काम चल रहा था तो बहुत लोगों के मन में विचार उठ रहा था कि जी उठने पर इसका क्या प्रभाव होगा ? बहुत लोग जो यीशु को उसकी परीक्षा और दुःख उठाने का समय से देख रहे थे, उनका विश्वास था कि वह ईश्वर का पुत्र है, और उसका चेला बनना स्वीकार करेंगे। GCH 36.1

शैतान ने यीशु को दुःख देने के लिये पुरोहितों को क्रूरता से व्यवहार करने के लिये भड़काया था, पर उसने बिना कुडकुड़ाये सब सह लिया था। मैंने देखा कि यद्यपि यीशु मनुष्य का स्वभाव लेकर आया था फिर भी ईश्वर के समान उसमें सहनशीलता थी। इसलिये सब प्रकार के दुःख कष्टों को सहा, पर पिता की इच्छा को लेश मात्र भी नहीं तोड़ा। GCH 36.2

मत्ती २७ से आधारित है। GCH 36.3

अध्याय 9 - ख्रीस्त का क्रूसघात

यीशु को क्रूसघात करने के लिये हुक्म दिया गया। प्रिय त्राणकर्ता को वे गुलगुथा पहाड़ की ओर ले जाने लगे। सारी रात का जागरण, मार पीट के दुःख दर्द से वह बहुत कमजोर हो गया था फिर भी उसे क्रूस ढोने को कहा गया, जिस पर उसे क्रूसघात करते। यीशु बोझ के दबाव से मूर्छित हो गिर पड़े। तीन बार उन्होंने उसकी पीठ पर क्रूस काठ को लादा और वह तीन बार मूर्छित होकर गिर पड़ा। शमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य को यीशु का क्रूस ढूलवा कर ले चले। स्वर्गदूतगण कलवरी पर्वत के इर्द-गिर्द अदृश्य रूप से आकाश में मड़ा रहे थे। उसके बहुत से चेले रोते-कलापते हुए कलवरी तक गये। वे उस वक्त को भी याद कर रहे थे जब यीश आखिरी बार गधी के बच्चे पर चढ़ कर बड़ी महिमा के साथ यरूशलेम जा रहा था और लोग सड़क पर डालियाँ और कपड़े बिछा कर उसका स्वागत 'होशाना होशाना' कह कर चिल्लाते थे। उस वक्त वे सोच रहे थे कि यीशु अब इस पृथ्वी पर राज्य करेगा। इस्राएलियों को रोमन राज्य से मुक्त करेगा। क्या यही बदला हुआ दृश्य था! उनका क्या यही पुलावी ख्याल था! इस बार उन्होंने यीशु को आनन्द से पीछा नहीं किया परन्तु मन में दुःखी होकर उदास का भारी बोझ के साथ धीरे-धीरे चले, क्योंकि उसे बेइज्जत कर बहुत ही नीच बना कर क्रूस पर चढ़ाने ले जा रहे थे। GCH 37.1

यीशु की माता भी वहाँ थी। उसका दृश्य तो मानसिक दुःख से चूर-चूर हो गया था, क्योंकि उसका प्यारा बेटा को सता रहे थे। उसका दुःखित मन अभी भी सोच रहा था कि यीशु अपने चेलों के साथ कोई अद्‌भुत काम कर के दुश्मनों के हाथ से बच निकलेगा। वह नहीं सोचती थी कि यीशु क्रूसघात होने का दुःख सहे। पर उसे क्रूस पर चढ़ाने की तैयारी करने लगे। जब यीशु को क्रूस काठ पर ठोंकने के लिए हथौड़ा और काँटी लाने लगे तो चेलों का दिल डर से काँपने लगा। यीशु की माता तो इतना तड़प रही थी कि उस दृश्य को देखकर सहना कठिन हो गया। अतः चेले उसे उठा कर कुछ दूर ले गये, जिससे यीशु के कोमल शरीर में काँटी ठोकने की आवाज न सुन सके। इस प्रकार बेहोश होने से बचाया जा सके। यीशु कभी नहीं कुकुढ़ाया परन्तु उसका चेहरा पीला हो गया और उसके भौहों पर पसीना की बड़ी-बड़ी बूंदें पड़ गई थीं। ईश्वर का पुत्र को क्रूस काठ पर दुःख सहते देख शैतान खुशी मनाने लगा। वह डर भी रहा था कि उसका (शैतान) राज्य छीना गया और अब उसे मरना पड़ेगा। GCH 37.2

यीशु को क्रूस काठ पर बाँधने और काँटी से हाथों और पाँवों को ठोकने के बाद उठा कर क्रूस काठ को गाड़ने के लिये गाढा खोदा था वहाँ एक बड़ी झटका के साथ गिराया जिससे उसके हाथों और पाँवों के माँस चीरा गया। यीशु को असहनीय दर्द हुआ। उसकी मृत्यु को जहाँ तक हो सका बहुत ही निदांजनक बनाया। उसके साथ उन्होंने दो चोरों को क्रूसघात किया। एक को बाईं और दूसरा को दाहिनी ओर। चोरों को बहुत मुश्किल से काबू में लाकर क्रूस काठ पर बाँध कर लटकाये थे परन्तु यीशु को बाँधते समय कुछ भी कठिनाई नहीं हुई। जब चोरों के हाथों को पीछे

घुमा कर बाँध रहे थे तो बाँध ने वालों को बहुत ही गाली-गलौज सुनाकर श्राप दे रहे थे पर यीशु ने तो अपने को समर्पण कर दिया था। उसने अपने दुश्मनों के लिये यह प्रार्थना की कि हे पिता! इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते, क्या कर रहे हैं। यीशु ने न केवल शारीरिक दुःख सहा परन्तु सारी दुनिया के लोगों के पाप का बोझ भी सहा। GCH 38.1

जब यीशु क्रूस काठ पर टाँगा गया तो लोग वहाँ से पार हो रहे थे वे उसे सिर हिला-हिला कर ठट्ठा कर कह रहे थे कि तू तो मन्दिर को ढाह कर तीन दिनों में खड़ा करने का वादा किया था। यदि तू ईश्वर का पुत्र है तो क्रूस से उतर आ। शैतान ने ठीक इसी प्रकार कहा था जब वह जंगल में परीक्षा कर रहा था। प्रधान पुरोहित, प्राचीनगण और शास्त्री लोग ठट्ठा कर कह रहे थे कि उसने दूसरों को तो बचाया पर अपने को बचा नहीं सकता। यदि वह इस्त्राएल का राजा है तो क्रूस से अभी उतर आ तब हम उस पर विश्वास करेंगे। जो दूतगण यीशु के क्रूसघात के समय उसके ऊपर मंडरा रहे थे, वे प्रधान शासकों की इस प्रकार चिढ़ाने से बहुत गुस्सा होकर यीशु को छुड़ाना चाहते थे, पर उन्हें अनुमति नहीं मिली उसका काम का उद्देश्य प्रायः पूरा हो रहा था। क्रूस पर झूलते हुए एक भयंकर दुःख की घड़ी से गुजरने पर भी यीशु अपनी माता को नहीं भूला। GCH 39.1

यीशु ने एक हमदर्दी और मानवता का आखिरी सबक देना चाहा। शोकित माता को तड़पती हुई देखा और पास में प्रिय चेला यूहन्ना को भी। जब उसने माँ से कहाँ - ‘स्त्री देख तेरा बेटा’, और यूहन्ना से कहा - ‘देख तेरी माता।’ उसी समय से यूहन्ना ने उसे अपना घर लिया। GCH 39.2

भारी वेदना से यीशु को प्यास लगी तो उसने पानी माँगा, तो पानी के बदले कडुवा सिरका देकर उसे और भी बेइज्जत किया। दूतों ने अपने कप्तान यीशु का क्रूसघात का भयानक तथा दिल छूने वाला दृश्य देखा था पर अब और देखा न जा रहा था। इस कारण अपने चेहरों को ढ़ाँक लिए। सूर्य ने भी अपनी रोशनी देना बन्द कर दिया। यीशु ने जोर से पुकार कर कहा - ‘पूरा हुआ-, इसे सुन कर लोग डर गये। मन्दिर का पर्दा फट कर दो टुकड़ा हो गया। धरती डोल गई और चट्टानें फट गईं। पृथ्वी पर घना अंधेरा छा गया। उसके बहुत से चेलों ने उसकी मृत्यु - दुःख और कष्टों की घटनाएँ देखीं और उनके दुःख का कटोरा भर गया यानी दुःख और शोक से भर गये। GCH 39.3

पहिले जैसा शैतान खुश था अब वह नहीं था। वह सोचता था कि उद्धार की योजना का काम को असफल बना देगा लेकिन अभी देख पाया कि इसकी नीव और गहरी हो गई। यीशु की मृत्यु होने पर उसे मालूम होने लगा कि अब उसे मरने के सिवा कोई उपाय नहीं हैं। उसका राज्य छीन कर यीशु को दिया जायेगा। अपने बुरे दूतों की एक सभा की। ईश्वर का पुत्र पर विजय प्राप्त नहीं हुई। इसलिये अब उन्हें उसके चेलों को यीशु की राह से भटकाने के लिये कठोर परिश्रम करना होगा। यीशु के द्वारा खरीदा गया उद्धार को पाने से उसके चेलों को रोकना होगा। ऐसा काम कर शैतान फिर भी ईश्वर का राज्य के विरूद्ध लड़ाई जारी रखेगा। जितना तक हो सके अपनी भलाई के लिये यीशु से दूर रहेगा। ख्रीस्त के खून के द्वारा जिन लोगों का उद्धार किया गया वे विजयी

होंगे। पर उनके पाप का दोष तो शैतान पर मढ़ा (डाला) जायेगा। जो पाप का सृजनहार है। उनका पाप उसी (शैतान) को ढोना पड़ेगा। पर जो लोग यीशु का कमाया हुआ उद्धार को ग्रहण करेंगे, उन्हें तो अपने पापों का भार स्वयं उठाना पड़ेगा। GCH 40.1

यीशु का जीवन तो बिना तड़क भड़क या दिखावे का था। उसका दीनहीन और स्वार्थ-त्याग का जीवन तो उन सदूकी और फारसियों और पुरोहितों से जो संसार की मोह-माया पसन्द करते थे, बहुत भिन्न था। यीशु का चरित्र उनके चरित्र को सदा ठोकर दिलाता था। उसका शुद्ध और पवित्र जीवन से इन्हें घृणा थी। जिन लोगों ने उसे तिरस्कार किया था वे एक दिन पिता के घर में उसे असीम महिमा से भरा हुआ और गौरवपूर्ण चेहरा देखेंगे। व्यायालय में उसके शत्रुओं ने उसे घेर कर दिल कठोर कर कहा था कि उसे क्रूस पर चढ़ाओ, उसका खून हमारे और हमारे बच्चों पर पड़ेगा, वे उसे आदरवन्त राजा के समान देखेंगे। सब स्वर्गदूत बड़े महिमा और विजय के गीत गाते हुए उसको रास्ते में अग्रवाई करेंगे क्योंकि वह बध किया गया था, पर जी उठा और विजयी हुआ है। गरीब, कमजोर और दुःखी सबने महिमा का राजा का चेहरा में थूका था, उग्रवादी भीड़ उससे गुस्सा होकर बेइज्जत कर चिल्ला रही थी। जिस चेहरा को स्वर्ग ने महिमा से भरा था, उस पर मार और यूक से बदरंग कर दिया था। उस चेहरा को सूर्य जैसा चमकीला फिर से देखकर डर से भाग कर देखेंगे। क्रूरता की विजय की आवाज करने के बदले अभी वे डर से घबरा जायेंगे। यीशु अपना घायल और छेदा हुआ हाथ को दिखायेगा जो क्रूसघात के समय काँटी ठोका गया था। क्रूरता का चिन्ह अपने हाथों से कभी नहीं मिटायेगा। काँटी का हर छेद बतायेगा कि मानव का उद्धार करने में कितना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा है। जिन लोगों ने यीशु की छाती को बेधा था वे भी इसे देखेंगे और शोकित होंगे कि यीशु का शरीर को कुरूप बना दिया। उसके हत्यारे इस बात से बहुत चिन्तित होंगे कि यीशु के सिर के ऊपर क्रूस काठ पर लिखा गया था - 'यीशु यहूदियो का राजा' । उस वक्त उसे साक्षात में राजकीय शक्ति और महिमा में देखकर ताज्जूब करेंगे। वे उसके मुकुट और जाँघ में यह लिखा हुआ देखेंगे - 'राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु' जब वह क्रूस पर लटका हुआ हा तो ठट्ठा कर चिल्ला रहे थे कि यदि तू इस्त्राएलियों का राजा है तो क्रूस से नीचे उतार आ तब हम विश्वास करेंगे। अब वे उसे राजकीय शक्ति और अधिकार प्राप्त राजा के समान देखेंगे। अब वे उसे इस्त्राएलियों का राज्य होने का प्रमाण नहीं मांगेंगे पर एश्वर्य और महिमा से भरा हुआ चेहरा को देखकर यह कहने के लिए मजबूर होंगे कि धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है। GCH 40.2

धरती का काँप उठना, चट्टानों का फट कर छितराना, घना अंधकार छा जाना और यीशु की जोर की आवाज - 'पूरा हुआ' और अपने प्राण त्याग देना, इन सब घटनाओं ने दुश्मनों के दिल को दहला दिया था। इस कि उक्ति से चेले घबडा गए थे और उन की आशा जाती रही। वे सोच रहे थे कि यहूदी लोग उन्हें भी मार डालेंगे। इस प्रकार का घृणा उन्होंने यीशु पर दिखाया था। उसका वहीं अन्त हो गया, ऐसा नहीं मान रहे थे। इस उदास और निराशा के समय वे एकान्त जीवन जीते

थे। वे सोचते थे कि यीशु कुछ दिनों के लिये राज्य करेगा पर उसके मरने पर उनकी आशा भी मर गई। शोक और हतोत्साह के समय वे सोचते थे। कि क्या यीशु ने हमें धोखा तो नहीं दिया ? उस की माँ भी नम्र हो गई और उसका विश्वास भी डगमगाने लगा था कि क्या वह मसीह था ? GCH 42.1

अपनी आशा को पूरा होते न देखकर उदास होने के बावजूद भी वे उसे आदर और प्यार करते थे पर उन्हें नहीं मालूम था कि कैसे उस की लोथ को प्राप्त करें। अरमाथिया का युसूफ जो उसका चेला था, एक सलाहकार और प्रभावी आदमी था। वह पिलातुस के पास चुपचाप, पर साहस के साथ जाकर यीशु की लोथ को माँगा। चेलों पर यहूदियों का घृणा और गुस्सा के कारण वह दिन में न जा कर रात में गया और गाड़ने माँगा। वह डरता था कि कहीं यीशु की लोथ को गाड़ने देने से इन्कार करे। पिलातुस ने लेने की इजाजत दे दी। जब वे लोथ को क्रूस से उतार रहे थे तो उनका शोक और ताजा हो गया और विलाप करने लगे। उस को मैलोन का कपड़ा में लपेट कर युसूफ की कब्र में डाल दिए और एक बड़ा पत्थर उसके मुँह में डाला गया। वे आरौतें जो उसके दीन हीन अनुयायी थीं और मरने तक उस के साथ थीं, जब तक यीशु को कहाँ ले कर गाड़ा गया, उसे न देखीं तब तक लोथ से दूर न हटी थी। बड़ा वजनदार पत्थर इसलिए ढाँका गया कि कोई उसे उठा कर न ले जाए। उन्हें तो डरना नहीं था क्योंकि स्वर्गदूत बड़ी चौकसी से कब्र में पहरा दे रहे थे। वे कब्र की रक्षा बहुत उत्तेजना के साथ कर रहे थे और अपने कप्तान दूत की आज्ञा सुनकर उसे कब्र से भी निकाल लाने को तैयार थे। GCH 42.2

ख्रीस्त के हत्यारे डर रहे थे कि वह जी उठकर निकल आयेगा। इसलिए उन्होंने पिलातुस से अर्जी की कि तीसरे दिन तक कब्र का कड़ा पहरा दिया जाये। कब्र के मुँह पर का पत्थर में मोहर लगा दिया जाए। ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे उठा ले जाएँ और कहने लगेंगे कि यीशु मुर्दो में से जी उठा है। GCH 43.1

आधारित वचन मत्ती २७ अध्याय GCH 43.2

अध्याय 10 - ख्रीस्त का पुनरुज्जीवन

चेले बहुत उदास के साथ सन्त दिन बिता रहे थे और यीशु इस दिन कब्र में आराम कर रहा था। धीरे-धीरे रात गुजरती जा रही थी। जो दूत कब्र का पहरा दे रहे थे उन्हें मालूम हुआ कि उनका प्रिय कप्तान, ईश्वर का बेटा था, कब्र से उठने का समय निकट आ रहा था। जब वे उसकी विजय की घड़ी का इन्तजार बहुत उत्सुकता से कर रहे थे कि एक स्वर्गदूत बहुत तेजी से उड़ता हुआ स्वर्ग से आया। उसका चेहरा तो बिजली की चमक जैसी थी और वस्त्र तो बर्फ जैसा सफेद था। उसका प्रकाश से अंधकार रास्ता उजला हो गया। बुरे दूत वहाँ अपनी जीत की खुशी में यीशु की लोथ को अपने कब्जे में रखना चाहते थे। वे इस ज्योति को देखकर इर से भाग खडे हुए। एक दूत जिसने यीशु को विनम्र होने की दशा में देखा था, वहीं कब्र की देखभाल कर रहा था और जब यह दूत आया तो दोनों कब्र के पास गए। जैसे ही वे कब्र के पास पहुँचे तो पृथ्वी कांप उठी और एक भंयकर भूकम्प हुआ। मजबूत दूतों ने पत्थर को पकड़ कर उसे किनारे लुढ़का दिया और उस पर बैठ गये। GCH 44.1

पहरेदार लोग बहुत डर गए। यीशु की लोथ की रक्षा करने आये थे पर बेहोश हो गए। अपनी ड्यूटी का ख्याल न कर वे स्वर्ग दूत की तेज रोशनी को देख कर मूर्छित हो कर गिर पड़े। एक दूत ने बड़ा पत्थर को कब्र का दरवाजा से हटा दिया और चिल्ला कर कहा - हे ईश्वर का पुत्र उठ, तुझे तेरा पिता बुला रहा है। मृत्यु अब उसे पकड़ कर न रख सकी। यीशु जी उठ गया। दूसरा स्वर्ग दूत कब्र के अन्दर घुस कर बैठ गया जब कि यीशु जी उठ कर वहाँ से निकल गया। इस दृश्य को स्वर्ग दूत आश्चर्य से देख रहे थे। यीशु कब्र से निकल कर जा रहा था तो दूतों ने उसकी महिमा का गीत स्वागत के रूप में गाया। शैतान ने हार मान ली। स्वर्गदूत की ज्वाला से उसके बुरे दूत पहले ही डर से भाग चुके थे। वे अपने गुरु को शिकायत सुना रहे थे कि हमारा शिकार को जबर्दस्ती छीन लिया गया। जिसे वे घृणा कर रहे थे वह अब जी उठ गया। GCH 44.2

शैतान और उसके बुरे दूत इस बात को लेकर कुछ क्षण खुशी मना रहे थे कि पापियों की जीवन ने उनका प्रिय प्रभु की जान ले ली थी। उसे कब्र का मुंह देखना पड़ा। पर उनका यह झूठा आनन्द थोड़ी देर का था। यीशु पर उनकी विजय मरने तक ही थी। जी उठ कर उसने सब पापियों के लिए मुक्ति का दरवाजा खोल दिया। GCH 45.1

शैतान को कुछ देर के लिये उदास होना पड़ा। उसने एक आम सभा बुला कर अपने दूतों को क्या करना होगा उसे बताया। वे ईश्वर के राज्य के विरूद्ध काम करने को तैयार हुए। शैतान ने उनको मुख्य पुरोहित और प्राचीनों के पास भेजा। शैतान के दूत आकर कहने लगे कि हमने उनको ट्राने में और उनका दिल को कठोर करने में सफलता पाई। उन के विश्वास को भी अंधा कर दिया ताकि वे यीशु के जी उठने पर विश्वास न करें। यदि वे जान जायेंगे कि यीशु जी उठा है तो लोग उन पर यह कह कर हमला करेंगे कि उन्होंने निर्दोष व्यक्ति को मार डाला है। GCH 45.2

जब स्वर्गदूत स्वर्ग चले गए तो रोमन सिपाही उठ कर चारों ओर देखने लगे, ऐसा श्रीमती ई. जी. ह्वाईट ने दर्शन में देखा। उन्होंने आश्चर्य से देखा कि पत्थर हटा दिया गया है। यीशु वहाँ नहीं है। इस खबर को देने के लिये वे प्रधान याचक और प्राचीनों के पास वे दौड़ते-दौड़ते गए। उसके हत्यारों ने यीशु के जी उठने की खबर सुनी तो उनके चेहरे पीले हो कर मुझ गये। वे डर कर कहने लगे कि यदि सिपाहियों की रिपोर्ट सही है तो हम तो मर गए। कुछ देर के लिये तो वे किम्। कर्त्तव्यविमूढ़ हो गये यानी क्या करना और न करना है उसे भूल गये। अन्त में उन्होंने फैसला किया कि सिपाहियों को रूपये देकर इस बात को छिपाये रखने कहेंगे। उन्हें कहलवायेंगे कि हम लोग सो रहे थे उस वक्त उसके चेले चुराकर ले गए। ड्यूटी के समय सोने की बात कहने से तो उन्हें सजा मिलेगी। उस पर याजकों और प्राचीनों ने कहा कि हम रोमन गर्वनर को पैसे देकर बहका देंगे कि यीशु जी नहीं उठा पर उसके चेले चुरा कर भाग गये। जब यीशु क्रूस में अपने प्राण दे दिये तो भूकम्प हुआ, चट्टानें फट कर उड़ने लगीं और सन्तों की कड़ें खुल गयीं। ठीक उसी तरह की घटना यीशु के जी उठने के समय हुई। ये चहेते सन्त, महिमापूर्ण कब्रों से उठे। वे कुछ ही चुने हुए सन्त लोग हैं जो जी उठ कर यीशु के साथ रहे। यीशु के जी उठने को छिपाने के लिए जब याजक और प्राचीन लोग कोशिश कर रहे थे तो ईश्वर ने एक दल को तैयार किया जो उसके जी उठने की गवाही दे। GCH 45.3

जिनको जिलाया गया था उनके विभिन्न डील-डौल थे। मुझे सूचित किया गया कि पृथ्वी के लोग अब अपनी शक्ति, आयु सीमा और डील-डौल में कम होते जा रहे हैं। शैतान इस पृथ्वी पर पाप को लाया और उस का प्रभाव से लोगों में बिमारियाँ आई, अभिशाप आया और मृत्यु आई। जो लोग जिलाये गये थे उनकी तुलना में ये बौने और कमजोर थे। लूत और आब्राहम के दिनों में लोग बड़े डील-डौल के होते थे और अधिक दिन भी जीते थे। पर इसके बाद लोग कमजोर और अल्पायु होते गए। शैतान लोगों को तंग कर कमजोर बनाते जा रहे हैं। GCH 46.1

जो लोग यीशु के साथ जी उठे वे दूसरे लोगों को भी दिखाई दे कर गवाही देने लगे - यीशु का बलिदान सफल हुआ। वह मर कर भी जी उठा। हम भी उसके साथ जी उठेगें । वे यह गवाही देने लगे कि उसकी महान शक्ति (अधिकार) से ही कब्र से बुलाये गए। शैतान और उस के बुरे दूतों के द्वारा प्राचीन और पुरोहितों की झूठी रिपोर्ट के बावजूद भी यीशु का जी उठना नहीं छिपाया जा सका। ये लोग जो यीशु के साथ जी उठे थे उन्होंने गवाही दी तथा यीशु स्वयं लोगों को दिखाई देकर बताया था कि वही यीशु है जो पहले था, मर गया था पर फिर जी उठा। उसने चेलों को धीरज और ढाढ़स दिया। GCH 47.1

जब यह समाचार एक शहर से दूसरा शहर और हर जगह फैलता गया तो यहूदी लोग डरने लगे बौर अपना पुराना घृणा की भावना को चेलों से छिपाने लगे। उनका सिर्फ एक ही मतलब था कि झूठी रिपोर्ट फैले और कुछ लोगों ने इसे विश्वास भी किया। यीशु के जी उठने का पक्का प्रमाण

सुनकर पिलातुस भी डर गया। क्योंकि यीशु अपने साथ बहुत लोगों को जिलाया था। यीशु चेलों के बीच शान्ति छोड़ गया। जगत का यश को पाने के कारण अपना जीवन और अधिकार को बचाने के वास्ते उसने यीशु को क्रूसघात करने की अनुमति दी थी। उसको अब पूरा विश्वास हो गया कि वह (यीशु) एक साधारण और निर्दोष व्यक्ति ही नहीं वरण ईश्वर का पुत्र भी था जिसका खून का वह अपराधी था। पिलातुस का जीवन बहुत ही दुःखमय बना। वह वेदना से भर गया और आनन्द और आशा की किरण नहीं दिखाई देने लगी। अन्त में वह कष्टदायक मृत्यु से मरा। हेरोद का मन और भी कठोर हो गया। उसने सुना कि यीशु जी उठा है फिर भी उसके लिए कुछ फर्क नहीं पड़ा। याकूब को कत्ल करवा दिया और पतरस को भी इसी इच्छा से पकड़कर बन्दीगृह में डलवा दिया था। GCH 47.2

ईश्वर चाहता था कि पतरस जल्दी न मरे। उसे प्रभु का काम करना था। इसलिये दूत को भेज कर जेल से छुड़ा लिया। GCH 48.1

हेरोद पर ईश्वर की न्याय छड़ी तुरन्त गिरी। जब वह भीड़ में भड़कीला वस्त्र पहन कर अपनी बड़ाई ईश्वर से बढ़ कर करने लगा तो दूत ने उसके पेट में ऐसा मारा कि वह गिर कर बुरी हालत में मर गया। GCH 48.2

बड़े भोर को जब पवित्र महिलाएँ यीशु की कब्र के पास सुगन्ध तेल से उसके शरीर को लगाने आईं तो उन्होंने देखा कि कब्र का पत्थर हटाया हुआ है। यीशु का शरीर भी वहाँ नहीं था। वे डर कर सोचने लगीं कि दुश्मनों ने यीशु की लोथ को चुरा लिया है। उन्होंने दो स्वर्गदूतों को उज्जवल वस्त्र पहने हुए देखा। उनके आने की बात को समझ कर दूतों ने कहा कि यीशु यहाँ नहीं है वह जी उठ कर गलील को चला गया। आओ कब्र को देख लो। जाकर चेलों को बता दो कि गलील चला गया है। महिलाएँ डर कर घबरा गई। वे तुरन्त चेलों के पास दौड़ कर गईं। वे तो यीशु की मृत्यु पर शोक कर रही थीं। उन्हें शान्ति नहीं मिल रही थीं। जब औरतों से जी उठने की खबर सुनी तो वे भी दौड़ कर कब्र के पास गये। पर सचमुच कब्र में यीशु नहीं था। गाड़ने के समय यीशु को जो मैलोन कपड़ा से लपेटा गया था वह तो मिला पर यीशु नहीं। फिर भी चेले सन्देह करने लगे कि वह कहाँ चला गया और कौन उठा ले गया। मरियम कब्र के आस-पास ही घूम रही थी। वह चिन्तित थी कि कैसे यीशु को देख पायेगी। कुछ भेद पाने की आशा से ही वह उसके आस-पास थी। दूतों ने उसे बता दिया था पर उस पर यकीन नहीं कर पा रही थी। दूतों ने नम्रता से कहा क्यों तुम रोकर विलाप कर रही हों। वह तो जी उठ चुका है, कह कर उन्होंने उसे शान्ति दी। GCH 48.3

जब वह कब्र को छोड़ कर जा रही थी कि यीशु उसके पीछे खड़ा हुआ था। उसने भी उसके दुःख करने का कारण पूछा और किसे खोज रही हो, कहा। “मेरी” तो उसे एक माली समझ रखी थी वह पूछने लगी - ‘हे माली ! बताओ यीशू को कौन ले गया ? या तुमने कहाँ रखा है। मैं तेल

मालिश करने आयी हूँ। इस पर यीशु को रहम आया। वह अपने स्वर्गीय आवाज में बोल उठा - 'मैं यीशु हूँ।' इस आवाज से वह पहचान गई। वह बहुत खुश होकर उसे आलिंगन करना चाही। पर यीशु ने कहा - अभी मुझे मत छुओं क्योंकि मैं अब तक स्वर्ग का पिता के पास नहीं गया हूँ। यीशु ने कहा जा कर चेलों को बता दो कि मैं स्वर्ग में पिता के पास जा रहा हूँ। यीशु पिता के पास पहुँच कर उसके मुंह से उसके बलिदान और उद्धार कमाने का आशीर्वाद पाया और स्वर्ग और पृथ्वी का अष्टि कार भी उसे दिया गया। GCH 49.1

श्रीमती ह्वाईट दर्शन में देखी कि स्वर्गदूतों का झुंड यीशु को घेरते हुए स्वर्ग राज्य का नया यरूशलेम का फाटक तक स्वागत करने ले गये। वहाँ यीशु पिता और स्वर्गदूतों की महिमा के बीच प्रवेश कर पिता से आशीर्वाद लिया। महिमा से परिपूर्ण होने के बावजूद भी वह धरती के बेचारे चेलों को नहीं भूल सका। वह एक ही दिन के भीतर पृथ्वी पर लौट आया। पिता के पास जा कर अधिकार प्राप्त करने के बाद दूसरों के छूने से अब किसी को मना नहीं किया। GCH 49.2

इस समय में थोमस गैरहाजिर था। चेलों के लाख विश्वास दिलाने पर भी वह जी उठा हुआ यीशु पर विश्वास नहीं कर रहा था। उसने कहा कि जब तक मैं अपनी ऊँगली से यीशु के छेदे हुए पंजर पर न छू लँ, तब तक मैं यकीन नहीं करूँगा। ऐसा बोल कर अपने भाईयों के ऊपर अविश्वास प्रकट करने लगा। यदि सब लोग ऐसा ही माँग करें तो बहुत कम लोगों को ऐसा अवसर मिलेगा। ईश्वर की इच्छा थी कि यह खबर बातों-बातों में फैले, थोमस जैसा सन्देह करने वालों को ईश्वर पसन्द नहीं करता है। जब यीशु दूसरी बार चेलों के बीच में आया तो थोमस भी था उसने उसे बुलाकर कहा - अपनी ऊँगली मेरे पंजर का छेद में डाल कर देखो और विश्वास करो कि मैं यीशु हूँ। क्यों कि दुश्मनों ने मेरे पंजर पर बच्र्छा से छेद किया था। थोमस ने ऐसा ही किया और चिल्ला कर कहा - 'हे मेरे प्रभु और ईश्वर!' यीशु ने डाँटते हुए कहा कि - "तूने मुझे देख कर विश्वास किया। धन्य है वह जो सुन कर ही मुझ पर विश्वास करता है।" GCH 50.1

मैंने देखा जिनकी अभिज्ञाता पहिला और दूसरा दूतों के समाचार में है उन के समाचार पर हमें विश्वास कर चलना चाहिए। यीशु का जी उठना को जैसा सुन कर विश्वास करते हैं। चेलों ने बताया कि स्वर्ग के नीचे पृथ्वी के ऊपर यीशु को छोड़ कर कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिससे हम उद्धार पायें। हमें सच्चाई की सब बातों को मानना चाहिए। दूसरा और तीसरा दूतों के समाचार में किसी एक का नहीं मानते हैं तो हमारा उसमें कोई हिस्सा न होगा जिसको प्रभु ने तैयार किया है। GCH 50.2

मैं देख रही थी, जब स्त्रियाँ यीशु के जी उठने के समाचार चारों ओर फैला रही थी तो शैतान भी प्रधानों और याजकों के द्वारा झूठी रिपोर्ट दिलवाने के लिये व्यस्त था। इधर ईश्वर भी मरे हुओं को जिलाकर यीशु के जी उठने की गवाही दिलवा रहा था। GCH 51.1

यीशु चालीस दिनों तक चेलों के साथ रहा और स्वर्ग राज्य के भेदों को समझाता था। उनका विश्वास को मजबूत कर रहा था। उनको आदेश देकर कहा कि जो कुछ तुम लोगों ने मेरे विषय में सुना और देखा उसका साक्षी जगत के सब लोगों को दो ताकि वे मुझ पर विश्वास कर जीवन पाएँ। उन्हें विश्वास दिला कर कहा कि मेरे कारण तुम लोग सताये जाओगे और दुःख उठाओगे, परन्तु जब तुम लोग मेरे वचनों को याद करोगे तो तुम्हें धीरज और शान्ति मिलेगी। उसने कहा कि मैंने शैतान की परीक्षा पर विजय पाई है। दुःख तकलीफों से गुजर कर उसे हराया है। इसलिए मुझ पर उसका अधिकार नहीं है। पर जो मुझ पर विश्वास करेगें उनके ऊपर भारी से भारी परीक्षा लायेगा। उसने आश्वासन दिया कि मेरी तरह विजयी होंगे। जब मेरे वचन के अनुसार चलेंगे तब। यीशु ने अपने चेलों को आश्चर्य कर्म करने का भी अधिकार दिया। दुष्ट लोग कभी-कभी तुम्हारे शरीर पर काबू पायेंगे। लेकिन जब तक तुम्हारे द्वारा इच्छित कामों की पूर्ति नहीं होती स्वर्गदूत आकर छुड़ा लेंगे। जब उनकी गवाही देने का काम खत्म हो जायेगा तो हो सकता है। कि उनका जीवन ले लिया जा सकता है। उसके चेले बहुत उत्तेजित होकर तथा ध्यान से उसका उपदेश सुन रहे थे। इसके बाद उन्हें पूरा यकीन हो गया कि यही जगत का उद्धारकर्ता है। उस की सारी बातें चेलों के मन में घुस गई। पर यह जान कर दुःखित हुए कि उनका गुरु उन्हें छोड़ कर स्वर्ग को जाने वाला है। यीशु ने फिर उन्हें शान्ति देकर कहा कि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जा रहा हूँ। फिर आकर तुम्हें वहाँ ले जाऊँगा। तब सदा तुम लोग मेरे साथ रहोगे। उसने फिर कहा कि मैं वहाँ जाकर तुम्हारे लिये पवित्रात्मा को भेजूंगा। वह आकर तुम्हें शान्ति देगा, सच्चाई को सिखायेगा और जिस रास्ते पर चलना होगा वहाँ तुम लोगों की अगुवाई करेगा। इन वचनों से शान्ति देकर यीशु ने अपना हाथ उठा कर उन्हें आशिष दी। GCH 51.2

आधारित वचन प्रकाशित वाक्य १४:६-८, ९-१२,

मत्ती २८: लूका २४, यूहना २०:२६-२९॥

अध्याय 11 - पाठ ११ - ख्रीस्त का स्वर्गारोहण

सारा स्वर्ग यीशु के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। स्वर्ग दूतगण महिमा का राजा को ले जाने के लिये तैयार थे। यीशु अपने चेलों को आशीर्वाद देने के बाद स्वर्ग चला गया। जब वह स्वर्ग जा रहा था तो उस भीड़ के लोगों को भी स्वर्ग ले गया जिन्हें उसने जिलाये थे। बहुत से स्वर्गीयजन और दूतगण उसके स्वर्ग आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब वे पवित्र नगर की ओर जा रहे थे - अगुवाई करने वाले दूत जोर-जोर से कहने लगे - हे फाटको और दरवाजों अपने सिर ऊँचा करो क्योंकि महिमा का राजा प्रवेश कर रहा है। जो दूत प्रतीक्षा कर रहे थे वे खुशी से कहने लगे - वह कौन महिमा का राजा है ? अगुवाई करने वाले दूत विजय के स्वर में कहने लगे - प्रभु जो बलवान और महान है! युद्ध का शूरवीर! हे फाटको सिर ऊँख करो! हे अनन्तकाल का दरवाजा तू भी अपना दरवाजा चौड़ा कर क्यों कि महिमा का राजा आ रहा है। फिर स्वर्ग के दूत पुकार उठे - कौन महिमा का राजा आ रहा है? अगुवानी करने वाले दूत बोल उठे - सेनाओं का प्रभु ! वही महिमा का राजा है! इस प्रकार स्वर्गीय दल पवित्र नगर में प्रवेश किया। सब स्वर्गीय दूतों ने अपना महान नेता, ईश्वर का पुत्र को घेर लिया और अपने-अपने चमकीले मुकुट को उतार कर उसे झुक कर दण्डवत किया। इसके बाद उन्होंने अपने स्वर्ण वीणा से मधुर स्वर से गीत बजा कर सारा स्वर्ग का वातावरण को आनन्दमय बना दिया। उसके लिये यह गीत गाया परमेश्वर का मेम्ना जो बध किया गया था फिर भी वह अब बहुत ऐश्वर्य के साथ जीता है। GCH 53.1

दूसरी ओर के दर्शन जो श्रीमती ने देखा उसका वर्णन करती है - चेले उदास होकर स्वर्ग की ओर ताक रहे थे जिससे उसका अन्तिम झलक तक देख सकें। उसी वक्त स्वर्ग से दो दूत कहने लगे - हे गलीलियो, तुम खड़े होकर स्वर्ग की ओर क्यों ताक रहे हो ? यही यीशु जो स्वर्ग की ओर उठा लिया गया। वह फिर इसी रीति से आयेगा जैसा वह गया। चेले यीशु की माता के साथ स्वर्ग जाने को देख चुके थे। उन्होंने सारी रात उसके अद्भुत कामों की चर्चा करते रहे, और थोड़ी देर पहले जो घटना घटी थी उसके विषय में भी। GCH 54.1

शैतान ने अपने चेलों की एक सभा की। उसमें उसने कठोर घृणा व्यक्त कर ईश्वर के राज्य के विरूद्ध पहिले से दस गुना अधिक चेष्टा कर काम करने की सलाह दी तथा चेलों के विरूद्ध काम करने को कहा। यीशु के विरूद्ध तो कुछ न कर सके, परन्तु उसके चेलों को जो उसके जी उठने और स्वर्ग जाने पर विश्वास करते हैं सम्भव हो तो सदा के लिए उखाड़ फेकें। शैतान ने अपने दूतों को बता दिया था कि यीशु ने अपने चेलों को यह अधिकार दे रखा है कि हम जिस भूतग्रस्त व्यक्ति को धरेंगे तो हमें (भूतों को) निकाल देंगे, घुड़की देंगे और उसे (भूतग्रस्त व्यक्ति को) चंगा करेंगे। अब शैतान के दूत गरजते हुए सिंह की नाई निकले और यीशु के चेलों को खोजने लगे। वे जिस किसी को भी पायें तो उन्हें फाड़ खाने की इच्छा करने लगे। GCH 54.2

आधारित वचन भजन सं० २४:७-१० प्रेरित क्रिया १:१-११

अध्याय 12 - पाठ १२ - ख्रीस्त के चेले

बड़े समर्थ के साथ चेले क्रूसघातित जी उठा यीशु के विषय प्रचार करने लगे। उन्होंने रोगियों को चंगा किया। यहाँ तक कि एक जन्म से लंगड़ा व्यक्ति को भी चंगा किया जो उनके साथ उछलता कूदता हुआ ईश्वर की महिमा कर लोंगो के बीच चला फिरा। इस के समाचार चारों तरफ फैल गये और लोग चेले से आकर पूछने लगे। इस चंगाई का काम को देखकर बहुत से लोग बड़े आश्चर्य में पड़ गए। GCH 55.1

यीशु के मरने पर प्रधान याजकों ने सोचा था कि अब किसी प्रकार का आश्चर्य कर्म नहीं होने से, देखने की उत्सुकता घट जायेगी और लोग फिर से परम्परा की ओर चले आयेंगे। पर ठीक उन्हीं के बीच चेलों के द्वारा आश्चर्य कर्म करना शुरू हो गया तो लोग आश्चर्यचकित होकर उनकी ओर देखने लगे। यीशु को तो क्रूस पर चढ़ा दिया गया था और ये ताज्जुब करने लगे कि इन्हें कहाँ से यह शक्ति मिल गई। वे सोच रहे थे कि जब यीशु जीवित था तो उन्हें यह शक्ति मिली थी पर मर गया तो सोच रहे थे कि आश्चर्य कर्म करने का अधिकार भी न रहेगा। पतरस को उनकी घबड़ाहट का पता लग गया। उसने उन्हें कहा - 'हे इस्त्राएली लोग, तुम इसको देखकर क्यों आश्चर्य करते हो और हमारी ओर देखते हो ? अब्राहम, इसाहक और याकूब का ईश्वर जिसने अपने पुत्र यीशु की महिमा की, जिसे तुमने इन्कार कर उसे मार डालने की इच्छा से पिलातुस को सौंपा था। तुमने उस पवित्र और निर्दोषजन को हत्या करने की स्वीकृति पाने के लिए उसके पास लाया था। उसे ईश्वर ने मरे हुए में से जिलाया जिस की गवाही हम देते हैं। पतरस ने कहा कि उसका यीशु पर विश्वास ने, उसे जो पहिले लंगड़ा था, चंगा किया। प्रधान याजक और प्राचीन लोग इस बात को सुनना नहीं चाहते थे। उन्होंने चेलों को पकड़ कर बन्दीगृह में डाल दिया। परन्तु चेलों की इसी एक बात से हजारों लोग जी उठने और स्वर्ग जाने को विश्वास कर मन परिवर्तन कर लिए। इससे प्रधान याजक और प्राचीनो को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था और सोचते थे कि इससे लोगों का विरोध प्रदर्शन उनके ऊपर होगा पर अब तो बद से बदतर होने जा रहा था। अब तो चेले सीधा उन पर हत्या करने का दोष लगा रहे थे। उन्हें मालूम नहीं हो रहा था कि यह क्रोध कितना दूर तक आगे बढ़ेगा, लोग उनसे कैसा व्यवहार करेंगे, इसकी चिन्ता में डूबे थे। वे आसानी से यीशु के चेलों को मृत्युदण्ड दे सकते थे परन्तु वे पत्थरावह किये जाने के डर से ऐसा नहीं कर पा रहे थे। उन्होंने चेलों को सभा में लाने को कहा। जो यीशु को मार डालने के लिए हल्ला कर रहे थे। वे भी वहाँ थे। पतरस जब यीशु को शपथ खाते और शाप देते हुए इन्कार कर रहा था तो वे भी वहाँ थे। वे पतरस को डराने ध मिकाने चाह रहे थे, पर वह अभी निडर बन गया था। यीशु की बड़ाई, करने का अवसर पतरस को अभी मिला था। डरपोक बन कर वह पहले यीशु को मुकर चुका था। उसी का प्रायश्चित करने के लिए उसने साहस दिखाया और कहा कि जिसको तुमने क्रूसघात किया था उसे ईश्वर ने जिलाया और उसी के द्वारा यह व्यक्ति जो तुम्हारे सामने खड़ा है, चंगा हुआ है। जिस कोने का पत्थर को तुमने त्यागा था वही पत्थर अब सिर बन गया। स्वर्ग के नीचे

मनुष्यों के बीच में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है। यीशु को छोड़, जिससे हम उद्धार पा सकते हैं। GCH 55.2

पतरस और यूहन्ना की इस गवाही से लोग चकित हो गए। यीशु साथ रहने से उन्हें ज्ञान मिला है क्योंकि यीशु को जब क्रूस काठ पर ठोका जा रहा था तो वह निडर और गम्भीर स्वभाव का था, ठीक इन का भी वही स्वभाव है। यीशु ने अपनी उदास भरी नजर से पतरस को देखकर उसके इन्कार करने को डाँटा था। अभी पतरस जब साहस के साथ यीशु की गवाही देने लगा तो यीशु ने उसे फिर ग्रहण कर आशिष दी। यीशु को ग्रहण करने के स्वरूप में उसे पवित्रात्मा का वरदान मिला। GCH 57.1

प्रधान याजक चेलों को घृणा करते थे उसे प्रगट नहीं कर सके। उन्होंने उन्हें सभा से बाहर भेज कर अपने आप में कहा कि इनको क्या किया जाय क्योंकि इन्होंने सचमुच एक बड़ा अचम्भा का काम किया है और यरूशलेम के आस-पास रहने वाले सभी लोग जान गये हैं जिस को हम भी इन्कार नहीं कर सकते। इस समाचार के फैलने से वे डरते थे। यदि यह फैल जायेगा तो उनका अधिकार भी खत्म होगा और वे हत्यारा के समान देखे जायेंगे। इसलिये उन्होंने यह चेतावनी देना अच्छा समझा कि उन्हें डरा-धमका कर भेज दें और कहें कि यीशु के नाम से लोगों को कुछ भी मत सुनाओं नहीं तो मार डाले जाओगे। इस पर पतरस ने कठोर रूख धारण कर कहा कि हमने जो कुछ देखा और सुना है उसे बिना बताये नहीं रह सकते हैं। GCH 57.2

यीशु का अधिकार पा कर चेले हर रोगी व्यक्ति को जो उनके पास आता था प्रतिदिन चंगा करते रहे। प्रधान याजक, पुरोहित और जो लोग उनके साथ थे वे इन बातों से घबड़ा गए। सैकड़ों लोग, क्रूसघातित, जी उठे और स्वर्ग पर चढ़ा हुआ यीशु के चेले बनने लगे। उन्होंने इस उत्तेजना को बन्द करने के लिये चेलों को जेल में डालने लगे। इस पर शैतान और उसके बुरे दूतों को बहुत आनन्द लगा। पर ईश्वर के दूत भी जेलों में जाकर उसका दरवाजा खोल कर उन्हें छुड़ाने लगे और उनके मना करने पर भी मन्दिरों में जाकर प्रचार करने को कहा। कौंसिल में चेलों को जेल से लाने के लिये कहा गया पर जेलों के दरवाजे खोलने पर उन्हें नहीं पाये। वे याजकों और प्राचीनों के पास लौट कर बताने लगे कि हमने तो खिड़की-दरवाजे सब ठीक से बन्द किये थे और पहरेदार बाहर खड़े होकर पहरा दे रहे थे फिर भी दरवाजा को खुला पाया और अन्दर कोई कैदी नहीं था। इसी वक्त एक व्यक्ति उनको बता रहा था कि जिनको आप लोगों ने बन्द कर रखा था, वे तो खड़े होकर मन्दिर में उपदेश दे रहे हैं। तब कप्तान अपने कर्मचारियों को साथ लेकर उन्हें बिना कुछ किये ले आया क्योंकि पत्थरवाह किये जाने का डर था। जब उन्हें कौंसिल में लाया गया तो प्रधान याजक ने पूछा - ‘क्या हमने तुम्हें सख्त मना नहीं किया था कि यीशु के नाम से प्रचार मत करो, और देखो तुमने सारे मरूशलेम के आस-पास अपना सिद्धान्त को प्रचार किया है और हमें यीशु का हत्यारा होने का दोष लगाया है। GCH 57.3

वे तो ढोंगी थे। परमेश्वर से बढ़कर मनुष्यों से प्रशंसा पाना चाहते थे। उसके दिल कठोर थे। चेलों ने बडा आश्चर्य कर्म किया था। उससे नाराज थे। वे जानते थे कि यदि चेले यीशु के क्रूसघात, जी उठना और स्वर्ग पर जाने की कहानी को बतायेंगे तो वे उसके हत्यारे साबित होंगे। वे यीशु को मार डालने की जिम्मेदारी और उसका खून को अपने और अपने बच्चों के ऊपर नहीं लेना चाहते थे यद्यपि कि वे पहले लेने के लिये राजी थे। चेलों ने साहसपूर्वक घोषणा की कि मनुष्य से बढ़कर हम ईश्वर की बात मानेंगे। GCH 58.1

पतरस ने कहा - 'हमारे पूर्वजों का ईश्वर ने जिसे तुम क्रूस पर ठोंककर मार डाला था, उसे जिलाया है। उसे ईश्वर ने महिमा देकर अपनी दाहिनी ओर बैठा कर राजकुमार और त्राणकर्ता ठहराया है, इस्त्राएलियों को पश्चात्ताप करवाने और पापों की क्षमा देने के लिये भी। हमलोग गवाही देते हैं और पवित्रात्मा भी उनको देती है जो ईश्वर की बातों को मानते हैं। तब वे हत्यारे और भी क्रोधित हो उठे। वे चेलों को कत्ल कर फिर से अपना हाथ खून से रंग डालना चाहते थे। वे ऐसा विचार कर ही रहे थे कि स्वर्ग से एक दूत गामालिएल के पास आया और उन्हें सलाह देने को कहा। तब गामालिएल ने उन्हें सलाह दी कि इन लोगों को कुछ नहीं करना है। यदि यह मनुष्यों की ओर से है तो अपने आप बन्द हो जायेगा और यदि ईश्वर की ओर से चेले काम रहे हैं तो हमारे रोकने से भी नहीं रूकेगा। बुरे दूत और शैतान तो चाह रहे थे कि इन चेलों को मृत्युदण्ड मिले। लेकिन ईश्वर ने दूतों को भेज कर उन्हीं का दल में से एक प्रभावशाली व्यक्ति के द्वारा प्रेरितों का काम को रोकवाने से मना किया। GCH 59.1

प्रेरितों का काम पूरा नहीं हुआ था। उनको राजाओं के सामने भी यीशु के विषय जो देखे थे और सुने थे, उसकी गवाही देनी थी। प्रेरितों को छोड़ने के पहले उन्होंने इन्हें मारा-पीटा और कहा कि इसके नाम से प्रचार मत करो। ईश्वर की महिमा करते हुए वे कौंसिल से बाहर गये और अपने को, यीशु के लिये दुःख सहने के कारण धन्य माने। मन्दिरों में जाकर प्रचार करने लगे और जहाँ-जहाँ उन्हें बुलाते थे वहाँ जाकर भी अपना कर्तव्य पूरा करने लगे। ईश्वर का वचन बढ़कर दुगुना बढ़ता गया। शैतान ने रोमन पहरेदारों को झूठ बोलवा कर कहा था कि जब हम सो रहे थे तो यीशु के चेले आकर उसे चुरा लिए। इस झूठ के द्वारा वे आशा कर रहे थे कि सच को छिपावें, परन्तु चारों ओर यीशु के जी उठने की गवाही देने वालों की भरमार से यह जंगल की आग की तरह फैलता गया। यीशु के नाम से अद्‌भुत-अद्‌भुत काम होने लगे। मनुष्य के पुत्र को मार डालने का अधिकार जब मिला था तो वे यीशु का खून का जिम्मेदारी लेना चाहते थे, अब उन पर चेले बड़े साहस के साथ यह जिम्मेदारी डाल रहे थे। GCH 59.2

मैंने देखा कि ईश्वर के दूतों को विशेष आदेश दिया गया कि चेले जो विशेष सच्चाई का प्रचार कर रहें हैं, वह पीढ़ी से पीढ़ी तक के लिये धरोहर स्वरूप ठहरने वाला है, उनकी चिन्ता कर रक्षा करें। जो प्रेरित जी उठा यीशु, और स्वर्ग में चढ़ा यीशु की गवाही देते थे उन पर पवित्र आत्मा थी।

उसी ने इन्हें इस सत्य को जो इस्त्राइलियों की आशा प्रचार करने की समर्थ दी। सब त्राणकर्ता यीशु पर नजर रखकर अपना जीवन का बलिदान देकर मार्ग दिखाया था उस पर चलने लगे मानो एकमात्र आशा वही है। मैंने यीशु की बुद्धि और समझ को देखा जब वह अपने चेलों को उसका काम को पूरा करने के लिए मार दिया गया। उसी काम को यहूदी या इस्त्राइली लोग नफरत कर मार डालना चाहते थे। शैतान के कामों को नष्ट करने का अधिकार चेलों को दिया गया था। GCH 60.1

यीशु के नाम उन्होंने अद्‌भुत चिन्ह और विचित्र काम करके दिखाये पर दुष्टों के हाथों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया। यीशु की मृत्यु और जी उठने के समय एक महिमा का प्रकाश चमक कर उस सत्यता को अमर किया कि यीशु ही जगत को बचाने वाला है। GCH 60.2

आधारित वचन प्रेरित क्रिया ३ और ४ अध्याय

अध्याय 13 - पाठ १३ - स्तिफनुस की मृत्यु

यीरूशेलम में चेलों की संख्या बहुत बढ़ती गई। परमेश्वर का वचन का भी खूब प्रचार हुआ यहाँ तक कि कई याजक और पुरोहित भी विश्वास करने लगे। स्तिफनुस पूरा विश्वास के साथ लोगों के बीच बहुत बड़े-बड़े अचम्भे के काम कर रहे थे। बहुत लोग गुस्सा हो रहे थे क्योंकि याजक और पुरोहित अपनी परम्परा के धर्म की विधि को छोड़ कर यीशु का बलिदान पर विश्वास कर रहे थे। स्तिफनुस स्वर्ग से बुद्धि और साहस पाकर याजकों और पुरोहितों को बड़ी डॉट-फटकार सुना रहे थे। वे उसकी बुद्धि और अधिकार का विरोध नहीं कर सकने पर दुष्टों को शपथ दिला कर उसको मार डालने के लिये भाड़ा में लेकर कहने लगे कि हमने उसे मूसा और व्यवस्था के विरूद्ध बातें करते सुना है। उन्होंने लोगों को भड़का कर स्तिफनुस के विषय मूसा और उसकी व्यवस्था के विरूद्ध बात करने को झूठा दोष लगाया। उन्होंने गवाही देकर कहा कि हमने उसे यह कहते सुना है कि यीशु मूसा की दी हुई व्यवस्था को उठाने आया है। GCH 61.1

जो लोग स्तिफलुस का न्याय के लिये बैठे थे उन्होंने उस का चेहरा में महिमा की रोशनी देखी। उसका चेहरा स्वर्गदूतों के चेहरे के समान चमकने लगा। वह पवित्रात्मा से परिपूर्ण होकर उठ खड़ा हुआ और विश्वास के साथ तथा बड़ा साहस के साथ नबियों से आरम्भ कर यीशु का आगमन, मरण, वंगारोहण की चर्चा करते हुए दिखाया कि वह पिता के दाहिने हाथ की ओर सिंहासन पर बैठा है। वह मनुष्य का बनाया हुआ मन्दिर में नहीं पर स्वर्ग का मन्दिर में है। मन्दिर के विरूद्ध बोलने से उन्हें ऐसा गुस्सा लगता था जैसा ईश्वर के विरूद्ध बोलने से। स्तिफनुस की आत्मा ने उन्हें स्वर्ग की घुड़की। सुनाई और उनको दुष्ट और कठोर दिलवाला ठहराया। उसने कहा - 'तुमलोग हमेशा पवित्रात्मा का विरोध करते हो। वे बाहरी रीति-विधियों को मानते हैं जब कि उनके दिल बुराई से भरे हैं उनमें विष है। स्तिफनुस ने उनके दुष्ट पिताओं का जिक्र कर कहा कि उन्होंने नबियों का घात किया और तुम लोगों ने भी एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या की है। GCH 61.2

प्रधान याजक और शासक उस पर टूट पड़े जैसे ही उसने कड़वी सच्चाई को प्रगट किया। स्वर्ग से उसके ऊपर ज्योति चमकी। जब वह स्वर्ग की ओर ताक रहा था तो ईश्वर की महिमा की रोशनी उस पर पड़ी और उसका चेहरा चमक उठा। स्वर्गदूतगण उस के ऊपर उड़ रहे थे। वह जोर से बोल उठा। मैं स्वर्ग को खुला हुआ देख रहा हूँ और यीशु को पिता की दाहिनी ओर बैठे देख रहा हूँ। लोग उसकी बात सुनने से इन्कार करने लगे। अपने कानों को बन्द कर दिये। एक साथ उस पर झपट पड़े और नगर से बाहर घसीट कर ले गये। उसको पत्थरवाह करने लगे। स्तिफनुस घुटना टेक कर उनके लिये प्रार्थना करने लगा - 'हे प्रभु इनके पापों का लेखा मत ले यानी पाप क्षमा कर दे।' GCH 62.1

मैंने देखा कि स्तिफलुस ईश्वर का एक महान आदमी था विशेष कर मण्डली स्थापित करने के काम में। उसके पत्थरवाह कर मारे जाने के बाद चेले एक बहुत बड़ा घाटा समझेंगे इस बात को सोच कर शैतान कुछ समय के लिये बहुत खुश हुआ। शैतान की विजय थोड़ी देर के लिए थी। क्योंकि वहाँ खड़े हुए लोगों के बीच में से ईश्वर एक जन को चुन लेगा जो यीशु की गवाही के लिये बड़ा काम करेगा। यद्यपि उसने स्तिफनुस को मार डालने के लिए एक भी पत्थर नहीं उठाया लेकिन मार डालने के लिए राजी था। साऊल ईश्वर की मण्डली को सताने में बहुत जोश दिखा रहा था। क्योंकि वह लोगों को उनके घरों में खोज-खोज कर निकालता और जो लोग कत्ल करते थे उन्हें सौंपता था। शैतान को बहुत ही सफल रूप से व्यवहार कर रहा था। पर ईश्वर ने शैतान की इस शक्ति का हस्तक्षेप कर जिन लोगों को कैदी बना रहे थे उन्हें छुड़ाता था। GCH 62.2

साऊल (पौलुस) एक शिक्षित व्यक्ति था। शैतान उसे अपना काम खूब अच्छी तरह से करवा रहा था। जो यीशु पर विश्वास कर उसका प्रचार करते थे उन्हें पकड़वा कर सजा दिलाता था। परन्तु यीशु ने भी उसे चुनकर अपने नाम की गवाही देने का, चेलों को मजबूत करने का और स्तिफनुस की जगह लेने के लिए चुन लिया। साऊल को यहूदी लोग बहुत प्रशंसा करते थे। उसका जोश, बुद्धि और काम से जहाँ यहूदी और फारसी खुश थे तो चेले डर से काँपते थे। GCH 63.1

आधारित वचन प्रेरित क्रिया ६ और ७ अध्याय। GCH 63.2

पाठ १४ - साऊल का मन परिवर्तन

साऊल क्रिश्चियन स्त्री या पुरूषों को पकड़ कर यरूशेलम लाने का एक अधिकार पत्र प्राप्त कर दामिशक जा रहा था। उस वक्त बुरे दूत भी उसकी प्रशंसा कर रहे थे। जब वह रास्ते में जा रहा था तो अचानक बिजली चमकने जैसी रोशनी उस पर पड़ी। बुरे दूत भाग गए। साऊल जमीन पर गिर पड़ा। उसे ऐसी आवाज सुनाई ही - “साऊल, साऊल, क्यों मुझे सता रहे हो ?” तब उसने पूछा - ‘हे प्रभु तू कौन है ?’ नैं वही यीशु हूँ जिसे तुम सता रहे हो। पैरों पर लात मारना तेरे लिए कठिन है। साऊल डर से कहने लगा - ‘हे प्रभु, तू मुझ से क्या करवाना चाहता है ? तू उठ कर नगर में चला जा वहीं तुझे बताया जायेगा कि क्या करना होगा। GCH 64.1

जो लोग उसके साथ थे वे सुनकर अवाक थे, कोई नहीं दिखाई दे रहा था। रोशनी के हटते ही साऊल उठा तो किसी को न देख पाया। स्वर्ग की महिमा की चमक से उसकी आँखों की रोशनी धुंध हो गई थीं। उसका हाथ पकड़ कर उसे दामिशक नगर ले गया, जहाँ वह तीन दिनों तक अंधा ही रहा और न कुछ खाया न पिया। स्वर्गदूत हनन्याह के पास आया जिसे साऊल पकड़ कर कैद करना चाहता था। उसने उसे कहा सीधी नामक गली में यहूदा के घर में जाओ। वहाँ पैलुस (साऊल) को तुम चंगा करो। वह पश्चाताप कर प्रार्थना कर रहा है। उसे दर्शन दिया गया है कि

हनन्याह नामक मनुष्य आकर उसके सिर पर हाथ रख कर देखने की शक्ति प्रदान कर रहा है। GCH 64.2

वह उसके पास जाने से डरता था, क्योंकि उसके विषय यह सुना था कि वह क्रिश्चियनों को पकड़ कर कैदी बना रहा है। पर प्रभु ने उसे कहा कि तुम जाकर चंगा करो। वह तो अन्यजातियों, राजाओं और इस्त्राएलियों के बीच मेरा नाम सुनाने के लिये नियुक्त किया हुआ व्यक्ति है। मैंने उसे, मेरे नाम के कारण बहुत दुःख उठाने का भी दर्शन दिया हैं। हनन्याह प्रभु के मार्ग दर्शन का अनुसरण कर साऊल के पास पहुँच कर उससे कहने लगा - भाई साऊल, प्रभु ने, जिसे अपने दमिशक के रास्ते में पाया था वही भेजा है कि मैं तुझे अच्छा करू और आप पवित्रात्मा से परिपूर्ण होंगे।। GCH 65.1

साऊल के सिर पर हाथ रखते ही वह देखने लगा और उठ खड़ा हुआ। इसके बाद बपतिस्मा भी लिया। उसने यहूदियों की महासभा में प्रचार किया की ‘यीशु’ ही ईश्वर का पुत्र है। जितनों ने उसे यह कहते सुना वे आश्चर्य कर कहने लगे - क्या वही साऊल नहीं है। जो यीशु का नाम लेते थे, उन्हें पकड़ कर बन्दीगृह में डालता था ? अभी यहाँ इसलिये आ रहा था कि यीशु के चेलों को पकड़ कर यरूशलेम ले जाकर प्रधानों और याजकों को सौंपे । साऊल तो समर्थवान होता गया और यहूदियों को हड़काता रहा। वे सब संकट में पड़ गए। साऊल ने पवित्रात्मा से साहस पाकर अपना अनुभव उन्हें बताया। सब को मालूम था कि साऊल पहिले यीशु का विरोधी था। जो यीशु के नाम की प्रतीति करते थे उन्हें वह बहुत उत्साह के साथ खोज कर मार डालने के लिये याजकों को देता था। GCH 65.2

उसका आश्चर्यजनक मन बदलाहट से बहुत लोग विश्वास करने लगे कि सचमुच यीशु ही ईश्वर का बेटा है। साऊल ने किस तरह से दमिशक के रास्ते में यीशु से दर्शन में मिला और किस-किस घटनाओं से गुजरा उनकी चर्चा कर लोगों को सुनाया। साऊल बहुत प्रभावशाली ढंग से यीशु की गवाही देने लगा। वह धर्मशास्त्र को जानता था और जब उसका मन बदल गया तो स्वर्गीय ज्योति, भविष्यबानी सम्बन्धी मिली, जिसमें यीशु का जन्म होना था। अब उसे सच्चाई का स्पष्ट मालूम हो गया और बड़े साहस के साथ प्रचार करने लगा और धर्मशास्त्र के विरूद्ध जो गलती करते थे उन्हें सुधारता था। ईश्वर की आत्मा के द्वारा वह अपने श्रोताओं को बहुत ही प्रभावी ढंग से भविष्यवाणी की बातों को समझा कर, यीशु का आगमन, दुःख उठाना, जी उठना, स्वर्ग जाना को भविष्यवाणी का पूरा होना बताया। GCH 65.3

आधारित वचन प्रेरित क्रिया ९ अध्याय।

अध्याय 14 - पाठ १५ - यहूदियों ने पौलुस को मार डालने का निर्णय किया

प्रधान पुरोहित और शासकों ने जब देखा कि पौलुस के अनुभव की कहानी का प्रभाव लोगों पर पड़ने लगा तो वे जलन से उसे मार डालने का विचार किया। उन्होंने देखा कि वह साहस के साथ प्रचार कर बहुत से आश्चर्य कर्म भी कर रहा है और बहुत से लोग सुन कर परम्परा को छोड़ रहे हैं। उन्हें (यहूदियों को) यीशु का हत्यारा ठहराया जा रहा है। उनका क्रोध I भड़क उठा। वे कौंसिल में विचार करने लगे कि उसको क्या करना चाहिए जिससे लोगों के सुनने की उत्तेजना बन्द हो। उन्हें एक ही उपाय सूझा, वह तो था, उसे मार डाला जाय। उनकी इच्छा को ईश्वर जानता था। इसलिये उसने दूतों को उसकी रक्षा करने भेजा ताकि पौलुस यीशु के नाम से दुःख उठाते हुए अपना काम पूरा करे। GCH 67.1

पौलुस को सूचना दी गई कि लोग उसको मार डालना चाहते हैं। शैतान ने अविश्वासी यहूदियों को चलाया कि जब पौलुस दमिशक नगर से निकलेगा तो उसी समय उसे कत्ल करेंगे, यह सोचकर वे दिन रात नगर के फाटक का पहरा देते थे। परन्तु चेलों ने पौलुस को रात के समय टोकरी में बैठा कर रस्सी के सहारे दीवाल के किनारे से बाहर उतार दिया। उसे कत्ल करने में असफल होने पर वे लज्जित हुए और शैतान का काम विफल हुआ। पौलुस चेलों से मिलने के लिए यरूशेलम गया पर चेले उससे डर रहे थे। वे विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि अब यीशु का चेला बना है। दमिशक में यहूदी लोग उसे मार डालने की खोज में थे, इसलिए उसके भाई यरूशेलम में मिलना नहीं चाह रहे थे, परन्तु बरनाबस ने उसे चेलों के पास लाया और बताया कि कैसे उसने यीशु को पाया। इसके बाद वह यीशु के नाम का प्रचार वहाँ बहुत साहस के साथ किया। GCH 67.2

शैतान पौलुस को मार डालने के लिये यहूदियों को भड़का रहा था तब यीशु ने पौलुस को वहाँ से चले जाने को कहा। जब वह दूसरे नगरों में जाकर प्रचार करने और आश्चर्य कर्म करने लगा तो बहुत से लोग विश्वास कर यीशु के चेले बन गए। पौलुस ने जब एक बहुत वर्षों का लंगड़ा को अच्छा किया तो लोग उसे देवता समझ कर घुटना टेक कर दण्डवत करने लगे तो उसने मना कर कहा कि ऐसा मत करो क्यों कि हम भी एक मनुष्य हैं। तुम्हें तो उस ईश्वर की उपासना करनी है जिसने स्वर्ग-पृथ्वी और समुद्र तथा सब जीव-जन्तुओं को बनाया है। पौलुस ने लोगों के सामने ईश्वर की महिमा की पर उन्हें उसकी झुककर प्रणाम करने से रोक न सका। विश्वास के द्वारा सच्चा ईश्वर का ज्ञान लोगों के मनों में भर कर उसकी उपासना कर उसका आदर करना सिखाया गया। जब पौलुस उनको विश्वास दिला कर यीशु को मानने कहता था तो शैतान दूसरे शहर के यहूदियों को भड़का कर उसके पीछे-पीछे जाकर उसके कामों में बाधा डालने कहा। यहूदियों ने मूर्तिपूजकों को अपनी ओर मिला कर झूठी रिपोर्ट पौलुस के विरूद्ध दी। कुछ देर पहले ये ही लोग पौलुस के अच्छे कामों की बड़ाई कर रहे थे पर अब वे बदल गए और नगर से बाहर लेकर

पत्थर से मारने लगे। उसे मरा हुआ समझ कर चले गये। पर कुछ चेले उसके बगल में खड़े होकर विलाप कर रहे थे। इतने में पौलुस उठ बैठा तो चेले बहुत खुश हुए। इसके बाद वे नगर को चले गए। GCH 68.1

जब पौलुस प्रचार कर रहा था तो एक औरत जिसमें आश्चर्यकर्म करने की आत्मा थी, वह पौलुस के पीछे-पीछे चलकर कह रही थी कि ये ईश्वर के दास हैं, ये हमें उद्धार पाने की राह दिखाते हैं। वह उनके साथ बहुत दिनों तक थी। पौलुस को इस बात की नाराजगी थी क्यों कि उसके चिल्लाने से लोगों का मन सच्चाई की ओर से भटक रहे थे। इस प्रकार शैतान उस स्त्री के द्वारा लोगों को भ्रम में डालने का काम कर चेलों के काम को निस्प्रभाव कर रहा था। पौतुस तंग आ गया। उसने दुष्टात्मा को डाँट कर स्त्री से निकल जाने कहा। दुष्टात्मा निकल गई। GCH 68.2

चेलों के द्वारा स्त्री से दुष्टात्मा निकाले जाने पर वह अब आश्चर्य का काम न कर यीशु की शिष्या बन गई। इससे मालिक की आमदनी घटी। तो मालिक को शैतान ने उभाड़ा कि झूठा दोष लगा कर उन्हें कैदखाने में डालें । पौलुस और सिलास दोनों को बाजार में पकड़ कर प्रधानों और मजिस्ट्रेटों के पास लाए। उन पर दोष लगाया गया कि ये लोग नगर में गड़बड़ी फैला रहे हैं। जब बड़ी भीड़ उनके विरूद्ध उठी तो मजिस्ट्रेट ने उनके कपड़े फाड़ कर पीटने को कहा। बहुत मार मारने के बाद उन्हें जेल में डाला गया। जेलर को ठीक से देखने का आदेश दिया गया। कड़ा आदेश पाकर उसने उन्हें जेल घर के सब से अन्दर का कमरा में रखा और उनके पाँवों में भी बेड़ियाँ डाल दी। स्वर्गदूत भीतर भी उनके साथ गए। ईश्वर की शक्ति ने यहाँ भी एक आश्चर्यकर्म कर उसकी महिमा बढ़ाई। स्वर्गदूत भीतर जा कर, लोहे का दरवाजा खोलकर, उनके पाँवों की बेड़ियाँ भी खोल कर बाहर निकाल लाये। आधी रात को जब पौलुस और सिलास गीत गा रहे थे तो अचानक भूकम्प हुआ और जेल घर का दरवाजा खुल गया। मैंने देखा कि उनके पाँवों की बेड़ियाँ खुल गईं। रात को जब जेल का मालिक ने देखा कि दरवाजा खुला है और कैदी नहीं है तो बहुत डर गया। वो सोचने लगा कि अब उसे मृत्युदण्ड मिलेगा। वह आत्महत्या करने के लिए तलवार म्यान से निकाल रहा था तो पौलुस चिल्ला कर कहने लगा - ‘अपने को कुछ मत कर, क्योंकि हम यहीं हैं, नहीं भागे हैं।’ ईश्वर की आत्मा ने उसे विश्वास दिलाया। उसने बत्ती बँगा कर देखा कि पौलुस और सिलास वहाँ मौजुद हैं। उनके पाँवों पर गिर कर कहने लगा कि हे! महाशय, बचने के लिये मैं क्या करू ? उन्होंने उसे सलाह दी कि तू यीशु पर विश्वास कर तो तू और तेरा घर के सब लोग बचेंगे। तब जेलर ने अपने घर के सब को जमा किया। पौलुस ने उन्हें वचन सुनाया। जेलर ने उनसे सहानुभूति प्रकट कर उनके घावों में मरहम-पट्टी बाँधी। उन्हें खाना खिलाया। बपतिस्मा लेकर उनके साथ आनन्द मनाया। उसके घर के सब लोग यीशु पर विश्वास करने लगे। GCH 69.1

ईश्वर की शक्ति का यह गौरवमय कहानी और जेलर और उसके घराने के लोगों का बपतिस्मा लेने की कहानी चारों ओर फैल गई। जब शासकों ने सुना तो ये डर गये। उन्होंने जेलर को कहला

भेजा कि उन्हें मुक्त कर दें। पौलुस जेल से चुपचाप जाना पसन्द नहीं कर रहा था। उसने उन पर दोष लगाया कि मैं एक रोमन नागरिक हूँ और बिना दोष का मुझ पर मार पड़ी है यह रोमन नागरिक होने के नाते अनुचित काम हुआ है। अभी मुझे चुपचाप भेजना चाहते हैं, नहीं, ऐसा नहीं होगा। उन्हें खुद आकर हमें जेल से ले जाना होगा। पौलुस और सिलास ईश्वर की महिमा को छिपाना नहीं चाहते थे। जब मजिस्ट्रेट ने सुना कि वे रोमन नागरिक हैं तो वह भी डर गया। वे वहाँ आकर उनसे अर्जी करने लगे कि वे नगर छोड़कर चले जाएँ। GCH 70.1

आधारित वचन प्रेरित क्रिया १३ और १४

अध्याय 15 - पाठ १६ - पौलुस यरूशलेम जाता है

यीशु को ग्रहण करने के कुछ दिनों बाद पौलुस यरूशेलम जाकर यीशु और उसके अनुग्रह के विषय प्रचार करने लगा। यीशु का चेला बनने के कारण याजक और पुरोहित लोग उससे गुस्सा हो रहे थे और उसकी जान लेना चाहते थे। यीशु ने उसकी जान बचाने के मतलब से दिखाई देकर कहा कि तू यहाँ से भाग जा क्यों कि वे मुझे यहाँ ग्रहण नहीं करेंगे। पौलस ने यीशु से आग्रह किया कि हे! प्रभु, मैं तो तेरे लोगों को पकड़ कर कैद करता और पीटता भी था। और तेरा मार्तिर दास स्तिफनुस का पत्थरवाह किया जा रहा था तो वहाँ खड़ा होकर उसके वस्त्रों की रखवाली कर रहा था। पौलुस ने सोचा कि यरूशलेम के यहूदी उसका सामना नहीं कर सकेंगे। उन्हें मानना पड़ेगा कि पौलुस की बदलाहट जरूर ईश्वर की ओर से हुई है। पर यीशु ने कहा - 'तू यहाँ से चला जा, मैं तुझे अन्य जातियों के पास भेजता हूँ।' यरूशलेम से दूर रह कर पौलुस ने भिन्न-भिन्न स्थानों के लोंगो के लिये अपने अनुभव का शक्तिशाली चिट्टियाँ लिख कर भेजी। किन्तु कुछ लोगों ने इन चिट्टियों का प्रभाव को बिगाड़ने की चेष्टा की। उनको मानना पड़ा कि उसकी चिट्टियाँ प्रभावोत्पादक हैं परन्तु अनुपस्थित रहने के कारण उसका उपदेश का कोई अर्थ नहीं रहता या ग्रहण करने योग्य नहीं ठहरता। GCH 71.1

मैंने देखा कि पौलुस एक विद्वान था और उसका ज्ञान और अच्छा चरित्र से लोग मोहित हो जाते थे। विद्वान लोग उनसे प्रसन्न होकर उसकी बातों पर विश्वास कर यीशु को ग्रहण करते थे। जब वह राजाओं और बड़ी भीड़ के सामने चतुर वक्तृत्व से पेश आता था तो सब लोग मुग्ध होते थे। पर इससे याजक और प्राचीन लोग तो गुस्सा होते थे। पौलुस तर्कवितर्क की गहराई तक जाकर अपने साथ लोगों को विचारों की उड़ान में आसमान तक उठा ले जाता और ईश्वर का अनुग्रह का अमृत जल पिलाता तथा ख्रीस्त का अद्‌भुत प्रेम से सराबोर कर देता था। इसके बाद वह सर्वसाधारण की समझ की बोली में समझा कर अपने अनुभव को जोरदार ढंग से पेश करता था। इस प्रकार लोंगो के मन में एक गहरी रूचि उत्पन्न कर यीशु को ग्रहण करने के लिए ललकारता था। GCH 71.2

प्रभु ने पौलुस को दर्शन देकर कहा कि तुम्हें यरूशलेम जाना है वहाँ तुम्हें मेरे नाम के कारण बाँधेगे और दुःख देंगे। पौलुस यद्यपि बहुत दिनों से कैदी था फिर भी प्रभु उसके द्वारा विशेष काम करवाना चाहता था। पौलुस को कैद करने का अर्थ था सुसमाचार का फैलना। पौलुस, जब एक नगर से दूसरे नगर जा-जा कर अपनी बदलाहट जीवन का अनुभव राजाओं और गवर्नरों को बताता था तो वे यीशु के विषय में जानते थे। हजारों की संख्या में विश्वास कर उसके नाम से आनन्द करते थे। मैंने देखा कि पौलुस की जल-यात्रा से भी बहुत से नाविकों और जहाज के सवारियों को भी यीशु के विषय जानने का मौका मिला। क्योंकि वह बहुत से अद्‌भुत काम भी करते थे। राजा और गवर्नर लोग उसकी तार्किक बुद्धि को देखकर चकित हो जाते थे। बड़े जोश और पवित्रात्मा

की शक्ति पाकर प्रचार करता था और अपना मन-परिर्वतन की अद्भुत घटनाओं का जिक्र करता था। इससे लोगों के मन में यीशु ही ईश्वर का बेटा होने का विश्वास जागता था। कुछ लोग उसकी सुन कर ताज्जुब हो जाते थे। हेरोद ने कह डाला कि तुमने करीब-करीब मुझे मसीही बना लिया। कुछ लोग कहने लगे कि जो सुने हैं। उसके विषय बाद में सोचेगें। शैतान ने इसका लाभ उठाया। बाद में उनके मनों को कठोर कर दिया और वे यीशु को ग्रहण करने से इन्कार कर दिये। GCH 72.1

मैंने देखा कि पहले तो शैतान ने लोगों की आँख को अंधा कर दिया जिससे वे न देख सकें और दूसरी बात यह कि उन्हें डाह से भटका दिया ताकि उसका काम पर विश्वास न करें। वह चेलों में से एक के मन में प्रवेश कर शत्रुओं के हाथ कर दिया जिससे वे यीशु को क्रूस पर चढ़ावें । यीशु के जी उठने पर उसने यहूदियों को एक झूठ से दूसरा झूठ बोलवाने में सफल हुआ। विशेष कर रोमन सिपाहियों से झूठी गवाही दिलवाया। यीशु का जी उठने का प्रमाण दुगुना हो गया क्योंकि जो उसके साथ जी उठे थे उन्होंने गवाही दी। यीशु अपने चेलों को दिखाई दिया। एक बार पाँच सौ लोगों को भी उनके साथ दिखाई दिया जिन्हें उसने जिलाया था। वे उसकी गवाही दे रहे थे। GCH 73.1

शैतान ने यहूदियों को यीशु को ईश्वर का बेटा मानने से इन्कार करा कर ईश्वर का विरोध किया और यीशु को क्रूस पर घात कर उनका हाथ लहूलुहान करवा दिया। यीशु को ईश्वर का बेटा होने का जितना भी पक्का प्रमाण क्यो न दिया गया हो पर उन्होंने उसे इन्कार कर हत्या भी कर डाला। उनकी एक ही आशा और भरोसा शैतान जैसा ही है कि वे यीशु के विरूद्ध काम करे। चेलों को सता कर उन्हें घात कर उन्होंने उपद्रव करना शुरू किया। यीशु ख्रीस्त, जिसे उन्होंने क्रूस पर चढ़ाया था उसके विषय बोलने से उनके कानों में जूं तक नहीं रेंगती थी। जैसे स्तिफनुस के साथ हुआ, पवित्रात्मा ने उसके द्वारा यीशु को ईश्वर का पुत्र होने का प्रमाण दिया पर वे सुनने से कान बन्द करते थे जिससे वे उस पर विश्वास न करे। जब स्तिफनुस ईश्वर की महिमा से घिर गया था पर उन्होंने उसे पत्थरवाह कर दिया। शैतान ने यीशु के हत्यारों को अपने हाथ में जकड़ कर रखा था। बुरे काम से शैतान की प्रजा काँप गई। उन्हीं के द्वारा खीस्त के विश्वासियों को तंग कर सताने लगा। उसने यहूदियों के द्वारा अन्य जातियों को यीशु और उसके चेलों के विरूद्ध भड़काया। परन्तु ईश्वर के स्वर्गदूतों को भेज कर चेलों के प्रचार का काम को मजबूत किया। चेलों ने जो देखा और सुना तथा उसकी गवाही देने में डरकर अपनी जाने न्योछावर कर दी। GCH 73.2

शैतान को यह देखकर खुशी हुई कि यहूदी अब तक उसके जाल में फंसे हुए हैं। वे अभी तक बेकार की उपासना विधि जैसे बलिदान चढ़ाना और परम्परा का नियम मानना, पालन करते हैं। जब यीशु ने क्रूस से चिल्ला कर कहा - 'पूरा हुआ' तो मन्दिर का पर्दा फट कर दो भाग हो गया। उसका मतलब यह था कि याजकों और पुरोहितों का बलिदान को मन्दिर पर ग्रहण नहीं किया जायेगा और न परम्परा से दी गई मूसा की विधियों को। पर्दा फट कर दो भाग होने का

मतलब यह भी था कि यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की खाई नहीं रहेगी। यीशु ने दोनों के लिये अपने प्राण बलिदान कर दिए। दोनों को विश्वास करना होगा कि यीशु ही उनका पाप-बलिदान और जगत का उद्धारकर्ता है। GCH 74.1

जब यीशु क्रूस पर था, उस वक्त सिपाहियों ने उसका पंजर को बच्छं से बेधा तो खून और पानी बह निकले। खून और पानी दो धाराओं में बहने लगा। खून उनलोगों का पाप को धोने के लिए था जो यीशु पर विश्वास करते हैं और पानी जीवन-जल का प्रतीक था जिसे यीशु अपने विश्वासियों को देगा। GCH 74.2

प्रेरित क्रिया २४-२६ GCH 74.3

अध्याय 16 - पाठ १७ - महान धर्मपतन

मुझे दर्शन में दिखाया गया कि एक समय में हिन्दू मूर्तिपूजक क्रिश्चियनों को सताते थे और मृत्युदण्ड भी देते थे। खून की नदियाँ बहती थीं। बड़े लोग, विद्वान और सर्वसाधारण लोग सब बिना भेद-भाव और दया-माया से मारे जाते थे। धनी परिवार के लोगों को नया धर्म नहीं मानने के कारण दद्धि बनाये जाते थे। इतना सताहट और कष्ट झेलने के बावजूद भी वे क्रिश्चियन लोग अपने धर्म से टस से मस नहीं हुए। उन्होंने अपना धर्म को शुद्ध रखा। मैंने देख कि शैतान परमेश्वर के लोगों को दुःख और कष्ट देने में विजयी हुआ और खुशी मनाने लगा। ईश्वर ने विश्वासी मर्तिरों को बहुत हमदर्दी से देखा और उस डरावना समय में जो जीते थे उनको कृपा की दृष्टि से देखा, क्योंकि वे उसके नाम के लिये दुःख झेलना पसन्द कर रहे थे। हर दुःख और कष्ट जो उन्हें सहना पड़ा तो उनके लिये स्वर्ग में इनाम की भी वृद्धि हुई। सन्तों के दुःख सहने से शैतान खुश तो था पर उसे सन्तोष नहीं मिला। वह मन और शरीर दोनों को वश में करना चाहता था। जिन क्रिश्चियनों को शारीरिक द:ख सहना पडा वे और भी अधिक यीश के नजदीक आये। उन्होंने दूसरों को भी उस रास्ते में चलने की प्रेरणा दी। मरने से ज्यादा डर यीशु की आज्ञा तोड़ने में था।

शैतान ने उन्हें ईश्वर को नाखुश करने को कहा। यदि वे ऐसा करते तो अपनी शक्ति, दृढ़ता और सुरक्षा को खो देते। यद्यपि हजारों को कत्ल कर दिये जाते थे फिर भी उनके स्थान लेने के लिये हजारों की संख्या में आ जाते थे। यद्यपि वे सताहट और मृत्युदण्ड पा रहे थे तो भी यीशु के पीछे चलना बन्द नहीं करते थे और उनकी संख्या बढ़ती जाती थी, जहाँ शैतान की घट रही थी। इसे देख कर शैतान ईश्वर का राज्य का विरोध करने के लिये और कारगर उपाय सोचने लगा। उसने हिन्दू राजाओं को क्रिश्चियन धर्म ग्रहण करने के लिये तैयार किया। बिना मन उन्होंने यीशु का क्रूसघात, पुनरुत्थान पर विश्वास कर क्रिश्चियनों के साथ मिलने का बहाना किया। ईश्वर की मण्डली के लिए यह क्या ही भयंकर दिन हुआ। यह तो मानसिक वेदना थी। कुछ लोग सोचने लगे कि यदि वे आकर मूर्तिपूजकों से मिल जाएँ, जो कुछ अंश में क्रिश्चियन विश्वास को ग्रहण कर चुके हैं। तो वे सचमुच मन बदले हुए लोग होंगे। शैतान बाईबल की सिद्धातों को बर्बाद करने चाह रहा था।

अन्त में मैंने देखा कि क्रिश्चियन धर्म का स्तर नीचे गिराया गया और हिन्दू लोग इसको ग्रहण करने लगे। वे तो मूर्तिपूजक थे और जब क्रिश्चियन हो गये तो मूर्तिपूजा करने की रीति साथ में ले आये। उन्होंने बड़ी सरलता से क्रिश्चियनों को अपनी मतलब को सिद्ध करने के लिये सन्तों की मूर्ति, यीशु की, और उसकी माता मरियम की मूर्ति पूजा करने को आरम्भ कर दिया। धीरे-धीरे क्रिश्चियन लोग उनसे मिल गए। ईसाई धर्म भ्रष्ट हो गया। मण्डली ने सभ्यता और शुद्धता खो दी। कुछ लोग उनसे मिलना इन्कार कर इसकी शुद्धता कायम कर ईश्वर ही की उपासना करने लगे। उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की कोई भी मूर्ति की उपासना नहीं की। पतित मण्डली के सदस्यों को

देख कर शैतान खुशी मना रहा था। उसने इनको उन सच्चे धर्मपालन करने वालों के विरूद्ध भड़का कर कहा कि इन्हें भी उनकी रीति-विधि अनुसार मूर्ति की पूजा करनी है या तो मृत्यु दण्ड सहने के लिये तैयार होना है। सताहट की अग्नि तेज कर दी गई और ख्रीस्त की मण्डली को सताना आरम्भ कर दिया गया। लाखों क्रिश्चियनों को बेरहम से मौत के घाट उतारा गया। GCH 75.1

मेरे सामने इस तरह से दर्शाया गया। बहुत अधिक संख्या में हिन्दू मूर्तिपूजक लोग काला झंडा लेकर चल रहे थे जिसमें सूर्य, चाँद और तारों की छाप थी। इस दल के लोग बहुत भंयकर और गुस्से वाले जान पड़ते थे। मुझे एक दूसरा दल को दिखाया गया। जिनके पास श्वेत झंडे थे उसमें प्रभु के लिये शुद्धता और पवित्रता लिखा हुआ था। उनके चेहरे से दृढ़ता और बिना कुड़्कुड़ाए कष्ट सहने की झलक दिखाई दे रही थी। मैंने देखा कि हिन्दू मूर्तिपूजक वहाँ पहुँच कर भारी संख्या में मार डाले। क्रिश्चियन लोगों को बर्बाद कर दिया गया, परन्तु जो बचे थे वे एक साथ मिल कर आगे बढ़ते हुए खीस्त के झंडे तले आ गये। जब कुछ लोग मारे जाते थे तो उनकी जगह में सैकड़ों लोग उठ कर ख्रीस्त का झंडा को ऊँचा उठाते थे। GCH 77.1

मैंने देखा कि मूर्तिपूजकों का दल आपस में सलाह कर रहे थे। उन्होंने मसीहियों को अपनी बात मनवाने में सफलता नहीं पायीं इसलिये दूसरा उपाय सोचने लगे। मैंने देखा कि उन्होंने अपना झंडा को झुका कर सच्चे मसीहियों के पास आकर एक प्रस्ताव रखा। पहले तो उनका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया। इसके बाद फिर मैंने देखा कि क्रिश्चियनों का दल आपस में सलाह करने लगे। कुछ लोगों ने कहा कि वे अपना झंडा को झुकाएँ और उनका प्रस्ताव को मान लें और अपने प्राणों को बचावें । अन्त में उन्होंने अपना झंडा को उनके बीच ऊपर उठाने में सफलता पाई। परन्तु कुछ लोगों ने इसे स्वीकार न कर दृढ़ता से यीशु की पवित्रता का झंडा ऊपर उठाये रखा। मैंने यह भी देखा कि बहुत सी क्रिश्चियन-कम्पनी ने अपना झंडा नीचे कर मूर्तिपूजकों को योग दिया। इस पर सच्चाई में स्थिर रहने वालों ने दृढ़ता से झंडा पकड़ कर उसे ऊँचा उठाये रखा। मैंने देखा कि सत्य का झंडा के नीचे रहना छोड़ कर लोग लगातार भागे जा रहे थे और मूर्तिपूजकों का दल में आकर काला झंडा के नीचे आ रहे थे। उन्होंने श्वेत झंडा के नीचे रहने वालों को मार डाला फिर भी कुछ लोगों ने सादा झंडा को ऊपर उठाये रखा और दूसरे लोग भी मदद के लिये चारो तरफ से आ गये। GCH 77.2

यहूदियों ने पहले हिन्दुओं को यीशु के विरूद्ध उसकाया था। वे भी इस दोष से वंचित न थे। न्यायालय में जब पिलातुस ने यीशु को दोष लगाने में हिचकिचाया तो यहूदियों ने गुस्सा से चिल्लाया - ‘उसका खून हमारे ऊपर और हमारे बच्चों पर लगेगा।’ यहूदी जातियों को इस अभिशाप की पीड़ा बाद में उठानी पड़ी। गैर मसीही लोग उनके दुश्मन बन गए। जो मसीही लोग यीशु के क्रूसघात पर ठोंके जाने चाहते थे कि यहदियों पर ईश्वर की ओर से भारी से भारी ताड़ना आवे।

बहुत से अविश्वासी यहूदी मार डाले गये और कुछ इधर-उधर दूसरे देशों में तितर-बितर हो गए। उन्हें सब प्रकार की सजाएँ दी गई। GCH 78.1

यीशु का लोहू और जिन चेलों का खून उन्होंने बहाया था, उसका भंयकर प्रतिफल उन्हें मिला। ईश्वर का श्राप उन पर पड़ा। वे ईसाई और हिन्दुओं के द्वारा घृणित मजाक का कारण बन गए। वे दूसरों से अलग हो गये, नीच और घृणा का पात्र बन गए मानों वे कैन के वंशज हैं। फिर भी मैंने देखा कि ईश्वर ने इन्हें विचित्र ढंग से बचा के रखा। उन्हें जगत में चारों ओर फैला दिया। उन्हें ईश्वर की शापित जाति के रूप में देखा गया। मैंने देखा कि ईश्वर ने यहूदियों को एक राष्ट्र के रूप में संगठित होने से छोड़ दिया था। फिर भी इनमें कुछ लोगों को उसने दिल का काला पर्दा फाड़ कर दूरदर्शी होने का मौका दिया। कुछ लोगों को अभी देख कर समझना बाकी है कि उनके विषय जो भविष्यवाणी लिखी गई थी सो पूरी हुई। वे अभी यीशु को जगत का उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करेगें। वे देख सकेंगे कि यीशु को ना करने और क्रूसघात करने का क्या बुरा नतीजा मिला। यहाँ-वहाँ एक दो यहूदी लोग मन बदलेंगे परन्तु एक राष्ट्र के रूप में तो सदा के लिए ईश्वर से त्याग दिए गए हैं। GCH 78.2

इसका विस्तृत अध्ययन के लिए धर्मसुधार और खोज-पड़ताल अध्याय, शब्दकोष में देखें। GCH 79.1

अध्याय 17 - पाठ १८ - पाप का रहस्य

हमेशा से शैतान का यह प्रयास रहा है कि मनुष्यों का मन को यीशु की ओर से हटा कर मनुष्य की ओर खींच कर व्यक्तिगत जिम्मेवारी से वंचित रखे। जब यीशु की परीक्षा कर रहा था तो शैतान यहाँ हार गया। जब पतित मनुष्य के पास आया तो वहाँ उसे सफलता मिली। क्रिश्चियनों का सिद्धान्त को बिगाड़ दिया गया। पोप और उसके पुरोहितों ने लोगों के पाप क्षमा करने का अधिकार ले लिया और यीशु के पास जाने के बदले उनके पास जाने लगे। सच्चाई को छिपाने के लिये जिस के द्वारा वे दोषी ठहरते बाईबिल को पढ़ने नहीं दिए। GCH 80.1

लोग बुरी तरह से ट्णे गए। उन्हें सिखाया गया कि पोप और उस के पादरी स्त्रीस्त के उत्तराधिकारी हैं जब कि असल में वे शैतान के हैं। तब वे उनके सामने झुकते हैं तो वे शैतान की उपासना करते हैं। जब लोग बाईबल माँगने लगे तो पादरियों ने उन्हें बताया कि उनके लिये अपने से बाईबल पढ़ना खतरा है। उनके हाथ में बाईबल देने से पादरियों को दोष मिलेगा। इन ट्गों के ऊपर भरोसा करने के लिये सिखाया गया और उनके मुँह से जो वचन निकले उसे ईश्वर के मुंह से निकला हुआ समझने की सलाह दी गई। लोंगों के मन को सिर्फ ईश्वर वश में कर सकता है, उसे उन लोगों ने कर लिया। यदि कोई अपने ही विश्वास के अनुसार यदि चलना चाहे तो उन पर वैसा ही घृणा की दृष्टि से देखा जायेगा जैसा शैतान और यहूदियों ने यीशु को देखा था और वे उस के खून के प्यासे बने थे। मैंने उस समय को देखा था जिस वक्त शैतान विजयी हुआ था। धर्म की पवित्रता और विशुद्धता रखने के कारण बहुत से मसीही लोग भंयकर रूप से सताये गए थे। GCH 80.2

बाईबिल को घृणा कर इसे संसार से ही उठा फेंकने का विचार था। बाईबिल पढ़नेवालों को मृत्युदण्ड देने की धमकी दी गई थी। इस किताब की प्रति जहाँ भी मिले उसे जलाने का भी आदेश था। परन्तु मैंने देखा कि इस पर ईश्वर की विशेष दृष्टि थी। उसने उसकी रक्षा की। भिन्न-भिन्न समयों में बाईबिल की प्रतियाँ बहुत कम दिखाई देती थीं। फिर भी ईश्वर ने इसे बचा ही लिया। अन्तिम दिनों में यह इतनी ज्यादा मात्रा में छापी गई कि हर व्यक्ति के हाथ में कम से कम एक हो गई। जब बाईबिल की संख्या बहुत कम थी उस वक्त मसीह के कारण सताये जाते थे उनको इससे सान्तवना मिलती थी। इसको बहुत ही श्रद्धा और भक्ति के साथ पढी जाती थी और जिनके पास बाईबिल रहती थी वे अपने को बड़े भाग्यशाली होने का दावा करते थे और बाईबिल को पढ़कर सोचते थे कि मैंने साक्षात् ईश्वर से ही बातें की हैं। बाईबिल पढ़ने से उन्हें ऐसा लगता था मानों यीशु और उसके चेलों से मुलाकात हुई है। परन्तु इस प्रकार का बहुत सा अवसर ने उनके प्राणों की बलि चढ़ा दी है। यदि किसी को बाईबिल पढ़ते देखते तो उन्हें पकड़ कर सिर काटने की जगह या अंधकार जेल में भख से मरने के लिये लाते थे। GCH 81.1

शैतान ने उद्धार की योजना को बिगाड़ने में सफलता पाई। यीशु को क्रूस काठ पर मार डाला गया पर वह तीसरे दिन जी उठ गया। उसने (शैतान) अपने चेलों को बताया था कि क्रूसघात और जी उठना भी उसी के फायदे के लिये होंगे। जो यीशु पर विश्वास करते थे, उन्हें वह विश्वास दिलाना चाहता था कि जैसी व्यवस्था (यहूदियों की बलिदान-प्रथा) चलती थी, वह यीशु के मरने पर बन्द होगी - वैसा ही वह उन्हें यह विश्वास दिलाना चाहता था कि यीशु के मरने पर दस आज्ञा भी उठ गई। GCH 81.2

मैंने देखा कि बहुत लोग शैतान की इस योजना को ग्रहण कर लिये। जब ईश्वर की पवित्र-आज्ञा को पाँवों तले रौंदी गयी तो सारा स्वर्ग क्रोध से भड़क उठा। यीशु और स्वर्ग के सारे दूतगण ईश्वर की व्यवस्था का मर्म जानते थे। उन्हें मालूम था कि ईश्वर अपनी व्यवस्था का एक बिन्दू भी न उठायेगा और न तोड़ फोड़ करेगा। मनुष्य की यह आशाहीन दशा ने स्वर्ग के लोंगो को गहरा शोक में डाल दिया। इस दशा ने या मनुष्य की आज्ञोल्लंघन ने यीशु को क्रूस पर मरने के लिये मजबूर कर दिया। यदि उसकी व्यवस्था बदली जाती तो मनुष्य यीशु के नहीं मरने पर भी बच जाता। यीशु की मृत्यु ने पिता की आज्ञा या व्यवस्था को नहीं बदला पर इसे और मजबूत किया। उसने इसे सम्मान किया, विस्तार किया, और सबको पालन करने के लिये जोर दिया। यदि शुरू से मण्डली शुद्ध और दृढ़ रहती तो शैतान को ठगने और व्यवस्था को रौंदने का मौका नहीं मिलता। इस योजना के तहत शैतान सीधा ईश्वर का राज्य को स्वर्ग में और पृथ्वी में बिगड़ाना चाहता है। उसका उपद्रवी विचार ने उसे स्वर्ग से निकाल बाहर किया। उपद्रव कर अपने को बचाने के लिये वह चाहता था कि ईश्वर उसकी व्यवस्था को बदले। ईश्वर ने शैतान को स्वर्गदूतों के सामने कह दिया कि उसकी व्यवस्था नहीं बदली जा सकती है। शैतान को मालूम है कि यदि कोई मनुष्य ईश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करे तो उसे मरना होगा। GCH 82.1

शैतान ने चाहा कि इससे और आगे बढ़ना हैं शैतान ने अपने संगी दूतों से कहा कि कुछ लोग तो व्यवस्था का पालन करने में इतने मजबूत हैं कि उन्हें भ्रम-जाल में नहीं फंसाया जा सकता हैं दस आज्ञा समझने में इतना सरल है कि वे इससे दूर नहीं हट सकते हैं। इसलिये हम लोगों को चौथी आज्ञा को बिगाड़ना है। वही है जो ईश्वर को जीवित प्रमाण देता है। उसने अपने उत्तराधिकारियों को सख्त बदलने की बात कही। उसने दस में से एक ही को बदली की जो ईश्वर को स्वर्ग और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता के रूप में दिखाता है। शैतान ने यीशु का गौरवपूर्ण पुनरुत्थान को दिखाकर कहा कि पहिला दिन जी उठने के बाद यीशु ने सब्त को सातवाँ दिन के बदले पहिला दिन में बदल दिया है। इस तरह से शैतान ने पुनरुत्थान को लेकर अपना मतलब पूरा करने में लगाया। शैतान और उसके दूतों ने देखा कि उनकी यह युक्ति बहुत काम में आया क्योंकि स्त्रीस्त पर विश्वास करने वाले लोग मान गए। एक दल के लोग उसे धार्मिक पतन के रूप में देखने लगे तो दूसरा दल ने ग्रहण कर लिया। बहुत प्रकार की गलतियाँ दिखायी जायेंगी और इन्हें जोश के साथ सामना करना था। ईश्वर ने अपना वचन को स्पष्ट रूप से बताया है जिससे पता लग जाता है

कि इस में परम्परा की रीति-विधियों और गलतियों से ढाँका गया है। किन्तु स्वर्ग से लाया गया धोखा जगत में तब तक प्रचार किया जायेगा जब तक कि यीशु दूसरी बार नहीं आता है। फिर भी ईश्वर ने इस के विषय में चेतावनी देना नहीं छोड़ा है। मण्डली का अंधकार दशा में भी और सताये जाने पर भी ईश्वर के विश्वासी लोगों की कमी न हुई। क्योंकि वे ईश्वर की आज्ञा को पालन करते ही आ रहे हैं। GCH 83.1

मैंने देखा कि जब यीशु मृत्यु का दुःख उठा रहा था तो बुरे दूत आश्चर्य से भर गए थे। पर मैंने देखा कि स्वर्गदूतों का दल में आश्चर्य करने की नौबत नहीं आयी। जब प्रभु जो जीवन दाता है, उसने अपने इस ऐश्वर्यपूर्ण काम से स्वर्ग का वातावरण को आनन्द से भर दिया। क्योंकि उसने मृत्यु की बेड़ी को तोड़ी फिर विजयी होकर कब्र से निकल आया। इनमें से यदि किसी एक को मानना था तो क्रूस पर चढ़ाये जाने का दिन ही अच्छा होता। पर मैंने देखा कि उनमें से कोई भी दिन बदले जाने योग्य नहीं था। फिर भी उन्होंने सब्त दिन को बदले जाने का जैसा-तैसा कारण बताया। GCH 84.1

इन दोनों मुख्य घटनाओं का स्मरणीय दिवस हैं। इसमें प्रभु भोज लेने की विधि ठहरायी गई है जिसमें रोटी प्रभु की देह का प्रतीक है तो अंगूर फल का रस, उसके बहाए खून का। इस के खाने-पीने से हम उसकी मृत्यु को दिखाते हैं कि जब तक प्रभु न आवे ऐसा ही करते रहेंगे। इस दृश्य का स्मरण कर उसकी मृत्यु की घटना को मन में ताजा याद करते हैं। उसके पुनरुत्थान से हम यह याद करते हैं कि बपतिस्मा के द्वारा हम पानी रूपी कब्र में गाड़े जाते हैं और फिर उसके जी उठने से हम पानी से ऊपर उठ कर नया जीवन जीते हैं। GCH 84.2

मैंने देखा कि ईश्वर की व्यवस्था सदा स्थिर है और वह नयी दुनिया में भी निकल कर अनन्त काल तक स्थिर रहेगी, बिना बदलाहट के। जब पृथ्वी की नींव डाली जा रही थी तो यीशु भी वहाँ था पिता के साथ और सारे स्वर्ग दूतगण आनन्द से जय ध्वनि कर रहे थे। उसी समय सब्त की नींव भी डाली गयी या उसे स्थापित किया गया। सृष्टि के छः दिन बाद ईश्वर ने अपनी रचना के सारे कामों को छोड़कर विश्राम किया। उसने सातवाँ दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया। उस दिन उसने विश्राम किया। मनुष्य के पाप में गिरने के पहले ही सब्त पालन का नियम बनाया गया था। आदम और हवा और सारे स्वर्गदूत सब्त मानते थे। ईश्वर ने सातवाँ दिन को विश्राम कर आशीष दी और पवित्र भी किया। मैंने देखा कि सब्त कभी भी नहीं उठाया जायेगा। पर उद्धार पाये हुए सन्त लोग और पवित्रदूतगण, ईश्वर के सम्मान में अनन्त काल तक मानते रहेंगे। GCH 84.3

आधारित पाठ २ थिस्सलुनी २७, दानियेल ७:२५

अध्याय 18 - पाठ १९ - मृत्यु अनन्त काल तक का दुःखमय जीवन नहीं

शैतान ने आदन-बारी में ट्गना शुरू किया। उसमें हव्वा को कहा कि तुम निश्चय नहीं मरोगे। आत्मा (प्राण) का अमरत्व का प्रथम पाठ यहीं शैतान ने पढ़ाना शुरू किया। ठ्णने का यह काम उसी समय से शुरू हुआ और आज तक है और जब तक ईश्वर की सन्तानें ईश्वर की ओर नहीं फिर जाती हैं। तब तक जारी रहेगा। मुझे आदम और हव्वा को दिखाया गया। उन्होंने वर्जित पेड़ का फल खाया और उस पेड़ के चारों ओर चमकती हुई तलवार से रक्षा की जाती थी जिससे जीवन के पेड़ के फलों को खाकर आदम-हव्वा पापी के रूप में अमर न हो जाएँ। जीवन का पेड़ का फल तो अमरत्व दिलाने वाला था। मैंने स्वर्गदूत को यह पूछते सुना कि आदम-हव्वा के वंश का किस आदमी ने इस फल को खाया है ? तब एक दूसरा स्वर्गदूत को यह जबाब देते सुना कि किसी ने भी नहीं खाया है। जब किसी ने नहीं खाया है तो अमर होने का सवाल ही नहीं उठता है। जो व्यक्ति पाप कर मर जाता है वह सदा के लिये मरा रहेगा। वह तो अनन्त मृत्यु कहलायेगी। जी उठने का कोई मौका नहीं होगा। इस तरह से ईश्वर अपना क्रोध को ठंडा करेगा। GCH 86.1

यह अचम्भा का विषय है कि शैतान ने लोगों को ईश्वर के वचनों में से इस प्रकार का विश्वास दिलाने में सफलता पाई। वचन में कहता है कि जो मनुष्य पाप करेगा वह मर जायेगा (यहेजकेल १८:४) उसे शैतान ने उल्टा करके कहा कि जो व्यक्ति पाप करेगा पर अनन्त काल तक कष्टमय जीवन जीता रहेगा। स्वर्गदूत ने कहा जीवन तो जीवन ही है चाहे वह सुख में हो या दुःख में हो। पर मृत्यु में न दुःख है, न सुख है और न ईष्र्या है। GCH 86.2

शैतान ने अपने दूतों को बताया कि शुरू में आदम और हवा को जो झूठ का पाठ पढ़ाया गया था उसको दुहराओं और बोलो कि तुम निश्चय नहीं मरोगे। जैसे ही लोगों ने झूठी बात पर विश्वास कर ली कि मनुष्य अमर है तो शैतान ने इसे और आगे बढ़ाने का प्रयास किया और कहा कि पापी अनन्त काल तक दुःख भोगता रहेगा। शैतान ने अपने दूतों के द्वारा लोगों के बीच में प्रचार करवाया कि ईश्वर एक कठोर और निरंकुश व्यक्ति के समान है। वह पापियों का बदला लेने के लिए और अपना गुस्सा को शान्त करने के लिये, उन्हें नरक का अनन्त आग में डालेगा जहाँ उन्हें दिन-रात रोना कलपना पड़ेगा। वह ऊपर से झाँक कर देखेगा कि वे किस तरह से नरक की पीड़ा सह रहे हैं। इसे देख कर ईश्वर का भड़का हुआ क्रोध I ठंडा होगा। शैतान को मालूम है कि यदि यह बुरी भावना लोगों के मन में घुसा दिया जाए तो वे ईश्वर से डर कर उसको घृणा की दृष्टि से देखेंगे न कि उस की महिमा करेंगे। इसके बाद बहुत से लोगों को यह विश्वास भी होगा कि ईश्वर का यह डरावना वचन कभी पूर्ण नहीं होगा। जिन लोगों को उसने रचा है उन्हें ही जब वह अनन्त नरक की पीड़ा में डालेगा तो यह उसके दयालु और सहनशील चरित्र को उल्टा होगा। शैतान ने लोगों को ईश्वर का चरित्र का एक और विपरीत बात बताई और कहा कि वह (ईश्वर) अन्यायी है। यही ईश्वर ने कहा है कि पापी और सन्त सबको अपने राज्य में रखेगा। क्योंकि चह

दयालु और क्षमा देने वाला ईश्वर है। शैतान ने लोगों को बताया कि पापी अनन्त काल तक नरक में दुःख झेलता रहेगा। वह नहीं मरेगा। ईश्वर अपने को दयालु और क्षमाशील बोलने पर भी पापियों को नरक की सजा देगा। इसके बाद शैतान ने लोगों को बताया कि बाईबिल ईश्वर का प्रेरणावाली किताब नहीं है। लोगों के मन में शैतान ने भ्रम डाला कि बाईबिल अच्छी बातों को सिखाने के बावजूद भी उससे प्रेम नहीं करना और उस पर निर्भर मत करना, क्योंकि इसमें अनन्त दुःख भोगने का सिद्धान्त है। GCH 87.1

शैतान फिर एक वर्ग के लोगों को धोखा देकर कहता है कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। बाईबिल का ईश्वर का चरित्र में कोई स्थिरता नहीं हैं। यदि कुछ मानव परिवार को वह (ईश्वर) सदा काल तक नरक की पीड़ा में डालेगा तो लोग बाईबिल का लेखक और इस किताब को इन्कार कर मृत्यु को अनन्त निद्रा समझेंगे। GCH 88.1

इसके बाद और कुछ लोगों को जो डरपोक हैं और पाप करने से भी डरते हैं उन्हें कहता है कि पाप की मंजुरी मृत्यु नहीं है पर नरक में अनन्त काल तक दुःख-कष्ट भोगना है। शैतान इस मौका का फायदा उठा कर उन्हें नरक में अनन्त काल तक दुःख भोगने की इरावनी बातें कर उनके कमजोर मन को वश में कर लेता है। शैतान और उसके दूत उन्हें नास्तिक बनाने में सफल होकर खुशी मनाते हैं। ईसाईयों के प्रति घृणा उत्पन्न कराते हैं। इन बुरे नतिजों को वे बाईबल के विरोधियों के मन में डाल देते हैं जिससे वे बाईबिल और उसका लेखक पर विश्वास नहीं करते। GCH 88.2

मैंने देखा कि शैतान के इस साहसी कामों को देखकर स्वर्गदूत क्रोधित हुए। मैंने पूछा कि क्यों मनुष्यों के मनों में इस प्रकार के भ्रम डाले जा रहे हैं जबकि स्वर्गदूत तो शैतान से भी अधिक शक्तिशाली हैं और जब उन्हें आज्ञा दी जाए तो उसका काम को मिट्टी में मिला सकते हैं। तब मैंने देखा कि ईश्वर भी जानता है कि लोगों को बहकाने के लिये शैतान अपनी सारी युक्तियों का प्रयोग करेगा। ईश्वर भी उनको पाप में नहीं गिरने देने के लिये अपना वचन को उनके हृदयों में लिखेगा या बैबल तैयार करेगा। जब ईश्वर ने उनको लिखित वचन दे दिया तो वह उसे भी सुरक्षित रखेगा ताकि शैतान और उसके दूत किसी रीति से इसे नष्ट न कर सकें। जब दूसरी किताबों को नष्ट की जा सकेगी परन्तु यह अनन्त काल तक रहेगी। जब अन्त के समय में शैतान का भरमाना या धोखा देना अधिक जोर पकड़ेगा उस समय में इसकी और अधिक बृद्धि की जायेगी ताकि जो बैबल चाहे उन सबको मिले और शैतान का धोखाबाज और भ्रम से अपने को बचा सकें। GCH 88.3

मैंने देखा कि ईश्वर ने विशेष कर बाईबिल की रक्षा की है फिर भी कुछ विद्वानों ने इसके शब्दों में सरल बनाने के मतलब से हेर-फेर किया है। ऐसा करने से जो सरलता थी वह और बिगड़ गई क्योंकि उन लोगों की परम्परा की रीति-दस्तुर की ओर मोड़ दिया गया। फिर भी मैंने देखा कि पवित्र शास्त्र में अचूकता है, एक जगह का रहस्यमय को दूसरी जगह साफ-साफ वर्णन में पाते

हैं। इस का सच्चा खोजी गलती नहीं कर सकता है। जीवन का रास्ता बताने में ईश्वर का वचन सीe IT और सरल है। इसके अतिरिक्त पवित्र आत्मा भी समझने में और इस वचन के अनुसार जीवन यापन करने में अगुवाई करता है। GCH 89.1

मैंने देखा कि ईश्वर के दूत किसी के मन को वश में करने का काम नहीं करते हैं। ईश्वर ने मनुष्य के सामने जीवन और मरण रख दिये हैं। उसको चुनना हैं क्योंकि उन्होंने जीवन का रास्ता नहीं चुना है। GCH 89.2

मैंने ईश्वर की दया और सहानुभूति को उस वक्त देखा जब उसने अपना पुत्र को मनुष्य का पाप को छुड़ाने के लिये भेजा। जिस उद्धार को बहुत दाम देकर खरीदा गया है उसे जो ग्रहण नहीं करेंगे उन्हें सजा दी जायेगी। जिन प्राणियों को ईश्वर ने बनाया है, जब वे उसके राज्य के विरूद्ध उठेंगे तो सजा मिलेगी। पर पश्चात्ताप कर ईश्वर की ओर फिरेंगे तो उन्हें नक की पीड़ा झेलनी नहीं होगी। पापी की दशा में वह उन्हें स्वर्ग लेकर पवित्र लोगों के साथ भ्रष्टाचारियों की संगति में नहीं रखेगा। ऐसा करने से स्वर्ग का शुद्ध वातावरण दूषित हो जायेगा। ईश्वर न उन्हें स्वर्ग लेगा और न युग-युग तक सजा देता रहेगा। वह उन्हें सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर देगा मानों वे यहाँ थे ही नहीं। इससे उसका न्याय सिद्ध होगा। उसने मनुष्य को मिट्टी से बनाया था। अनाज्ञाकारी और पवित्र लोग आग में जल कर भस्म हो जायेंगे और मिट्टी में मिल जायेंगे। मैंने देखा कि ईश्वर की उदारता और सहानुभूति को देखकर बहुत लोग उसकी प्रशंसा करेंगे। जब सब दुष्ट लोग पृथ्वी से मिटा दिए जायेंगे तब स्वर्ग दूतगण कहने लगेंगे - “आमीन” । GCH 90.1

शैतान उन क्रिश्चियनों को देख कर हर्षित होगा जो उसके भ्रम में पड़ कर उसके साथ चल रहे हैं। वह और नया भ्रम पैदा करेगा। उसकी शक्ति बढ़ेगी और अधिक चालाकी से ठगने की कोशिश करेगा। पोप और पादरी लोग जो उसके प्रतिनिधि हैं, उनको ऊपर उठा कर, जो ईश्वर को प्रेम करते हैं। और उसकी युक्ति के अनुसार नहीं चलते हैं उन्हें सताने के लिए भड़कायेगा। ख्रीस्त के चेलों को मार डालने के लिये शैतान अपने एजेंटों को उकसायेगा। क्या यही दुःखदायी परिस्थिति होगी जब ईश्वर के बहुमूल्यजनों को ऐसा दुःख सहना होगा। स्वर्गदूतगण इस सब विश्वासियों का विश्वासयोग्य रेकार्ड रखेंगे। शैतान और उसके बुरे दूत खुश थे। उन्होंने सन्तों की सेवा करने वाले दूतों को कहा कि सब क्रिश्चियनों को नाश कर देंगे। जगत में कोई भी क्रिश्चियन नहीं रहेगा। मैंने देखा कि उस समय ईश्वर का कलीसिया शुद्ध होगा। उस वक्त ईश्वर की मण्डली में कोई दुष्ट नहीं रहेगा। जो सच्चा क्रिश्चियन होगा उसे अपनी पक्का विश्वास के कारण खतरा मोल लेना पड़ेगा। सब प्रकार की ताड़नाओं को जैसा आग में जलना, तलवार से बध होना और जितने प्रकार से शैतान मार डालना चाहेगा उन्हें वह मनुष्यों के मन में डालेगा। GCH 90.2

आधारित वचन उत्पत्ति ३,

यशा : ४७:१३-१४,

यूहन्ना १७:१७ यूहन्ना ३:१६,

सभोपदेशक ९:५, १२:७ GCH 91.1

अध्याय 20 - पाठ २० - धर्म सुधार

सता-सता का सन्तों को मार डालने के बावजूद भी जीवित साक्षी-दाता चारों ओर से गवाही देने लगे। सन्तों को उत्साहित देकर गवाही दिलवाने का काम ईश्वर के दूतों को सौंपा गया था। जो ईमानदार व्यक्ति थे उनको दूतों ने अंधकार गुफाओं और खाईयों से खोज निकाला। ये लोग गलत रास्ता में चल रहे। थे पर जैसा उसने पौलुस को खोज निकाला वैसा इन्हें भी निकाला। जैसा पौलुस को सच्चाई की गवाही देने का पात्र ठहराया वैसा ही इन्हें ईश्वर के लोगों को जगाने का काम करवाया। ईश्वर के दूतों ने मार्टिन लूथर, मेलान्थोन और दूसरे लोगों को विभिन्न जगहों से सच्चाई के प्यासे लोगों के बीच ईश्वर का वचन की गवाही देने भेजे। शत्रु भी बाढ़ की तरह उमड़ आये। उनके विरोध में मंडली का स्तर को ऊँचा उठाना था। लूथर ने इस तूफान को गले लगाया और गिरा हुआ कलीसिया को कीचड़ से उठा कर उसे उनलोगों की मदद से साफ-सुथरा बनाया जो सच्चे रूप से मसीही हुए थे। ईश्वर को नाखुश करने का भय, उसे हमेशा बना रहता था। अपने काम के द्वारा ईश्वर को खुश करना चाहता था। पर वह तब तक सन्तुष्ट नहीं हुआ तब तक स्वर्ग से ज्योति आकर उस का। अंधकारमय मन को हटाकर ख्रीस्त का लोहू पर भरोसा करने को न कहा। अब उसे मालूम हुआ कि अपने काम के द्वारा और न पोप के पास जाकर पाप स्वीकार करने से मुक्ति मिलेगी, पर सिर्फ यीशु से लूथर का यह ज्ञान कितना बहुमूल्य ठहरा। उसने इस बहुमूल्य ज्योति को अपना लिया। इसने उसका अंधकार मन और अंधविश्वास को हटा दिया। उसके लिये पृथ्वी का धन से भी उत्तम ठहरा। ईश्वर का वचन नया हुआ। सब कुछ बदल गया। जिस किताब को पाने से उसे डर था। यह सोचकर कि उसमें जीवन की सुन्दरता नहीं हैं। पर यह तो उसके लिये जीवनदायक बन गई। यह उसके लिये आनन्द, सन्तुष्टि और अच्छा शिक्षक के रूप में साबित हुई। इस को अध्ययन करने के लिये अब कोई रोक नहीं सकता था। इसे पढ़ने से मृत्यु की सजा पाने का भय था। परन्तु जैसे ही वह इसे पढ़ना शुरू किया तो सब डर भय लुप्त हो गया। अब वह ईश्वर का चरित्र की प्रशंसा करने लगा और उसे प्रेम भी करने लगा। वह ईश्वर का वचन को ढूँढ़-ढाँढ़ करने लगा। इसमें जो बहुमूल्य खजाना है उसे पाकर सन्तुष्ट हो गया। अब इस ज्ञान को मंडली को भी बाँटना चाहा। जिन पापों की क्षमा प्राप्त कर वह उद्धार पाना चाहता था उनकी क्षमा होते हुए न पाकर वह बहुत घबड़ा गया। वह जिस अंधकार से घिरा था उसमें बहुत से लोगों को फंसे हुए देखकर घबड़ाया। इन्हें ईश्वर का मेम्ना के विषय बताने के लिये उतावला हो उठा क्योंकि वही सिर्फ पाप क्षमा कर सकता है। उसने पोप की मंडली की गलतियों और पापों के विरूद्ध आवाज उठानी शुरू कर दी। जिस अंधविश्वास से हजारों लोग बाँधे गए थे उसे तोड़ फेंकने के लिये वह उत्सुक हो उठा और काम के द्वारा उद्धार पाना असम्भव है। उसका पर्दाफास किया। ईश्वर का अनुग्रह का सच्चा धन को लोगों के बीच बाँटने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञा करने लगा। उद्धार प्राप्त करने का जरिया सिर्फ यीशु है इसको बताने के लिये भी बहुत ललायित था। पवित्रात्मा की मदद से उसने बड़े जोश के साथ मंडली के नेताओं के द्वारा जो पाप कलीसिया में था उसके विरूद्ध आवाज

उठाने लगा। पादरियों के द्वारा जो अंधकार का तूफान उठाया गया था उसका उसने दृढ़ता से सामना किया। उसका दिल जरा भी विचलित नहीं हुआ। क्योंकि वह तो ईश्वर के हाथ के नीचे सुरक्षित था। विजय के लिये वह उसी पर भरोसा रखे हुए था। जैसे-जैसे वह इस लड़ाई में आगे बढ़ता गया वैसे-वैसे पादरियों का गुस्सा भी बढ़ता गया। वे सुधार के पक्ष में नहीं थे। वे तो आराम से जीवन बिताना चाहते थे। बुराई के सुख में डूबे रहना चाहते थे। वे मंडली को अंधकार ही में छोड़ना चाहते थे। GCH 92.1

मैंने देखा कि पाप को दिखा कर डाँटने और सच्चाई का उसने दुष्टों के लिए लूथर को सहासी और जोशिला देखा। उसने दुष्टों और शैतान से कुछ नहीं डरकर खूब डाँट फटकार सुनाया। वह जानता था कि उसके साथ ईश्वर है जो उनसे बहुत शक्तिशाली है। लूथर में जोश की अग्नि थी, साहस का पहाड़ था। इसलिये वह निडर होकर आगे बढ़ता ही गया। लूथर के साथ मेलान्थोन आया पर वह लूथर का चरित्र से उल्टा था। वह लूथर की मदद कर धर्मसुधार का काम में कुछ सहयोग नहीं दे रहा था। मेलान्थोन तो एक डरपोक, डर से भरा हुआ, पर सावधान से चलने वाला और धीरजवन्त भी था। वह भी ईश्वर का प्रिय शिष्य तो था। वह भी पवित्रशास्त्र का विद्वान भी था। उसकी न्यायशक्ति और तर्क बुद्धि भी उत्तम थी। ईश्वर के काम के लिये वह भी लूथर के समान ही प्यारा था। इन दो दिलों को ईश्वर ही ने जोड़ दिया था। ये दोनो मित्र थे। वे एक दूसरे से अलग होना नहीं चाहते थे। जब मेलान्थोन सुस्त और डरपोक होने का खतरा में था तो लूथर उसका एक बड़ा सहायक बना था। मेलान्थोन भी लूथर का उस वक्त बड़ा सहायक होता था। जब लूथर बहुत तेजी से सुधार का काम आगे बढ़ता था तो वह उसे धीरे चलने की सलाह देता था। मेलान्थोन की असावधानी की दूरदर्शीता ने कई बार मुसीबत आने से रोक दिया। यदि यह काम सिर्फ लूथर पर ही आता और मेलान्थोन पर छोड़ा जाता तो धर्मसुधार का काम आगे नहीं बढ़ता। धर्मसुधार के काम को आगे बढ़ाने के लिये इन दो व्यक्तियों को चुनने से मैंने ईश्वर की बुद्धि को देखा। GCH 94.1

प्रेरितों के युग की बात या घटना यहाँ देखने को मिली। उस वक्त पतरस एक निडर और जोशीला के रूप में निकला और उसका साथी यहन्ना साधारण पर धीरजवन्त और नम्र व्यक्ति था। कभी-कभी पतरस बेकाबू हो जाता था। उस वक्त प्रिय चेले गण पतरस की उतावला से भंयकर घटना होने से रोक देते थे। पर उसे सुधार न सके। पतरस का यीशु को इन्कार करने पर उसने पश्चात्ताप किया, मन फिराया, तब उसको यूहन्ना जैसा नम्र और धीरजवन्त बनने की जरूरत पड़ी। उसने अपना हठीला जोश या उदण्डता को घटा दिया। यदि सिर्फ यूहन्ना जैसा चरित्रवालों के हाथ में यीशु का काम छोड़ा जाता तो आगे नहीं बढ़ पाता। पतरस जैसा जोशिला व्यक्ति की जरूरत थी। उसका सहासी शक्ति ने हमेशा उनको मुसीबत में पड़ने से बचाया। शत्रुओं को भी उसने चुप करवाया। यूहन्ना ने अपने धैर्य, सहनशीलता और भक्ति के कारण बहुत लोगों को ख्रीस्त के पास लाया। GCH 95.1

पोप की मंडली के पापों को दिखाने के लिये धर्मसुधार के काम को आगे बढ़ाने के लिये ईश्वर ने लोगों को चुन कर निकाला। शैतान न इन जीवित गवाहों को नाश करना चाहा पर ईश्वर ने उसकी रक्षा की। कुछ लोगों को नहीं बचाया। उन्होंने उसके नाम की महिमा के लिये घात होकर अपने खून से गवाही के काम का मोहर छाप डाल दिया। पर लूथर और मेलान्थोन जैसे धर्मवीर निकले जिन्होंने पोप, राजाओं और पादरियों के पापों के विरूद्ध आवाज बुलन्द की और ईश्वर की महिमा की। लूथर की आवाज के सामने वे थर-थर काँपते थे। उन चुने हुए लोगों के द्वारा सच्चाई की ज्योति चारों ओर फैली और बहुत लोगों ने बड़े आनन्द से इसे ग्रहण किया और इस पर चलने लगे। जब एक गवाही देने वाला कत्ल किया जाता था तो उसके स्थान पर दो-तीन या अधिक लोग उठ खड़े होते थे। GCH 95.2

शैतान इस पर सन्तुष्ट नहीं था। उसको सिर्फ शरीर पर ही अधिकार था। उसने विश्वासियों की आशा और विश्वास को नहीं छुड़ा सका। मृत्यु के बाद, धर्मीजनों का पुनरूत्थान होगा और उन्हें अमरता मिलेगी, इसकी बड़ी आशा उनके मन में प्रज्जवलित थी। इस प्रकार वे शरीर के मरने से नहीं डरते थे। एक क्षण के लिये भी सोने का साहस नहीं करते थे। उन्होंने क्रिश्चियन का सारा हथियार पकड़ रखा था और धर्मयुद्ध के लिए तैयार थे। सिर्फ आत्मिक दुश्मनों से लड़ने के लिये नहीं पर मनुष्य के रूप में शैतान से लड़ने के लिये भी। वे लगातार लोगों को धमकी देकर चिल्ला रहे थे कि ईश्वर पर विश्वास करना छोड़ो या मरने के लिये तैयार हो जाओ। उन थोड़े क्रिश्चियन जो ईश्वर पर पूरा भरोसा रखते थे, वे ही अधिक उसके लिए मूल्यवान थे बनिस्पत कि आधा संसार नाम भर व लिये क्रिश्चियन हुए थे। क्योंकि ये ईश्वर के काम के लिए डरपोक थे। इसलिये ये निकम्मा थे। जब कलीसिया में सताहट हो रही थी तो ये सच्चे क्रिश्चियन एकता में रहकर एक दूसरे से प्रेम करते थे। वे ईश्वर में मजबूत थे। पापियों (भ्रष्टाचारियों) को इनके साथ शामिल होने नहीं दिया जाता था। उनमें चाहे ट्ये गए हों या ठगनेवाले हों किसी को नहीं मिलाया जाता था। जो खीस्त के लिये अपना सब कुछ छोड़ने को राजी होता था। सिर्फ उसी को वे यीशु का चेला बनाते थे। वे यीशु के समान दीन-हीन और नम्र चरित्र का होना पसन्द करते थे। GCH 96.1

अधिक जानकारी के लिए विश्व शब्दकोष में यामहान संघर्ष जी.सी. की बड़ी किताब में धर्मसुधार के विषय पढे। GCH 96.2

अध्याय 21 - पाठ २१ - मण्डली और दुनिया में एकता होती है

शैतान ने अपने साथियों से सलाह कर जो लाभ प्राप्त हुआ उसे बताया। यह तो मानी हुई बात थी कि कुछ डरपोक लोगों के सत्य का पालन करने से मृत्यु सहना होगा। इस डर से वे सत्य पालन करने से मुकर गये थे। पर डरपोकों ने भी सत्य को ग्रहण किया तो उनका डर भाग गया। जैसे उन्होंने अपने भाईयों की मृत्यु को देखा कि वे कितना दृढ़ और धीरजवन्त थे तो समझे कि ईश्वर और दूतों ने उन्हें मदद की जिस से वे दुःख सहते हुए भी बहुत निडर और साहसी बने। जब उन्हें अपने विश्वास के लिए प्राण देने पड़े तो उन्होंने बड़ा ही धीरज और साहस दिखाया। इसे देख कर सताने वाले भी सहम गए। शैतान और चेलों ने निर्णय किया कि लोगों को नाश करने का अन्तिम समय में और भी उत्तम तरीका है। क्रिश्चियनों को सताने से देखा कि कमजोर लोगों का विश्वास और आशा ख्रीस्त पर घटने के बजाय बढ़ता गया। उन्हें बूटे की आग और तलवार की धार हिला न सकी। अपने हत्यारों के सामने उन्होंने खीस्त जैसा उत्तम चरित्र का नमूना दिया। उसे देख कर बहुत से लोग विश्वास करने लगे कि ईश्वर की आत्मा उन पर है और यही सत्य हैं शैतान को सोचना पड़ा कि उसे अब कुछ नम्र होना है। उसने बाईबिल के सिद्धान्तों को तथा परम्परा के नियमों में परिवर्तन लाने की कोशिश की। इस प्रकार से उनको भी पथभ्रष्ट कर दिया जिन का विश्वास बाईबिल पर अटल था। उसने ईष्र्या करना बन्द किया। अपने साथियों को बताया कि कठोर सताहट का रास्ता छोड़ कर उन्हें मण्डली में एक दूसरे को लड़ाई करावें । यह लड़ाई विश्वास के लिये नहीं पर विभिन्न परम्परा नियमों के पालन के लिये है। संसार का झूठा लाभ के लिये उसने कलीसिया के लोगों को संसार की मोह-माया की ओर मोड़ दिया। अब लोग ईश्वर के ऊपर भरोसा करना छोड़ने लगे। धीरे-धीरे चर्च ने अपनी क्षमता खोयी। सच्चाई का प्रचार करना इसने छोड़ दिया। लोग संसार की मोह-माया में फिर से लिप्त हो गए। अब कलीसिया के लोग अलग और अनोखा नहीं रहे जैसा वे भंयकर सताहट के समय थे। कैसे सोना धूमिल हो गया। कैसे मण्डली की दशा चोखा सोना से मटमैली हो गई? GCH 97.1

मैंने देखा कि यदि कलीसिया अपना अलगपन और अनोखापन को बरकरार रखता तो पवित्रात्मा की शक्ति उस पर रहती जैसा कि चेलों के समय में थी। बीमार लोग चंगे होते, भूग्रस्त लोगों से भूत निकाले जाते और वह एक महान शक्ति का जरिया बनता, जिससे उसके दुश्मन डरते। GCH 98.1

मैंने देखा कि एक बड़ा दल ने ईसाई मत को स्वीकार कर लिया पर ईश्वर ने उन्हें मान्यता नहीं दी या ग्रहण नहीं किया। क्योंकि उन के चरित्र में कलंक था। शैतान ने धर्म का पोशाक पहनाया था पर चरित्र नहीं था। वह बहुत चाहता था कि लोग उन्हें ईसाई समझ लें। वे तो यीशु का क्रूसघात और पुनरूत्थान पर भी विश्वास करते थे। शैतान और उसके सभी दूत डर रहे थे कि कहीं वे यीशु पर औरों की तरह सच्ची आस्था (श्रद्धा) रखें । पर यदि उनका यह विश्वास उन्हें अच्छा काम

करने के लिये प्रेरित नहीं करेगा और ख्रीस्त जैसा आत्मोत्सर्गी (अपने को इन्कार करनेवाला) न बनें तो उस (शैतान) को कोई चिन्ता नहीं है। क्योंकि वे तो नाम मात्र के लिये क्रिश्चियन हुए हैं पर सारा काम-धाम तो सांसारिक जैसा है। यदि वे अपना विश्वास को मजबूत न बनावें तो उन्हें वह और अच्छी तरह से अपना काम में व्यवहार करेगा। क्रिश्चियन के नाम से उन्होंने अपनी गलतियों को छिपाया। वे अपना अपवित्र स्वभाव को छोड़ न सके और बुरी इच्छाओं को भी दबा न सके। इस प्रकार की चाल-चलन से उन्होंने ख्रीस्त का नाम को बदनाम कर दिया। जो लोग सच्चाई और सीधाई से धर्म के मार्ग पर चलते थे उन्हें भी बदनाम किया। GCH 98.2

पादरियों ने इन ढोंगी क्रिश्चियनों के पंसद लायक उपदेश दिये। यही तो शैतान चाहता था। वे यीशु और बैबल की कड़वी सच्चाई को प्रचार करने का साहस नहीं करते थे। यदि वे इसका प्रचार करते थे तो ढोंगी क्रिश्चियन नहीं सुनते। बहुत से लोग धनी थे और शैतान और उसके दूतों से कुछ भी अच्छा नहीं थे पर वे चर्च में रहना पसन्द करते थे। ख्रीस्त का धर्म जगत की दृष्टि से लोकप्रिय और आदरवान तो बना पर सच्चाई नहीं रही। ख्रीस्त की शिक्षा से यह बहुत भिन्न दिशा की ओर जाने लगी। ख्रीस्त का सिद्धान्त और जगत का सिद्धान्त में काफी अन्तर था। जो ख्रीस्त के पीछे आना चाहता था उसे तो जगत का मोह-माया छोड़ना था। धर्म में इस प्रकार की नरमी लाने वाले शैतान और उसके दूत ही थे। उन्होंने योजना रची और नकली ईसाईयों ने काम को आगे बढ़ाया। पापी और दिखावटी धर्म मानने वाले मण्डली में एक जुट हो गए। आनन्ददायक झूठी कहानियाँ सुनाने लगे और सुनी जाने लगीं। पर, यदि उनके बीच बैबल की सच्चाई सुनायी जाती थी तो वे कान बन्द कर लेते थे। ख्रीस्त के पीछे चलनेवालों और जगत से प्रेम करनेवालों के बीच कोई अन्तर नहीं था। मैंने देखा कि यदि मण्डली के सदस्यों का चरित्र रूपी ऊपरी वस्त्र को उठाया जाता तो उनमें बुराई, पाप, भ्रष्टाचार और कई घिनौने काम दिखाई देते और उन्हें क्रिश्चियन करने से संकोच करते पर शैतान की सन्तान करने से अनुचित न होता। क्योंकि वे उसके समान ही काम करते थे। यीशु और स्वर्गीय दूत इस दशा को देख कर सोच में पड़ जाते थे यानी वह सोचनीय दशा थी। फिर भी मंडली के लिये ईश्वर का संवाद दूसरा ही था। वह तो प्रमुख और पवित्र था। यदि इसे तन-मन से ग्रहण किया जाता तो चर्च में पूर्ण सुधार होता। जीवित साक्षी देने का काम को जागृत करता। पापियों और ढोंगियों को हटा कर कलीसिया को शुद्ध करता। इसे पुनः ईश्वर की दृष्टि में शुद्ध और पवित्र बनाता। GCH 99.1

आधारित है प्रकाशित वाक्य ३:१४-२२ GCH 100.1

अध्याय 22 - पाठ २२ - विलियम मिल्लर

मैंने देखा कि ईश्वर ने एक अविश्वासी किसान के पास अपने दूत को भेज कर उसके मन में बाईबिल की भविष्यवाणियों को ढूँढ़-ढाँढ़ करने के लिये उत्साहित किया। उस चुना हुआ व्यक्ति को स्वर्गदूतगण बार-बार भेंट करने आते थे। उसकी अगुवाई कर उसका मन को भविष्यवाणियों को समझने के लिये बुद्धि देते थे जो ईश्वर के लोगों के लिये अंधकार में था। सत्य की कड़ी की शुरूआत आरम्भ हुआ और उसे एक के बाद एक रहस्यमय बात को समझाते गये। ईश्वर के वचनों की विचित्रता की वह प्रशंसा करता गया। उसने देखा कि सत्य की कड़ी अटूट है यानी सच्चाई छिन्न-भिन्न नहीं है। जिस वचन को वह ईश्वर की प्रेरणा नहीं है, बोलता था वही अब उसकी दृष्टि में सुन्दरता और महिमापूर्ण है। उसे मालूम हुआ कि बाईबिल का एक भाग दूसरा भाग का रहस्य को खोलता है। जब एक जगह का पदस्थल उसकी समझ में नहीं आती थी तो दूसरी जगह का पदस्थल उसे स्पष्ट करता था। उसने ईश्वर का पवित्र वचन को आनन्द से ग्रहण किया और उसका बड़ा आश्चर्य के साथ आदर किया। GCH 101.1

जब भविष्यवाणियों का अध्ययन का अन्तिम समय में वास कर रहे हैं जिसका हमें पता नहीं है। उसने मण्डली की भ्रष्टाचार-दशा को देखा। उनमें यीशु का प्रेम नहीं है पर संसार का प्रेम है। स्वर्ग का सम्मान पाने के बदले वे दुनिया का सम्मान पाना चाहते हैं। स्वर्ग में धन जमा करने के बदले दुनिया का ८ नि-दौलत पर मन लगाते हैं। उसे चारों ओर ढोंग, अन्धविश्वास और मृत्यु दिखाई देती है। उसकी आत्मा अपने में सुगबुगाने लगी। ईश्वर ने उसे अपनी खेती-बारी का काम छोड़ने को कहा जैसा उसने एलिशा को अपना हल और बैलों को छोड़ कर एलिया के पीछे हो लेने को कहा था। विलियम मिल्लर ने थरथराते हुए ईश्वर के वचनों का रहस्य लोगों को बताया। सब प्रकार से उसे शक्ति मिली। उसने लोगों को प्रारम्भ की भविष्यवाणी से लेकर यीशु के दूसरे आगमन तक ले पहुँचाया। जैसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला ने यीशु का पहिला आगमन का सुसमाचार देकर उसके आगमन के लिये लोगों को तैयार किया वैसा ही विलियम मिल्लर और उसके साथियों ने भी यीशु के दूसरे आगमन का प्रचार जोर-शोर से किया। GCH 101.2

मुझे दर्शन में चेलों के समय का दृश्य दिखाया गया। यीशु का प्रिय शिष्य यूहन्ना को ईश्वर एक विशेष काम करवाना चाहता था। शैतान तो उसका काम को रोकना चाहता था लेकिन उसे आश्चर्य रूप से बचा लिया गया। यूहन्ना को बचाने में ईश्वर की बड़ी करामात को जिन्होंने देखा वे आश्चर्य करने लगे। बहुत लोग विश्वास करने लगे कि ईश्वर उसके साथ है और जो गवाही दे रहा है यीशु के विषय इसमें कुछ गलती नहीं है। जो लोग उसको नाश करना चाहते थे अब दूसरी बार उसकी जान लेने का साहस नहीं कर रहे थे, अत एव उसे यीशु के लिये दुःख उठाने के लिए छोड़ दिया गया। उस पर झूठा दोष लगा कर निर्जन टापू (पतमोस) में भेजा गया जहाँ ईश्वर ने अपना दूत को भेजकर उन सारी बातों का भेद बताया जो पृथ्वी का कलीसिया में होने वाला है। मंडली का गिरना,

उसकी दशा क्या होगी, पर यदि वह ईश्वर को खुश करेगी तो अन्त में विजयी होगी। स्वर्ग से एक दूत बड़ी महिमा के साथ यूहन्ना के पास आया। स्वर्ग की महिमा से उसका चेहरा खिल उठा था। उसने यूहन्ना को ईश्वर की मंडली का रोमांचित दृश्य दिखाते हुए बहुत संकट से गुजरेगी उसे भी दिखाया। यूहन्ना ने देखा कि मंडली को अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ेगा पर अन्त में चोखा सोना की तरह विजयी होकर निकलेगा और ईश्वर के राज्य में गौरव हासिल करेगी। जब दूत ने यूहन्ना को ईश्वर की मंडली की गौरवपूर्ण विजय को दिखाया तो उसका चेहरा आनन्द से चमक उठा। मंडली का आखिरी छुटकारा को देख कर यूहन्ना खुशी से फूला नहीं समाया। जब उसे गौरवपूर्ण दृश्य दिखाया गया तो श्रद्धा और भक्ति के साथ दूत के पाँवों तले गिर कर उपासना करना चाहा पर दूत ने उसे तुरन्त उठा लिया। उसने उसे नम्रभाव से कहा कि तू ऐसा मत करो। मैं तो तुम्हारा सहकर्मी एवं भाई भी हूँ और उनका भी जो यीशु की गवाही देते हैं। सिर्फ ईश्वर की उपासना करो। यीशु की गवाही देना ही भविष्यवाणी की आत्मा है। इसके बाद दूत ने यूहन्ना को स्वर्ग का आश्चर्यजनक तेजस्वी और ऐश्वर्य को दिखाया। इस नगर की महिमा को देख कर यूहन्ना वशीभूत होकर आनन्द से भर गया। स्वर्गदूत की पहली चुनौती को भूल गया था। वह फिर उसे दण्डवत करना चाहता था तो पुनः दूत ने कहा - 'ऐसा मत करो।' क्योंकि मैं तुम्हारा सहकर्मी और भाई हूँ। भविष्यवक्ताओं और जो इस किताब के अनुसार ईश्वर की उपासना करते हैं उनका साथी हूँ। GCH 102.1

प्रचारक और लोगों ने प्रकाशित वाक्य की किताब को रहस्यमय कह कर इस भाग को पवित्रशास्त्र का प्रमुख भाग नहीं माना है। परन्तु मैंने देखा कि जो लोग अन्तिम दिनों में वास करेंगे उनके लिये सचमुच एक-विशेष फायदा देने वाली होगी। उनकी सच्ची दशा और कर्तव्य क्या होना है उसे बतायेगी। ईश्वर ने विलियम मिल्लर को इस किताब की भविष्यवाणी को समझने के लिये विशेष ज्योति दी। GCH 103.1

यदि लोग दानियेल के दर्शन को भली-भाँति समझे हुए होते तो यूहन्ना की भविष्यवाणियों का सम्बन्ध को दिखाया तथा बाईबिल के और दूसरी जगहों की भविष्यवाणियों को भी लोगों को समझने में मदद की। इसमें पवित्र चेतावनियाँ थी जिस पर ध्यान कर चलने से मनुष्य के पुत्र का दूसरा आगमन की तैयारी कर सके। जिन्होंने इसे सुना उनके मनों में इसका बहुत गहरा असर हुआ। इस के बाद प्रचारक, पादरीगण, पापी लोग तथा अविश्वासी लोग प्रभु की ओर फिर कर न्याय के दिन की तैयारी में लग गये।। GCH 104.1

ईश्वर के दूतों ने विलियम मिल्लर के काम को पूरा करने में सहयोग दिया। वह अडिग और स्थिर खड़ा था। जो संवाद देने को उसे मिला था उसका उसने साहस के साथ प्रचार किया। जगत जो बुराई में डूबा था, ठंडा पड़ गया था, और मंडली भी दुनियादारी बन गई थी, उसी को सुधारने के लिए उसने जोर लगा दिया। इसके लिये वह खुशी से परिश्रम करने, दुःख सहने के लिए भी राजी हुआ। यद्यपि कि इन्हें जगत और ढोंगी क्रिश्चियनों और शैतान और उसके दूतों से लड़ना पड़ा

पर उसने सनातन का सुसमाचार को लोगों के बीच प्रचार करने से रूका नहीं। जहाँ कहीं भी उसे बुलाया गया वहाँ जा कर आवाज बुलन्द करते हुए प्रचार किया - "ईश्वर से डरो और उसकी महिमा करो क्योंकि न्याय करने का समय आ गया है।" GCH 104.2

आधारित वचन दानियेल ८:१४, प्रकाशित वाक्य १९:१०

अध्याय 23 - पाठ २३ - पहिला दूत के समाचार

मैंने देखा कि १८४३ ई० में ईश्वर का संवाद प्रचार करवाना चाहता था। इसी उद्देश्य से उसने लोगों को जगाया और उसकी जाँच की जिससे वे निर्णय कर सके। पादरी लोग सच्चाई को विश्वास कर अपनी आत्मिक दशा को भी पहचानने लगे। उन्होंने अपना गर्व को छेड़ा, नौकरी भी शेट्टी और मंडली भी येइ कर जगह-जगह पर सुसमाचार सुनाने के लिए निकल| पड़े। सनातन का यह सुसमाचार बहुत लोगों के दिल में घुसने के बदले कम ही लोगों में घुसा। तब ईश्वर ने उन्हें चुना जो प्रचारक या पादरी नहीं थे। कुछ ने अपने खेती-बारी का काम छोड़ा तो कुछ ने अपनी दूकानदारी का काम छोड़ कर प्रचार के काम में लग गये। कुछ लोग जो पेशावार थे उन्हें अपना पेशा को छेड़ने के लिये मजबूर किया गया और उन्हें इस साधारण काम जो लोगों को सुसमाचार सुनाना था उसमें लगाये गये। मंत्रियों को भी अपना सचिवालय का काम चैड़ कर यीशु मसीह के आने के सुसमाचार देने पड़े। हर तरफ लोग जाने लगे और सुसमाचार भी उधर फैलने लगे। पापी लोग रो-रो कर पश्चात्ताप का पापों की दशमा के लिये प्रार्थना करने लगे। जो लोग बेईमानदार थे वे अपनी दशा सुधारने के लिये बहुत इच्छुक थे। GCH 105.1

माता-पिता अपने बच्चों के लिये बहुत जोर से प्रार्थना कर रहे थे। जिन्होंने इस संवाद को पाया था, वे अपने अपश्चातापी मित्रों और सम्बन्धियों को समझाने में व्यस्त थे। वे एक साथ प्रार्थना के लिये घुटना टेक कर इस संवाद की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए यीशु के दूसरे आगमन की तैयारी के लिये आग्रह करने लगे। जो लोग इस दिल छूने वाली चेतावनी को सुन कर भी अपना दिल कठौर किये हुए थे, उनको समझाने में कठिन परिश्रम करना पड़ा। इस आत्मा शुद्ध करने का काम ने बहुत लोगों को दुनिया को मोह-माया से अलग कर दिया। वे अब पवित्र चाल-चलन की और झुक गए। विलियम मिल्लर ने जो सच्चाई प्रचार की उस को लोग ग्रहण करने लगे। ईश्वर के दासों को एलिया के समान प्रचार करने का जोश मिला, वे प्रचार के काम में तन-मन से लग गए। जिन्होंने यूहन्ना बपतिमा का जोश से इस गम्भीर संवाद को पेश किया उन्हें कहा गया कि पश्चात्ताप का फल पाने के लिये लोगों के मन की गहराई तक जाना होगा। उनकी गवाही इतनी जबरदस्त थी कि मंडली के लोगों का चरित्र को बदल डाला। आने वाला क्रोध का दिन से भागने के लिये जैसे ही चेतावनी का यह गम्भीर संवाद पेश किया गया तो कुछ लोग जो सत्य को ग्रहण करने लगे उन्हें चंगा करने का भी संवाद मिला। उन्हें अपनी गिरी दुई दशा मालूम हुई, वे आँसू बहाकर पश्चाताप करने लगे और आत्मा की वेदना से ईश्वर के सामने नम हुए। जब परमेश्वर की आत्मा उनके मन में उतरा तो वे घोषणा करने लगे - "ईश्वर से इसे और उसकी महिमा करो क्योंकि उसके व्याय करने का समय आ गया है। GCH 105.2

जब यीशु के आने का ठीक समय के विषय प्रचार हो रहा था तो लोग इसे पसन्द नहीं कर रहे थे। पादरियों से लेकर नीचे के साधारण मण्डली के सदस्य भी इसका विरोध करने लगे। ढोंगी

पादरी और हँसी-ठट्ठा करने वाले लोगों के मुंह से सुनाई देने लगा कि यीशु के आने का ठीक समय को कोई नहीं जानता है। जब भविष्यवाणी की बात को बताकर उन्हें समझाने की कोशिश की जा रही थी तो लोग सुनना पसन्द नहीं करते थे और न अपनी गलती सुधारना चाहते थे। उन्हें बताया जा रहा था कि भविष्यवाणी पूरी हो रही है और यीशु का आना भी नजदीक है। यहाँ तक कि दरवाजा पर है। मंडली के कई चरवाहे थे वे कह रहे थे कि यीशु के आने का प्रचार करने में उनकी ओर से कोई बाध् II नहीं है पर निश्चित समय पर आने के विषय में वे राजी नहीं हैं। सर्वज्ञानी ईश्वर ने उनके हृदय को पढ़ लिया। वे यीशु के आने का नजदीकी समय को पसन्द नहीं कर रहे थे। वे जानते थे कि उनका सांसारिक जीवन इस कसौटी में खरा नहीं उतरेगा। क्योंकि जो सीधा और नम्र रास्ता दिखाया गया था उसमें वे नहीं चल रहे थे। ये ही झूठे चरवाहे थे जो ईश्वर का मार्ग में रोड़ा अटका रहे। थे। विश्वास उत्पन्न करने वाला शक्तिशाली वचन जब पेश किया गया तो लोगों का दिल छिद गया और वे उस दरोगा की तरह कहने लगे कि बचने के लिये मैं क्या करूँ ? परन्तु ये झूठे पादरीगण सच्चाई और लोगों के बीच खड़े होकर उन्हें सच्चाई से भटका रहे थे। वे शैतान और उसके दूतों से मिल कर कहने लगे - “शान्ति, शान्ति, जबकि शान्ति नहीं थी।” मैंने देखा कि ईश्वर के दूतों ने उन्हें चिन्ह कर लिया और उन अपवित्र चरवाहों का वस्त्र लोगों के खून से रंग दिया गया था। जिन्होंने ऐश-आराम का जीवन और ईश्वर से दूर ही रहना पसन्द किया उनका दूषित मन को दूर नहीं किया जा सका। GCH 106.1

बहुत से चरवाहों (पादरियों) ने इस संवाद को ग्रहण नहीं किया और जिन्होंने ग्रहण किया उन्हें बाधा पहुँचाने की चेष्टा की। उनके खून का लेखा उन्हें देना पड़ेगा। स्वर्ग का इस संवाद को प्रचारक और लोगों के दोनों दल विरोध करने लगे। विलियम मिल्लर के साथ जो लोग काम करते थे उन्हें वे सताने लगे। उसका प्रभाव पर हानि पहुँचाने के लिये झूठी नोटिशे चारों ओर बाँटी गई। दूसरे समय पर जब उसने ईश्वर का वचन से अपने श्रोताओं को सुनाया तो झुठे चरवाहों की बातें असत्य निकली तो वे गुस्सा से भर गये। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि उसकी रक्षा कर सुरक्षितपूर्वक उसे अपने घर पहुँचावे। गुंडों के हाथ से उसे बचा लिया क्योंकि अभी उसे ईश्वर के लिये बहुत काम करना था। GCH 107.1

जो लोग बहुत ही ईश्वर भक्त थे उन्होंने तो इस संवाद को ग्रहण कर ही लिया। उन्हें मालूम हुआ कि यह संवाद ईश्वर की ओर से ठीक समय में मिला है। स्वर्गदूतगण इसका (संवाद) परिणाम देखने के लिये व्यग्रता से आशा लगाए हुए थे। जब मंडली ने इसका विरोध कर दूसरी तरफ मुँह मोड़ लिया तो वे दुःखित हो कर यीशु से विचार-विमर्श करने लगे कि क्या होने वाला है। यीशु ने भी अपना मुँह नहीं स्वीकार करने वाली मंडली की ओर से घेर लिया और दूतों से कहने लगा कि जिन्होंने साक्षी की बात को इन्कार नहीं की है उन लोगों की रक्षा करो, क्योंकि अभी और दूसरी ज्योति उनके लिये आने वाली है। GCH 108.1

मुझे यह दिखाया गया कि जो लोग मसीह के चेले हैं। वे यीशु के आने की बाट देखते, उनका प्रेम उस पर होता, वे । यह समझते कि उसके जैसा पृथ्वी पर कोई दूसरा नहीं है तब वे उसके आने की खबर पहली बार पाते तो आनन्द से उसकी जय जयकार करते। परन्तु उन्होंने उसे नकारने की साक्षी दी और उनके लिये उसका दूसरा आगमन से पता चलता है कि उसे प्रेम नहीं करते हैं। शैतान और उसके दूतों ने अपनी विजय समझ कर यीशु के चेहरे पर उदासी डाली और कहा कि उसके चेले उसका दूसरा आगमन से नाखुश हैं। GCH 108.2

मैंने ईश्वर के सच्चे लोगों को आनन्दपूर्वक यीशु के आने की प्रतीक्षा करते हुए देखा। पर ईश्वर ने उसका सबूत देखना चाहा। भविष्यवाणी के मुताबिक यीशु के आने का दिन ठहराया गया था, उस पर ईश्वर ने अपने हाथ से ढाँक दिया था। जो यीशु के आने की राह बहुत बेताब होकर देख रहे थे, उन्होंने भी इस गलती को नहीं देखा और जो लोग विद्वान थे, उसका विरोध कर रहे थे। उन्होंने भी नहीं देख पाया। ईश्वर की इच्छा थी कि इन्हें एक बार निराश होना होगा। समय गुजर गया। जिन लोगों ने बड़े आनन्द से उसके आने की बाट जोह रहे थे और नहीं आया तो बहुत उदास हुए, जब कि दूसरे लोग यीशु का आगमन नहीं चाहते हुए भी डर से संवाद ग्रहण कर चुके थे और यीशु नहीं आया तो खुशी हुई। उनके दैनिक कामों से उनके न दिल का बदलाव आया और नव जीवन में शुद्धता आई। इन दिलों को बताने के लिये समय का सही हिसाब लगाया गया था। ये ही लोग पहला व्यक्ति रहे जिन्होंने उदास दिलवालों को ठट्टा में उड़ाने का काम किया, उन्हें जो यीशु के आने की राह तन-मन से देख रहे थे। मैंने इसमें ईश्वर की बुद्धि को देखा - उसने उनको परखा और दोबारा बैबल से इस विषय में ढूँढ़-ढाँढ़ करने का अवसर दिया कि कहाँ पर वे गलती कर रहे हैं। फिर जो लोग इस संवाद पर विश्वास नहीं कर रहे थे उनके विश्वास को डगमगा कर सिर्फ सच्चे विश्वासियों को चुनने का मौका मिला। GCH 109.1

यीशु और स्वर्गीय दूत उनको सहानुभूति से देख रहे जो यीशु को प्रेम करते थे और उसके आने की इच्छा करते थे। उनके निराशा और उदास की घड़ी में स्वर्गदूत उनके ऊपर छाया किये हुए थे और उन्हें सान्तवना दे रहे थे। परन्तु जो स्वर्गीय संवाद को ग्रहण करना नहीं चाहते थे उन्हें अंधकार में छोड़ गया। ईश्वर का गुस्सा उन पर भडक उठा क्योंकि उन्होंने स्वर्ग से जो ज्योति आई थी उसे ग्रहण नहीं की थी। जो विश्वासी उदास हो कर सोच रहे थे कि क्यों उनका प्रभु नहीं आया, उन्हें अंधकार में नहीं छोड़ा गया। फिर से उन्हें बाईबिल की भविष्यवाणियों को अध्ययन करने का मौका मिला। इस बार ईश्वर का हाथ उस रहस्यमय जगह से हट गया और उन्हें अपनी गलती समझने का अवसर मिला। उन्होंने देख पाया कि भविष्यवाणी का समय या मन्दिर को शुद्ध करने का समय १८४४ ई० में पहुँच गया। वे प्रमाण देते आ रहे थे कि दानियेल ८:१४ की भविष्यवाणी १८४३ में पूरी हो रही है और यीशु १८४४ ई० में आयेगा। GCH 109.2

ईश्वर के वचन से उन्हें प्रकाश मिला और उन्होंने इसे प्रतीक्षा करने का समय बताया। यदि दर्शन में प्रतीक्षा या ठहरो था, तो उन्हें यीशु के शीघ्र आगमन की प्रतीक्षा में ठहरना था पर वे इसकी अवहेलना की और उसी दिन यीशु को इस पृथ्वी पर आने की प्रतीक्षा की जबकि यीशु उस दिन को स्वर्ग का महा पवित्र स्थान में प्रवेश किया। यह दर्शन बाईबिल को भविष्यवाणियों को गहरा अध्ययन के समय दर्शन में मिला। बहुत से लोग १८४४ ई० का महान निराशा में इतना निरूत्साह हो गये कि अपना पहिले का जोश और होश को बिल्कुल खो दिए। वे इस संवाद पर विश्वास करना व्यर्थ समझने लगे। शैतान और उसके दूतों ने इन्हें हतास कर दिया था और जिन्होंने इस पर विश्वास नहीं किया था, वे इस को देख कर खुश थे। वे भ्रम पैदा करने वाला संवाद कह रहे थे। उन्हें मालूम नहीं हो रहा था कि ईश्वर की सलाह का इन्कार कर रहे थे जिसका बुरा नतीजा उन पर पड़ने वाला था। वे शैतान के साथ मिल कर ईश्वर के सच्चे विश्वासियों को हतास करने में लगे थे। GCH 110.1

इस संवाद पर विश्वास करने वालो को मंडली में बेइज्जत कर रहे थे। कुछ समय के लिये ये डर कर अपने मनों की बात या सत्य जो बाद में उन्हें मिला था उसको नहीं बता रहे थे। जब कुछ दिन बीत गए तो उन्होंने फिर सत्य को बताना शुरू किया। उनको हिसाब लगाने में जो गलती हुई थी उसे बताने लगे। वास्तव में हिसाब में गलती नहीं थी पर यीशु का स्वर्ग का महापवित्र स्थान में प्रवेश करने को पृथ्वी पर आने बताया गया था। इस शक्तिशाली तर्क के विरूद में विरोध करने वाले कुछ तर्क न दे सके। पर मंडली में लोगों का गुस्सा इनके ऊपर बढ़ा। उन्होंने ठान लिया कि उनका उपदेश अब किसी भी मंडली में सुनाने नहीं दिया जायेगा और न किसी जगह अपने लोगों को सुनने देंगे। जिन्होंने विरोधियों का सामना नहीं किया वे स्वर्ग का दिया हुआ संवाद सुनने से वंचित रह गए पर जो सुनने के लिये तरसते थे उनके साथ यीशु के दूसरे आगमन का संवाद जो दूसरा दूत के द्वारा सुनाया गया था उसे सुन कर अपने को न्याय के दिन के लिये तैयार कर रहे थे। GCH 111.1

आधारित वचन मलाकी ३, यूहन्ना १४:१-३ प्रकाशित वाक्य १४:६

अध्याय 24 - पाठ २४ दूसरा दूत के समाचार

मंडलियाँ पहला दूत के समाचार नहीं ग्रहण कर सकीं क्योंकि स्वर्ग से जो ज्योति आई थी उसे उन्होंने इन्कार की थी। इसलिये ईश्वर का अनुग्रह उन पर नहीं था। वे अपने पर भरोसा रख कर अपने आप को पहिला दूत के समाचार सुनने से इन्कार कर दिये जिससे उन्हें दूसरा दूत के समाचार की ज्योति भी नहीं मिली। परन्तु ईश्वर के प्रियजन, जो सताये गए, उन्होंने उस संवाद का उत्तर दिया जिसमें कहा गया था कि बाबुल गिर गया और वे अपनी मंडलियों को डोफ़कर चले गये। GCH 112.1

दूसरे दूत के समाचार के अन्त होने के पहले मैंने परमेश्वर के लोगों के ऊपर स्वर्ग से बड़ी ज्योति चमकते हुए देखी। इस ज्योति की चमक तो सूर्य के समान तेज थी। तब मैंने स्वर्गदूत को एक बड़ी आवाज देकर पुकारते हुए सुना - "गिर पड़ा वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा जिसने अपने व्याभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलायी है" स्वर्ग से दूतगण आकर उन सन्तों को जगाने लगे जो उदास हो गए थे। उन्हें बड़ा काम करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। जो बड़ा विद्वान कहलाते थे, वे इस संवाद को पहले ग्रहण करने वालों में नहीं थे। स्वर्गदूत लोग दीन और नम्र लोगों के पास जाकर सनातन का सुसमाचार देने के लिये उत्साहित करने लगे। जिन लोगों को यह काम पौंपा गया था, वे पवित्र आत्मा की शक्ति से खूब जोर से प्रचार करने लगे। यह काम न तो विद्वानों की वृद्धि से और न शक्ति से ही जोर पकड़ा पर ईश्वर की शक्ति से हुआ। जो लोग धार्मिक स्वभाव के थे उन लोगों ने पहले पहल इस संवाद को ग्रहण किया। GCH 112.2

जगत के सब क्षेत्र में दूसरा दूत के समाचार फैलाये गए और हजारों लोगों के दिल में पैठने लगे। यह एक गाँव से दूसरा गाँव, एक शहर से दूसरा शहर फैलने लगा जब तक कि ईश्वर के लोगों तक नहीं पहुँचा। बहुत सी मंडलियाँ दूसरा दूत के समाचार को सुनने से इन्कार करने लगी पर जो लोग सत्य के खोजी थे उन चर्चे से निकल आये। आधी रात की पुकार का संवाद के द्वारा बहुत बड़ा काम हुआ। संवाद दिल छूने वाला था इसलिये विश्वासी लोगों को इसे ग्रहण करने की प्रेरणा मिली। वे जानते थे कि दूसरों पर भरोसा नहीं करना हैं इस का अनुभव स्वयं करना है कि यह सत्य है कि झूठ। GCH 113.1

सन्त लोग व्याकुल होकर लगातार उपवास और प्रार्थना में बिता रहे थे। जबकि कुछ पापी लोग आने वाला दिन को डर से देख रहे थे वहीं बड़ी संख्या में लोग इसका विरोध कर शैतान का साथ दे रहे थे। उनकी हँसी-ठट्ठा करना चारों ओर सुनाई दे रहा था। बुरे दूत और शैतान खुश थे। वे लोगों के दिलों को कठोर कर रहे थे और स्वर्ग से आई हुई ज्योति को इन्कार करवा कर उन्हें अपने जालों में फंसाये रखना चाहते थे। बहुत लोग जो प्रभु को प्यार करते थे उनका इसमें न कुछ हिस्सा था और न हाथ। वे बेपरवाह थे। उन्होंने ईश्वर की महिमा देखी थी, लोगों को नम्र भाव से उपासना करते और प्रतीक्षा करते हुए भी देखे थे और सच्ची गवाही के कारण दूसरों को सच्चाई

को अपनाते हुए भी देखे थे। पर ये मन बदलने वाले न थे। वे तैयार नहीं हो रहे थे। चारों ओर सन्तों की गम्भीर और जोशिली प्रार्थनाएँ हो रही थीं। उनके ऊपर पवित्र जिम्मेदारी आ रही थी। स्वर्गदूतगण बड़ी तमन्ना के साथ नतीजा का इन्तजार कर रहे थे और जिन्होंने स्वर्गीय संवाद को पाया था उनको मजबूत कर रहे थे। वे उनको संसार का लाभ से स्वर्ग का बड़ा लाभ जो 'उद्धार' है उसे पाने के लिये उत्साहित कर रहे थे। ईश्वर के लोग इस प्रकार से ग्रहण किये जाते थे। यीशु उन्हें देखकर बहुत खुश हो रहा था। उसकी उनके द्वारा प्रतिबिम्बित हो रही थी याने यीशु की झलक दूसरों को दे रहे थे। उन्होंने अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पण कर दिया था और अमरता को पाने की आशा कर रहे थे। पर उन्हें अमरता पाने से रोका गया याने यीशु नहीं आया और अमरता नहीं मिली। उन्हें उदास होना पड़ा था। छुटकारा का समय की आशा कर रहे थे वह तो बीत गया। अब तक वे पृथ्वी पर ही ये और शाप का प्रभाव जाता हुआ नहीं दीख रहा था। उन्होंने तो अपना स्नेह स्वर्ग पर रखा था और उसकी मीठी अपेक्षा में थे। वे संसार का दुःख-दर्द से सदा के लिये छुटकारा पाना चाहते थे। पर उनकी आशा में पानी फिर गया। GCH 113.2

लोगों में जो डर समा गया था वह तुरन्त गायब नहीं हुआ था। जो लोग उदास-नीरस हो गए थे उन पर विजयी नहीं हुए थे यानी व्यगं नहीं कर रहे थे। परन्तु जब ईश्वर का गुस्सा का तुरन्त अनुभव नहीं हुआ तो डर भय छोड़ कर फिर से विश्वासियों की हँसी-ठट्टा और मजाक करने लगे। ईश्वर के लोगों को फिर परखा गया। जगत के लोग उनकी बेइज्जत करने लगे। पर जो लोग यीशु पर बिना सन्देह विश्वास कर रहे थे कि वह आकर मुर्दो को जिलायेगा, जीवित सन्तों को बदलेगा, अपना राज्य में ले जायेगा और सदा सर्वदा वे वहाँ रहेंगे, वे अपने को यीशु के चेले समान महसूस कर रहे थे। वे मानो उसी प्रकार का उच्चारण कर रहे थे जैसा कब्र में यीशु को न पाकर मरियम ने किया था - 'मेरा प्रभु को कहाँ ले गये और मैं नहीं जानती हैं कि कहाँ रखे है।' GCH 114.1

आधारित वचन प्रकाशित वाक्य १४:८

अध्याय 25 - पाठ २५ - आगमन के आन्दोलन का उदाहरण

मैंने कई एक दल में लोगों को देखा जो एकता के सूत्र में बाँधे हुए सा दिखाई दिये। इनमें से बहुत लोग पूरा अंधकार में थे। उनकी गति पृथ्वी के नीचे की ओर जा रही थी या पतन की ओर और यीशु के साथ उनका कोई सम्बन्ध न था। मैंने कुछ लोगों को झुंडों में भी देखा जिनके चेहरे प्रकाशमान थे और आँखें स्वर्ग की ओर उठी यीं। सूर्य की रोशनी के समान उन्हें यीशु से मिल रही थी। इस समय बुरे दूत जो अन्धकार में थे उन्हें घिरे हुए थे। मैंने स्वर्गदूत को बड़े जोर से शब्द करते सुना कि परमेश्वर से डरो और उसकी महिमा करो क्योंकि उसके न्याय का समय आ गया है। GCH 115.1

जो लोग संवाद को ग्रहण करते थे उन्हें महिमा की ज्योति ने प्रकाशमान कर रखा था। कुछ लोग जो अन्धकार में थे उन्हें भी ज्योति मिली और वे भी खुश थे। पर दूसरों ने कहा कि यह हमें धोखा में डालने के लिये अगुवाई कर रहा हैं उनके बीच से प्रकाश बूत गया और वे अंधकार में पड़े रहे। जिन लोगों ने यीशु से ज्योति पाई वे इस बात से आनन्द करने लगे कि उन्हें बहुमूल्य ज्योति मिल गई है। उनके चेहरे पवित्र आनन्द से तथा खुशी से चमक उठे। उनको बहुत आनन्द से स्वर्ग की ओर यीशु को ताकने कहा गया। स्वर्गदूतों की आवाज के साथ उनकी आवाज भी सुनाई दी। ईश्वर से डरो और उसकी महिमा करो क्योंकि उसके व्याय करने का समय आ गया है। जैसे यह आवाज हो रही थी तो मैंने उन लोगों को देखा जो अंधकार में थे। वे अपने सिरों और पैरों को पटक रहे थे। बहुत लोग जो पवित्र ज्योति से बाँधे हुए थे, खुश नजर आ रहे थे। वे अंधकार में रहने वालों से नाता तोड़ कर अलग हो गए। जब लोग अंधकार रूपी रस्सी की बंधन को तोड़ कर अलग हो रहे थे तो ये लोग जो अंधकार ही में रहना पसन्द करते थे वे जाने वाले लोगों के पास जा-जा कर मीठी भाषा से कहते थे कि मत जाओ।

पर दूसरे लोग घुड़कते थे, गुस्सा चेहरा बना कर देखते और डरवाते थे। वे यह देख रहे थे कि उनका दल कमजोर पड़ रहा है। वे सान्तवना देकर कहते थे कि ईश्वर हमारे साथ है, हम सच्चाई में हैं, हमारे पास ज्योति है तुमलोग क्यों भाग रहे हो ? तब मैंने पूछा कि ये कौन लोग है? तब मुझे बताया गया कि ये पादरी प्रचारक और लोगों के नेता हैं जिन्होंने प्रकाश को इन्कार कर दूसरों को भी ग्रहण करने नहीं दिया। मैंने देखा कि जो लोग प्रकाश को चाह रहे थे वे बहुत रूचि के साथ स्वर्ग की ओर देख कर यीशु के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसी समय एक बादल उड़ता हुआ आया और उनकी दृष्टि को ढाँक दिया तो वे बहुत उदास हो गए। मैंने बादल आने का कारण पूछा। मुझे दिखाया गया कि यह बादल नहीं पर उनका निरूत्साह था। जिस समय यीशु को आने की बाट जोह रहे थे और वह नहीं आया। घोर निराशा उनके मन में छा गया। जिन प्रचारक और नेताओं के विषय मैंने पहले पूछा था वे लोग तो बहुत खुश हो रहे थे। जिन्होंने ज्योति को इन्कार किया था वे शैतान के साथ विजय मना रहे थे और बहुत खुश थे। GCH 115.2

तब मैंने दूसरे दूत को यह कहते सुना कि गिर पड़ा वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा। फिर से उन उदास में पड़े हुए लोगों के चेहरे में ज्योति चमकी और वे पुनः जोश के साथ यीशु को स्वर्ग से आते हुए देखने की इच्छा करने लगे। मैंने दूसरा दूत के साथ बहुत सारे दूतों को बातें करते हुए देखा। वे सब मिल कर दूसरा दूत के साथ चिल्लाने लगे "बड़ा बाबुल गिर पड़ा"। यह आवाज चारों ओर सुनाई पड़ी जिन लोगों ने संवाद को ग्रहण किया था उन पर और अधिक तेज से चमकने लगा। वे स्वर्गदूतों के साथ मिल कर बड़े जोर के शब्दों से पुकारने लगे। ये लोग जो ज्योति को ग्रहण करना नहीं चाहते थे उन्होंने इनको कोसना और हँसी मजाक करना शुरू कर दिया। परन्तु ईश्वर के दूतों ने इनके ऊपर अपने पंखों को पसारे हुए था जब कि शैतान और बुरे दूत इन्हें अंधकार ही में डाले रहना चाहते थे। वे इन्हें स्वर्ग की ज्योति को ग्रहण करने देना नहीं चाहते थे। GCH 116.1

जिन लोगों पर हँसी-मजाक हो रही थी उनको कहा गया कि उनके बीच से निकल आओ और उन अशुद्ध वस्तुओं को मत छुओ। तब एक दल के लोग जिन्होंने इस आवाज को सुनकर यीशु के आगमन को ग्रहण किया था, अंधकार का बन्धन को तोड़ कर, उन्हें छोड़ कर उन लोगों में शामिल हुए जो आनन्द के साथ यीशु की ज्योति पायी थी। मैंने उन लोगों की वेदनापूर्ण प्रार्थना भी सुनी जो अब तक अंधकार का दल में से निकल कर आना चाहते थे। पदारी और प्रचारक लोग इनके दलों में घूम-घूम कर इसी दल में रहने के लिये अर्जी करते थे। पर जो निकल कर आना चाहते थे उनकी गिड़गिड़हाट प्रार्थना को मैंने सुना। मैंने फिर देखा कि ये प्रार्थना करने वाले दल उनसे सहायता माँगने लगे जो ईश्वर के साथ रह कर आनन्द कर रहे थे। तब उनके लिये स्वर्ग से जबाब आया कि तुम लोग उनमें से निकल आओ। स्वतन्त्रता के लिये जो संघर्ष कर रहे थे वे अन्त में बड़ी भीड़ का मोह छोड़कर निकलने में सफल हुए।

अंधकार में रहने के लिये जो जकड़ा हुआ बन्धन था उसे तोड़ डाले। लोगों के कहने पर कि ईश्वर हमारे साथ है, सच्चाई इसमें है, उसकी परवाह न की वे अन्त में निकल कर चले ही आये और उस दल में शामिल हो गए जहाँ सच्चाई की ज्योति चमक रही थी। वे अपने सिरों को स्वर्ग की ओर उठा कर ईश्वर की महिमा के गीत गाते थे। ईश्वर की आत्मा उनके साथ थी। वे एकता के बन्धन में थे और स्वर्ग का प्रकाश से प्रकाशमान थे। इस दल के आस-पास भी कुछ लोग तो आये पर उन्होंने इनके साथ शामिल होना न चाहा। क्योंकि उन पर स्वर्गीय ज्योति का कुछ प्रभाव नहीं पड़ा था। जिन्होंने नई ज्योति को पसन्द किया था, वे ऊपर की ओर ताकने लगे। यीशु ने उन पर सहानुभूति दिखाई। वे यीशु को पृथ्वी में आने की बाट जोह रहे थे। वे पृथ्वी की ओर अपना मन लगाना नहीं चाहते थे। फिर मैंने इन प्रत्याशियों के ऊपर एक उड़ता हुआ बादल देखा जो आकर उनकी नजरों को छिपा दिया। तब मैंने देखा कि उन्होंने अपनी थकी-मन्दी आखों को नीचे झुका दिया। इस बदलाहट का कारण मैंने पूछा। मेरा स्वर्गदूत ने बताया कि वे फिर अपनी आशा पूरी होते न देखकर उदास हो गए। अब तक यीशु पृथ्वी में नहीं आया था। उन्हें यीशु के लिये दुःख सहना था और कड़ी परीक्षाओं से गुजरना भी था। उन्हें लोगों की ओर से दी गईं। गलतियों और

परम्परा की दस्तूरों को छोड़ना था और सम्पूर्ण रूप से ईश्वर और उसके वचन पर समर्पित हो जाना था। उन्हें शुद्ध और पवित्र होना था जैसा सफेद वर्फ होती है। जो लोग इस कडवी सताहट से होकर गुजरेंगे उन्हें ही अनन्त विजय प्राप्त होगी। GCH 117.1

यीशु पृथ्वी पर मन्दिर को आग से शुद्ध करने नहीं आया जैसा कि आनन्द से बाट जोहने वाले लोग चाह रहे थे। वे भविष्यवाणी की घटना का हिसाब करने में तो गलत नहीं कर रहे थे। पर घटना का नामकरण करने में चूककर रहे थे। भविष्यवाणी के मुताबिक समय १८४४ ई० में पूरा हो रहा था। उनकी जो गलती थी वह यह है कि पवित्र स्थान क्या है ? और इसकी शुद्धि कैसे की जाए ? यीशु का महापवित्र स्थान में, समय का पूरा होने पर प्रवेश करने जा रहा था। मैंने फिर उन हतास-नीरस लोगों को देखा तो वे उदास दिखाई दिये। उन्होंने अपना विश्वास की जाँच की और भविष्यवाणी का समय का हिसाब लगाने को दुहराया और फिर भी गलती नहीं मिली। समय तो पूरा हो गया था पर अपना त्राणकर्ता को नहीं पाया। वह गया तो कहाँ गया। GCH 118.1

उनकी उदासी की तुलना उस समय से की जा सकती है जब यीशु कब्र से जी उठा तो उन्होंने उसे वहाँ नहीं पाया. और मरियाम बोलने लगी वे मेरे प्रभु को कहाँ उठा कर ले गये, मैं नहीं जानती कि उन्होंने उसे कहाँ रखा ? स्वर्गदूत आकर बोला कि यीशु जी उठा है और वह गलील गया है। GCH 119.1

मैंने देखा कि यीशु उदास करने वालों को बड़ी सहानुभूति से देखा और उसने दूतों को भेज कर बताया कि वे कहाँ उसे पायेंगे और उसके पीछे चलेंगे। उन्हें समझा दो कि पृथ्वी में पवित्र स्थान अब नहीं है। वह स्वर्ग के महापवित्र स्थान को शुद्ध करने गया है। इस्राएलियों के लिये वहाँ वह विचवाई करेगा और अपने पिता से राज्य प्राप्त करेगा। इसके बाद वह पृथ्वी पर आकर अपने लोगों को ले जायेगा। वहाँ वे सदा उसके साथ रहेंगे। मैंने उस दृश्य को भी देखा जब यीशु विजयपूर्वक गधी का बच्चा पर चढ़कर यरूशलेम गया था। यीशु के चेले सोच रहे थे कि यीशु उस वक्त पृथ्वी पर राज्य करेगा। उन्होंने यीशु को बहुत आनन्द के साथ, साथ दिया था। वे पेड़ की डालियाँ काट कर रास्ते पर बिछा रहे थे और कोई अपने कपड़े भी डाल रहे थे। बहुत जोश के साथ उसके पीछे-पीछे जा रहे थे और साथ में चिल्ला भी रहे थे - होशाना, दाऊद का पुत्र की होशाना बोल रहे थे। धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, उसकी सबसे ऊँचे स्थान में होशाना हो। इस चिल्लाहट से फारसी लोग घबड़ा गये। उन्होंने यीशु को इन्हें चुप कराने को कहा। उसने उन्हें उत्तर दिया यदि वे चुप रहेंगे तो पत्थर इनके बदले चिल्ला उठेगा। जकर्याह की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। मैंने चेलों को निराशा में डूबा हुआ देखा। कुछ समय पहले वे यीशु के क्रूस तक गये थे। वहाँ उन्होंने यीशु को क्रूस पर बड़ी क्रूरता से क्रूसघात करते हुए देखा था। उसकी दयनीय मृत्यु को वे देख चुके थे और उन्होंने उसे कब्र में रखा था। उनका मन शोक से डूबा हुआ था। उनकी आशा यीशु की मृत्यु के बाद खत्म हो चली थी। परन्तु यीशु जी उठ कर अपने चेलों

को दिखाई दिया और उनके साथ रोटी तोड़ी तो उनकी आशा लौट गई। उन्होंने यीशु को खोया था पर पुनः मिल गया। GCH 119.2

मैंने दर्शन में देखा कि १८४४ ई० में जो लोग हतास नीरस हुए थे उसकी तुलना में चेलों का उदास कम था। पहिला और दूसरा दूतों के मुताबिक भविष्यवाणी पूरी हुई। ईश्वर का काम पूरा करने के लिये उन्हें ठीक समय पर संवाद दिया गया। GCH 120.1

आधारित वचन हबक्कूक २:१-३ GCH 120.2

अध्याय 26 - पाठ २६ - दूसरा उदाहरण

मैंने जगत में जागरण के लिये जो काम किया जा रहा था उसे देखा और स्वर्गदूतों के बीच में भी इस काम के लिये खुशी हो रही थी। यीशु के एक बलवन्त दूत को भेज कर जगत के लोगों को चेतावनी दी कि यीशु का दूसरा आगमन के लिये तैयार हो जाएँ। इस महान दूत स्वर्ग में यीशु के सामने रहना छोड़ कर पृथ्वी में उतर आया। उसके आगे-आगे बहुत तेज रोशनी जो महिमा की थी चली। मुझे बताया गया उसे अपनी महिमा की ज्योति से जगत को उजाला कर लोगों को चेतावनी देनी है क्योंकि ईश्वर क्रोधित होकर न्याय करने आ रहा है। बहुतों ने ज्योति पाई। कुछ लोग बहुत गम्भीर थे जबकि दूसरे लोग आनन्द से खुशी मना रहे थे। सब को ज्योति मिली। कुछ लोगों को इसका कुछ प्रभाव न पड़ा। क्योंकि उन्होंने हृदय से ग्रहण नहीं किया था। किन्तु जिन लोगों ने हृदय से ग्रहण किया था, उन्होंने ऊपर देख कर ईश्वर की महिमा की। बहुत लोगों को तो गुस्सा होना पड़ा। पादरी और प्रचारकों ने एक साथ मिलकर एक साथ स्वर्गदूत से ज्योति मिली थी, उसका विरोध I किया। पर जिन्होंने हृदय से ग्रहण किया था, उन्होंने दुनिया की मंडली से अपने आप को अलग कर एकता कायम की। GCH 121.1

शैतान और उसके साथी उन लोगों को खोजने में बहुत व्यस्त दिखाई दिए जिन्हें नयी ज्योति में कम विश्वास था। जिस दल ने ज्योति को त्याग दिया था, उन्हें अधिकार में छोड़ दिया गया। मैंने स्वर्गदूतों को देखा कि वे उन लोगों पर बहुत ध्यान से देख रहे थे जिन्होंने नई ज्योति को ग्रहण किया था और उस पर चल रहे थे। उनके चरित्र के गुण रेकार्ड किताब में लिख रहे थे। बहुत से लोग यीशु पर विश्वास करने और उसके चेले बनने का ढोंग रच रहे थे, पर स्वर्गीय ज्योति के आने पर इन्कार कर रहे थे। उनके नाम स्मरण की किताब से हटाये जा रहे थे। सारा स्वर्ग उदास से भर गया क्योंकि यीशु के नकली चेलों के द्वारा उसे नकारा गया था। GCH 121.2

मैंने विश्वास करने वालों के बीच उदासी देखी थी। क्योंकि वह आशा किया हुआ समय पर नहीं आया। ईश्वर की इच्छा थी कि भविष्य की बात को गुप्त रखें और अपने लोगों को किसी निर्णय पर ले आवें । ऐसा न करने से ईश्वर जो करना चाहता था वह पूरा नहीं होता। शैतान बहुत से लोगों को ईश्वर का ठहराया हुआ समय से बहुत आगे ले जाना चाहता था। यीशु के आने का समय को सुनाया गया तो उसके पहले उससे मिलने के लिये मनों की तैयारी करने की जरूरत थी। जब आने का समय बीत गया तो जिन्होंने दूत के समाचार को नहीं ग्रहण किया था, वे उदास-निराश हुह लोगों पर अपनी हँसी-ठट्ठा की बातों से आक्रमण कर रहे थे। मैंने स्वर्ग में स्वर्गदूतों को यीशु के साथ सलाह करते देखा। उन्होंने यीशु के सच्चे शिष्यों की स्थिति की जानकारी ली। यीशु का आगमन का समय ने बहुतों को जाँचा और परखा जिसमें बहुत लोग नापे गए और घटिया पाये गए। वे बहुत जोर देकर अपने को मसीही कहला तो रहे थे पर उसके सच्चे चेले होने में कई बातों पर चूक गए। शैतान उनकी शोचनीय दशा पर खुशी मनाने लगा। उसने उन्हें अपने काठघरे में

बन्द कर रखे थे। बहुतों को उसने सीधा रास्ता से भटका दिया था। वे टेढ़े मार्ग से स्वर्ग की ओर चढ़ना चाहते थे। दूतों ने पृथ्वी पर पापी-दोषी और सन्त, पवित्र लोगों के साथ मिल कर रहते देखा। सच्चे ईश्वर भक्तों को भी देखा गया पर उन्हें दुष्ट लोग अपनी संगति से बिगाड़ रहे थे। GCH 122.1

जिन के दिल यीशु को देखने के लिये तरस रहे थे, उनको यीशु के नकली चेले मना कर रहे थे कि उसके विषय चर्चा न करें। स्वर्गदूतों ने इन सारे दृश्य को देखा और उन शेष लोगों पर जो यीशु का आगमन को प्रिय जानते थे, सहानुभूति प्रकट की। फिर दूसरा बड़ा दूत को पृथ्वी पर भेजा गया। उसने बड़े जोर से शब्द करते हुए कहा - बाबुल गिर पड़ा, गिर पड़ा। तब मैंने उदास-निराश लोगों को आनन्द से सिर उठाते हुए ऊपर देखा और वे यीशु के आने की आशा देख रहे थे। पर बहुत लोग तो ऐसा दिखाई दिये मानो सो रहे हैं। फिर भी मैंने पता लगाया कि बहुत लोग तो उदास की मार से घायल थे। इन उदास करने वालों को बैबल के द्वारा पता चला कि वे ‘ठहरने की घड़ी में वास कर रहे हैं। उन्हें धीरज धर कर समय आने की बाट जोहना है। जिस साक्षी के द्वारा उन्हें आशा थी कि प्रभु १८४३ ई० में आयेगा। अब वह उन्हें १८४४ ई० में आने की आशा दिलायी। मैंने देखा था कि बहुतों की आशा जितना १८४४ ई० में दृढ़ थी उतनी १८४३ ई० में नहीं थी। उनका उदास ने उनका विश्वास को डूबा दिया। पर जितने उदास-निराश हुए लोग थे, जब एक साथ मिल कर बड़े जोर से दूसरा दूत का संवाद सुनाने लगे तो उनकी रूचि और सुसमाचार का प्रभाव देखने को मिला। दूतों को देखने में आया कि जो लोग यीशु का नाम लेते थे और क्रिश्चियन कहलाते थे, वे उलट कर हताश हुए थे उन पर हँसी-मजाक की बौछार करने लगे। जब हँसी-ठट्ठा करने वालों की बातें विश्वासी लोग सुन कर घबरा रहे थे तो दूतों ने उन्हें सान्तवना देकर कहा कि तुम लोग तो अब तक यीशु के जैसा ठट्टा में नहीं पड़े हो। अतः तुम लोगों को धीरज हारे रहना है। GCH 123.1

मुझे एलिया नबी का स्वर्ग की ओर ऊपर उठा लिये जाने का दर्शन दिखाया गया। एलिया का वस्त्र एलिशा के ऊपर गिरा और दुगुना वरदान मिला। जब वह रास्ते में जा रहा था तो बच्चों ने यह कह कर ठट्ठा किया कि चले जा चान्दवे चले जा ! उन्होंने ईश्वर का ठट्ठा किया और उसकी सजा भुगतनी पड़ी। उन्होंने अपने पिता से सीखा था। सन्त कह कर जिन्होंने इसी मतलब से चिढ़ाया है उसका प्रतिफल तो ईश्वर की ओर से ही दिया जायेगा जैसा इन बच्चों को दिया गया। इस प्रकार की हँसी-ठट्टा को छोटा समझ कर खेल नहीं करना चाहिए। GCH 124.1

यीशु ने तुरन्त एक दूसरा दूत को भेज कर उदास-निराश में डूबे हुए लोगों को धीरज देकर उनके विश्वास को मजबूत कर दूसरा दूत का संवाद को समझने में मदद की। एक दूसरा मुख्य आन्दोलन स्वर्ग में चलाना था। उसके विषय भी बताया। मैंने इन दूतों को यीशु की ओर से बड़ी शक्ति और ज्योति को प्राप्त करते हुए देखा। वे बड़ा काम को पूरा करने के लिए पृथ्वी की ओर आए। जब स्वर्गदूत ने चिल्ला कर कहा कि देखो दूल्हा आता है और उसे भेंट करने निकलो तो ईश्वर के लोगों पर एक बड़ी ज्योति चमकी। उदास-निराशा में डूबे हुए लोगों को जोश मिला और

वे भी दूसरा दूत के साथ बड़े जोर से पुकारने लगे - देखो दूल्हा आता है और उससे मिलने के लिए निकल आओ। स्वर्गदूतों से ज्योति बाहर निकल कर अंधकार का राज्य को दूर कर रही थी। शैतान और उसके दूत इस ज्योति को तथा इसका प्रभाव जो लोगों पर पड़ रहा था उसे रोकने चाह रहे थे। ईश्वर के दूतों से शैतान लड़ते हुए बोल रहा था कि ईश्वर ने लोगों को धोखा दिया है। उनकी शक्ति और ज्योति के साथ भी खेलखाड़ किया है। इसलिये लोगों को विश्वास नहीं दिला सके कि यीशु आ रहा है। शैतान का विरोध करने पर भी ईश्वर के दूत उन्हें उमझाने बुझाने में लगे रहे। जिन्होंने इसे पाया वे बहुत खुश थे। वे स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठा कर यीशु के आने की राह देखने लगे। कुछ लोग तो बहुत उदास थे। वे रो-रो कर प्रार्थना करते रहे, उनकी आँखें तो अपनी ही दशा पर केन्द्रित थी औ स्वर्ग की ओर उठाने का साहस नहीं हो रहा था। GCH 124.2

स्वर्ग से एक बहुमूल्य ज्योति आकर अंधकार को हटा देती है और वे अपनी उदासी आँखों से ऊपर की ओर देखते हैं तो उन्हें सान्तवना मिल जाती है। वे आनन्द से अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। इन प्रतीक्षा करने वाले विश्वासियों को यीशु और उसके दूत सहानुभूति से देखते हैं। GCH 125.1

जिन्होंने पहले दूत के समाचार को इन्कार किया उन्हें दूसरे दूत के समाचार की ज्योति नहीं मिल पाई और इस प्रकार से उसकी शक्ति और महिमा से प्रभावित न हो सके। उस समाचार से भी वंचित हुए जिसमें कहा गया - देखो दूल्हा आता है। यीशु उनसे नाराज हो कर चला गया। उन्होंने उसका संवाद को हल्का जानकर त्याग दिया। पर जिन्होंने संवाद पाया वे महिमा का बादल से घिर गए। ईश्वर की इच्छा को जानने के लिये उन्होंने प्रार्थना की, आशा कर ठहरे रहे। ईश्वर को नाराज करने से डरते थे। मैंने शैतान को देखा कि ईश्वर के लोगों तक ज्योति नहीं पहुँचने के लिए बहुत कोशिश की। पर जब तक वे इसको पसन्द कर पाने के लिए प्रार्थना GCH 125.2

करते रहे तब तक शैतान इसको पाने से रोक नहीं सकता था। ये सदा अपनी आँखें यीशु की ओर लगाए हुए थे। स्वर्ग से जो संवाद उन्हें दिया गया था इससे शैतान और उसके दूतों को गुस्सा आ रहा था। वे लोग जो यीशु को मानते थे, पर उसका आना को इन्कार कर रहे थे, उन्होंने उनको बेइज्जत कर हँसी-ठट्टा भी किया। परन्तु दूत ने उनके ऊपर हरेक अत्याचार, बेइज्जत और अपमान जो किए गए थे उन सब का हिसाब लिख लिया था। बहुत से लोग यह कहते हुए कि देखो दूल्हा जल्द आ रहा है, अपने हठीले भाईयों को छोड़ कर निकल आये। जिन लोगों ने यीशु का आगमन और उसे उन्कार किया था उनसे यीशु ने अपना मुँह फेर लिया। उसने दूतों को हुक्म दिया कि अपने लोगों को अशुद्ध लोगों या अपवित्र लोगों से अलग रखो। ऐसा न हो कि वे भी दुष्टों के साथ रह कर दुष्ट (अविश्वासी) बन लाएँ। जिन्होंने सुसमाचार को सुन कर ग्रहण किया था वे स्वतन्त्र और एकता में थे। उनके ऊपर पवित्र ज्योति चमक रही थी। उन्होंने जगत की मोह-माया को छोड़ दी, उसका बंधन को तोड़ फेंका और धरती से अपना स्नेह उठा लिया। दुनिया की सम्पत्ति का मोह छोड़ दिए और उनकी इच्छा स्वर्ग की ओर लगाई गई। वे अपना प्रिय उद्धारकर्ता की राह

देखने लगे। उनके चेहरों पर पवित्र आनन्द की झलक दिखाई देने लगी। उनके दिलों में आनन्द और शान्ति का राज्य आ गया। यीशु ने अपने दूतों को उन्हें मजबूत करने और स्थिर रखने के लिये भेजा। क्योंकि उनकी परीक्षा की घडी आ रही थी। इनको अब तक वैसी परीक्षा का सामना करना नहीं पड़ रहा था, जैसा होना चाहिये था। वे गलती करने से वंचित भी नहीं हुए थे। जगत के लोगों के लिये चेतावनी भेजने में ईश्वर की करूणा और समझदारी को मैंने देख पाया। बार-बार संवाद भेजकर उसने उन्हें बैबल का गहरा अध्ययन की ओर अगुवाई कर अपनी गलती को समझने का अवसर दिया। इन संवादों के जरिये ईश्वर ने अपने लोगों को अधिक जोर-शोर से काम करने का मौका दिया। उनको पहिले के और दूसरे दूतों के सुसमाचार को प्रचार करने और सब आज्ञाओं को मानने के लिये भी उत्साहित किया। GCH 126.1

आधारित वचन मत्ती २0प्रः६ प्र० वाक्य ३:१४—१६, १८:१, २२:१४

अध्याय 27 - पाठ २७ - पवित्र स्थान

मुझे ईश्वर के लोगों की अत्यधिक निराशा को दिखाया गया। उन्होंने ठीक समय पर यीशु के आने का दिन को नहीं देखा था। उन्हें मालूम नहीं था कि क्यों यीशु उस दिन (२२ अक्टूबर १८४४ ई०) को नहीं आया। उनको यह भी समझना कठिन हो रहा था कि क्यों भविष्यवाणी का वह दिन, उस दिन को अन्त नहीं हुआ। दूत ने कहा क्या ईश्वर का वचन पूरा नहीं हुआ ? क्या ईश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं की ? नहीं! उसने तो अपनी सब प्रतिज्ञाओं की पूर्ति की। यीशु जी उठा। उसने स्वर्ग का पवित्र स्थान का दरवाजा भी बन्द कर दिया था। उसने स्वर्ग का महापवित्र स्थान का दरवाजा खोल कर उस दिन प्रवेश किया था। क्यों कि उसको जगत का महापवित्र स्थान के समान शुद्ध करना था। इस प्रकार स्वर्गदूत ने उनको बताया। जो लोग धीरज से प्रतीक्षा करेंगे वे इस रहस्य को समझेंगे। मनुष्य से गलती हुई पर ईश्वर की ओर से नहीं हुई। है। ईश्वर ने जो प्रतिज्ञा की थी सब पूरी हो गई। मनुष्य गलती से पृथ्वी की ओर देख कर कहने लगा था कि भविष्यवाणी का अन्त अर्थात् यीशु का स्वर्ग छोड़ कर पृथ्वी पर आना होगा। ईश्वर की प्रतिज्ञा असफल नहीं पर मनुष्य की आशा निराशा में बदल गई।

यीशु ने निरूत्साही लोगों को अगुवाई करने के लिये अपने दूतों को भेजा। उन लोगों को महापवित्र स्थान दिखाएँ जहाँ यीशु प्रवेश कर उसको माफ करेगा। इस्त्राएलियों के लिए उद्धार का विशेष काम करेगा। यीशु ने दूतों को बताया कि जिन्होंने उस पर विश्वास किया है वे उसके इस काम को समझेंगे। मैंने देखा कि जब यीशु महापवित्र स्थान में विचवाई का काम करता रहेगा तो वह नया यरूशलेम से शादी करेगा। जब उसका काम महापवित्र स्थान में पूरा होगा तो वह पृथ्वी पर लौट आवेगा और उनको जो उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, उन्हें अपने साथ स्वर्ग में उठा लेगा, जब भविष्यवाणी का समय पूरा हुआ तो क्या घटना हुई, उसे दिखायी गई। तब मैंने देखा कि पवित्र स्थान में यीशु का काम समाप्त हो जायेगा। GCH 128.1

इसके बाद मुझे १८४४ ई०, जब भविष्यवाणी का समय पूरा हुआ तो क्या घटनाएँ हुईं, उसे दिखायी गईं। जब मैंने देखा कि पवित्र स्थान में यीशु का काम समाप्त हुआ तब उसने उसका दरवाजा बन्द कर दिया। तब एक बड़ा अंधकार उन लोगों को आकर घेरा जो उसके विषय सूने थे पर उस के आगमन का संवाद को नहीं माने थे, वे खो गए। इसके बाद यीशु ने दामी वस्त्र पहन लिया। उसके वस्त्र के नीचे चारों ओर घन्टी और अनार के समान बेल-बूटे लगे हुए थे। अपने कन्धे से छाती तक चंगाई के काम करने का एक पटुका लटकाया हुआ था। जैसे वह चलता था तो हीरा के समान चमकता था। अक्षरों को बड़ा करके दिखाता था। जो लिखित नाम के समान दिखाई देता था या पटुका पर खोदा हुआ सा लगता था। जब वह अपने सिर को पूर्ण रूप से सजाता था तो ऐसा लगता था कि मुकुट पहना है। दूत लोग उसके चारों ओर घेरे हुए थे। एक जलता हुआ रथ गाड़ी से वह पवित्र स्थान का दूसरा खाना (भाग) में जा पहुँचा। तब मुझे कहा गया कि इस पवित्र

स्थान के दोनों भागों को गौर से देखने को परदा और दरवाजा खोल दिये गए और मुझे वह प्रवेश करने कहा गया। पहिला भाग में मैंने सात मोमबत्तियों को टेबल पर रखी हुई देखी। यह तो बहुत ही गौरवपूर्ण थीं। वहाँ पर मैंने दिखावे या भेंट की रोटी देखी और धूप जलाने की बेदी और धूप-धुवान चमक रही थी। वे सब उसकी परछाईं को दिखा रहीं थी जो वहाँ घुसा था। इन दो भागों के बीच का परदा भी बहुत ही गौरवमय था। यह विभिन्न रंगों और द्रव्यों से मढ़ा हुआ किनारे का पाड़ भी बहुत ही सुन्दर था। पाड़ पर सोने का काढ़ा हुआ दूतों को दिखाती थी। परदा खोला गया तो मैंने दूसरा भाग की ओर झांका। मैंने वहाँ सोने से बना हुआ बहुत सुन्दर सन्दूक को रखा देखा। सन्दूक के ऊपर से नीचे छोर तक ऐसा सोना की कारीगरी थी कि यह एक मुकुट जैसा दीख रहा था। हाँ! यह तो चोखा सोना से बनाया गया था।

सन्दूक के अन्दर इस आज्ञा की दो पट्टियाँ रखी हुई थीं। इसकी दोनों छोर पर एक-एक कारूब थे जो अपने एक-एक डैने उसके ऊपर पसारे हुए थे। उनके डैने ऊपर की ओर उठे हुए थे और जैसे ही यीशु सन्दूक के नजदीक आया तो उनके दो डैने उस के सिर को ऊपर से स्पर्श कर रहे थे। वे कारूब आमने-सामने खड़े होकर नीचे सन्दूक को देख रहे थे। इससे यह प्रगट हो रहा था कि सब स्वर्गदूत दस आज्ञा को बडी रूचि के साथ देख रहे थे। दोनों कारूब के बीच में एक सोना का बर्तन था। जैसे ही विश्वासी सन्तों की प्रार्थना यीशु के पास पहुँचती है तो यीशु उन्हें अपने पिता के पास पहुँचा देता है और उस बर्तन से मधुर सुगन्ध ऊपर उठने लगती है। वह खूब सुन्दर धुवाँ के सादृश्य दिखाई देता था। यीशु जिस जगह पर खड़ा था, उसके सामने सन्दूक था और वहाँ से बहुत तेज जलती हुई बत्ती निकलती थी जिसको मैं देख न सकी क्योंकि आँखें चौंधिया जाती थी। यह ईश्वर का सिंहासन जैसा दिखाई दिया। जैसे ही यह सुंगध धुवाँ ईश्वर पिता के पास पहुँचा तो पिता ने तुरन्त इसे यीशु के पास भेज दिया। फिर यीशु ने इसे प्रार्थना करने वालों तक पहुँचा दिया जो मधुर सुंगध के समान थी। प्रकाशमय महिमा यीशु के ऊपर अत्यधिक रूप से पड़ी। यह दया का सिंहासन के ऊपर छा कर सारा पवित्र स्थान को महिमा की ज्योति से भर दिया। मैं इस महिमा की ज्योति को देखने से अपने को रोक ली। इस महिमा का वर्णन करना कठिन है। इसके लिये कोई भाषा में शब्द नहीं मिलेंगे। मैं इस सौन्दर्य में घिर गयी और इस दृश्य की महानता और महिमा से अलग कर दी गई। GCH 129.1

मैंने पृथ्वी का पवित्र स्थान को भी देख पाया जिसमें दो भाग थे। मैंने इसका स्वर्ग का पवित्र स्थान से तुलना कर देखा तो एक सा था। मुझे बताया गया कि पृथ्वी का पवित्र स्थान या पवित्र तम्बू तो स्वर्ग का पवित्र स्थान के स्वरूप में ही बनाया गया था। पृथ्वी का पवित्र स्थान में जो समान रखे गए थे ठीक वैसा ही स्वर्ग का पवित्र स्थान में भी रखे गये हैं। जब परदा उठाया गया तो मैंने देखा कि वहाँ पर भी पृथ्वी का महा पवित्र स्थान में जो सामान थे वहाँ भी हैं। पृथ्वी का पवित्र स्थान के दोनों भागों में याजक सेवकाई के काम करते थे। पहिला भाग प्रत्येक दिन सेवकाई का काम करता था और दूसरा भाग में वर्ष में सिर्फ एक दिन सेवकाई का काम करने या पवित्र स्थान को शुद्ध

करने के लिये प्रवेश करता था, जहाँ (पहिला भाग में) लोगों के पाप रखे रहते थे। मैंने देखा कि यीशु ने दोनों भागों में सेवकाई के काम किये। उसने महापवित्र स्थान में अपना ही लोहू लेकर प्रवेश किया। पृथ्वी के याजकों को तो अपनी सेवकाई के कामों से मृत्यु के कारण छुट्टी मिल जाती थी पर यीशु तो सदा सर्वदा का महायाजक बना रहेगा। बलिदान और भेंट इस्त्राएलियों के द्वारा पृथ्वी का पवित्र स्थान में लाये जाते थे। वे सब आने वाला मसीह का गुण को दिखाते थे। ईश्वर का ज्ञान ने इस विशेष प्रकार का काम हमें दिया था जिसके द्वारा हम पीछे की ओर मुड़ कर देखते हैं और स्वर्ग का महापवित्र स्थान में यीशु इसी प्रकार का काम करता है, उसको समझने में मदद मिलती है। GCH 131.1

जब यीशु क्रूस पर मर रहा था, उस वक्त उसने चिल्ला कर पुकारा कि ‘पूरा हुआ और मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट कर दो भाग में बँट गया। इसका मतलब यही था कि मन्दिर की सेवकाई विधि सदा के लिये बन्द हो गई। ईश्वर फिर बलिदानों को ग्रहण करने के लिये इस्त्राएलियों से मन्दिर में भेंट नहीं करेगा। उस वक्त यीशु ने अपना लोहू बहाया। उसी लोहू के द्वारा वह स्वर्ग का महापवित्र स्थान में सेवकाई का काम पूरा करेगा। जैसा पृथ्वी का महायाजक साल में एक बार महापवित्र स्थान में प्रवेश कर मन्दिर को शुद्ध करता था उसी प्रकार यीशु भी स्वर्ग का महापवित्र स्थान में, दानियेल ८:१० की भविष्यवाणी के आधार पर, २३०० दिन के अन्त में १८४४ ई० में स्वर्ग का महापवित्र स्थान में प्रवेश किया और लोगों के लिए प्रायश्चित का काम कर मन्दिर को शुद्ध कर रहा था। GCH 132.1

आधारित वचन यिर्मयाह ३:१४, इब्रानी १ प्रकाशित वाक्य ३८, ४:१-२१:२ GCH 132.2

अध्याय 28 - पाठ २८ - तीसरे दूत के समाचार

जैसे ही यीशु की सेवकाई पवित्र मन्दिर का पहला भाग में समाप्त हुई तो यीशु दूसरा भाग यानी महापवित्र स्थान में प्रवेश कर ईश्वर की आज्ञा जिस सन्दूक में रखी गई थी ठीक उसके सामने खड़ा हुआ। इसी प्रकार ईश्वर ने पृथ्वी पर तीसरा दूत को समाचार देने भेजा। उसने स्वर्गदूत के हाथ में कागज रख दिया। वह बड़ी महिमा और शक्ति के साथ पृथ्वी पर उतर आया और बहुत ही डरावना संवाद दिया जो मनुष्य ने कभी नहीं सुना था। यह संवाद तो ईश्वर के लोगों की रक्षा करने सम्बन्धी था। परीक्षा की घड़ी और क्रोध का समय उनके सामने है, उसकी चेतावनी थी। स्वर्गदूत ने फिर आगे कहा कि वे पशु और उसकी मूरत की पूजा करें। इसके बीच में उन्हें घोर संघर्ष या युद्ध करना पड़ेगा। अनन्त जीवन पाने का एक मात्र जरिया उनके लिये यही होगा कि वे अपने विश्वास में स्थिर रहें। यद्यपि उनके जीवन के लिये खतरा है फिर भी उन्हें सच्चाई पर स्थिर रहना होगा। इन वचनों से तीसरा दूत ने अपना संवाद अन्त किया “सन्तों का ८ Tीरज इसी में है जो ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करते और यीशु पर विश्वास रखते हैं” (प्र.वा.१४:१२) इन शब्दों का उच्चारण कर उसने स्वर्गीय महापवित्र स्थान की ओर संकेत किया। जिन्होंने इस संवाद को ग्रहण किया उनके मनों को महापवित्र स्थान की ओर संकेत किया जहाँ यीशु दया का सिंहासन के सामने खड़ा था। वहाँ वह उन लोगों की विचवाई कर रहा है जिनके पाप क्षमा नहीं हुए हैं और जिन्होंने आज्ञाओं को तोड़ा है। प्रायश्चित का यह काम मरे और जीवित दोनों प्रकार के धार्मिक लोगों के लिये कर रहा है। यीशु उनके लिये भी प्रायश्चित का काम कर रहा है जो उसकी आज्ञा पाये बिना मरे यानी अनजान से मर गए हैं। GCH 133.1

जब यीशु ने महापवित्र स्थान का दरवाजा खोला तो सब्त की सच्चाई का प्रकाश दिखाई दी। इसके द्वारा ईश्वर के लोगों की जाँच होगी। ईश्वर ने प्राचीन काल में इस्त्राएलियों के बच्चों को इसके द्वारा परखा। GCH 134.1

मैंने तीसरा दूत को देखा जो निराश हो गए थे। उन्हें स्वर्ग का महापवित्र स्थान की ओर इशारा कर दिखा रहा था। उन्होंने विश्वास से यीशु को महापवित्र स्थान में सेवकाई का कार्य करते हुए देखा। यीशु को देखकर उनके मन में आनन्द और आशा की नई किरणें उग आईं। मैंने उन्हें बीती हुई घटनाओं को दुहराते हुए देखा। वे यीशु मसीह का दूसरा आगमन से लेकर १८४४ ई० तक जो सुसमाचार सुना रहे थे उसका अवलोकन कर रहे थे। उनके निराश होने का कारण को विस्तार से समझाया गया। इसके बाद उनका आनन्द को नवीकरण किया गया यानी उनका आनन्द लौट आया। तीसरा दूत ने उनका बिता हुआ अनुभव में रोशनी डाली, भविष्य की बात को खोल दिया। इस तरह से वे जान गए कि ईश्वर अद्‌भुत रीति से उनकी अगुवाई की। GCH 134.2

मुझे दिखाया गया की शेष विश्वासी लोगों ने यीशु को महापवित्र स्थान में सन्दूक के सामने और दया का सिंहासन के पास खड़ा देखा। वे उसकी बड़ाई कर रहे थे। यीशु ने वहाँ सन्दूक खोला

तो देखा कि दस आज्ञाओं की दो पट्टियाँ रखी हुई थीं। उन्होंने वहाँ एक ताज्जुबी चीज देखी। चौथी आज्ञा के ऊपर और दूसरी नौ आज्ञाओं से अधिक रोशनी पड़ रही थी। सारी आज्ञाओं के चारों ओर महिमा की रोशनी पड़ रही थी पर चौथी आज्ञा पर सबसे ज्यादा थी। उन्होंने वहाँ ऐसा कुछ भी संकेत नहीं पाया कि चौथी आज्ञा उठा दी गई या उसे सातवाँ से पहिला दिन में बदली कर दी गई है। बादलों के गर्जन और बिजली की चमक के बीच ईश्वर का महान, अद्‌भुत और डरावना हाथों के द्वारा ये दस आज्ञाएँ दो पट्टियों पर लिखी गई थी और मूसा के द्वारा इस्त्राएलियों को दी गई थी। उसमें जो लिखी गई बातों को हम इस प्रकार पढ़ते हैं - छः दिनों तक तू परिश्रम कर सब प्रकार के कामों को करना लेकिन सातवाँ दिन मत करना। क्योंकि यह तुम्हारे प्रभु परमेश्वर का सब्त दिन है। दस आज्ञाओं को वहाँ बहुत ही हिफाजत से रखी गई थी उसे देख कर लोग आश्चर्य करने लगे। उन्होंने उसे ईश्वर के पास सुरक्षितपूर्वक रखी हुई देखी। वह ईश्वर की पवित्र छाया से ढाँकी हुई थी। उन्होंने देखा कि पट्टियों की चौथी आज्ञा को लोग रौंद रहे थे यानी यहोवा का दिया हुआ सातवाँ दिन का सब्त को न मान कर हिन्दुओं और पोप के लोगों के द्वारा घोषित किया हुआ सब्त याने सप्ताह का पहिला दिन को मान रहे थे। वे ईश्वर के सामने नम्रता से झुक कर सब्त तोड़ने के कारण विलाप करने लगे। GCH 134.3

यीशु ने जब इनका पश्चात्ताप की प्रार्थना पिता के पास पहुँचाया तो वहाँ धूप-धुवान जलाने का बर्तन से धुंवा निकलने लगा। मैंने उसे देखा। जब धुंवा हट रहा था तो यीशु की दया का सन्दूक के ऊपर और प्रार्थना करने वालों के ऊपर एक तेज ज्योति उतरती हुई दिखाई दी। ये प्रार्थना करने वाले इसलिये दुःखित थे कि उन्होंने ईश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया था। पर अब उनके पाप क्षमा हुए। वे आशिष के भागी हुए। तब उनके चेहरों में आनन्द की रोशनी दिखाई देने लगी थी। GCH 135.1

उन्होने तीसरा दूत के साथ मिल कर गम्भीर चेतावनी का संवाद दिया। प्रारम्भ में तो कुछ ही लोगों ने ग्रहण किया परन्तु वे हतास न हो कर जी जान से प्रचार करते रहे। इसके बाद मैंने देखा कि बहुत लोग इसमें शामिल होकर एक साथ तीसरा दूत का संवाद सब जगह प्रचार करने लगे। उन्होंने ईश्वर को पहिला स्थान देकर उसका पवित्र किया हुआ सब्त को मानने लगे। GCH 135.2

बहुत लोगों ने तीसरा दूत का संवाद को तो अपनाया पर पहले दो दूतों के संवाद का कुछ भी अनुभव नहीं था। शैतान इसे जानता था और उसने उन्हें भटकाने की कोशिश की। परन्तु तीसरा दूत इन्हें स्वर्ग का महापवित्र स्थान की सेवकाई को दिखा रहा था और वे लोग भी जिन्हें पहले अनुभव हो चुका था। इसी ओर इशारा कर रहे थे। बहुतों ने इन दूतों के समाचार में सिलसिलेवार देखा और आनन्द से सत्य को ग्रहण करने लगे। उन्होंने इन संवादों को सिलसिलेवार रूप से अपना कर स्वर्गीय पवित्र स्थान में यीशु की सेवकाई को ग्रहण किया। ये समाचार जहाज का लंगर के समान हमारे लिये भी है, बोल कर दिखाया गया। अब लोग इसे ग्रहण कर लेते हैं तो समझ जाते हैं और शैतान की भरमाहट परीक्षा से भी अपने को बचा लेते हैं। GCH 136.1

सन् १८४४ ई० का भयानक निराशा के बाद शैतान और उसके दूत मसीहियों का विश्वास को डगमगाने के लिए बहुत कोशिश करने लगे। जिन लोगों ने अपने जीवन में इनकी अभिज्ञाता प्राप्त की थी उनके मनों को फुसलाने-बहकाने का काम कर रहे थे। वे अपने को नम्र बना कर दिखा रहे थे। पहले और दूसरे दूतों के समाचार को बदल कर इसे भविष्य में पूरा होने की चर्चा कर रहे थे। फिर दूसरे लोग इस को बहुत दिन पहले बीती हुई घटना बता रहे थे। ये ऐजेंट लोग अनुभव से गुजरे हुए लोगों के मन को डाँवाँ-डोल कर उनके विश्वास को डगमगा रहे थे। कुछ लोग तो बाईबिल को ढूँढ़-ढाँढ़ कर अपना विश्वास को स्थिर करने में लग हुए थे और खुद खड़े रहना चाहते थे। इसमें शैतान बहुत खुश था। वह जानता था कि लोग सत्य का लंगर को छोड़ चुके हैं उन्हें विभिन्न प्रकार की त्रुटियों, कमियों को दिखाकर उन्हें सिंद्धान्तों की हवा में उड़ा कर ले चलें। GCH 136.2

जो लोग पहिला और दूसरा दूतों का संवाद को ग्रहण कर उसके अनुसार चल रहे थे वे शैतान की इस चालाकी से दूर रहे। पर जिन्हें अनुभव नहीं था वे शैतान के भ्रम रूपी जाल में फंस गए। इस प्रकार इस मसीही झुंड में दो दल हो गए। मैंने विलियम मिल्लर को अपने लोगों की इस दशा पर उदास-निराश होकर सिर झुकाए बैठा देखा। मैंने देखा कि जो दल १८४४ ई० में एक दूसरे से प्रेम कर एकता के बंधन में थे, वे अपना प्रेम को छोड़कर एक दूसरे के विरूद्ध बातें करने में लगे। इस का नतीजा यह हुआ कि वे नीचे अंधकार में गिर गए। शोक के कारण अपनी शक्ति खो चुके थे। तब मुझे यह दिखाया गया कि उस समय के अगुवे क्या विलियम मिल्लर को तीसरे दूत का समाचार पर स्थिर देखकर ईश्वर की आज्ञाओं को मानते देख रहे हैं या नहीं। उन लोगों ने देखा कि वह स्वर्ग की ज्योति की ओर झुक रहा है तो वे उसका मन को भटकाने लगे। मैंने देखा कि मनुष्य का प्रभाव उसको अंधकार में रखने की चेष्टा कर रहा था। वे उसे अपने साथ रखना चाहते थे। पर विलियम मिल्लर की जीवनी जिसे जेम्स ह्वाईट ने लिखी यह कहता है - "मैं आशा करता हूँ कि मैंने अपना वस्त्र यीशु के लोह से धो डाला है। जहाँ तक मैं महसूस करता हूँ कि मैंने अपनी लियाकत या क्षमता से लोगों का दोषारोपण से अपने को मुक्त कर लिया है।" ईश्वर से इस व्यक्ति ने कहा - "यद्यपि मैं दो बार निराशा से घिरा हुआ था फिर भी मैं अब तक सम्पूर्ण रूप से निराश नहीं हुआ था और न फेंका हुआ के समान अपने को समझा"। GCH 137.1

"यीशु के आगमन में मेरी आशा शुरू से ही स्थिर है, कभी नहीं डगमगाया है। मैंने बहुत वर्षों के गम्भीर सोच विचार से ही इसे स्थिर रखा है, मैंने ऐसा कर अपनी गम्भीरता समझी । यदि मुझ से कुछ गलती हुई भी है तो वह अपने भाईयों को प्रेम करने में और ईश्वर के प्रति अपनी कर्तव्य निवाहने में।" एक बात मैं जानता हूँ कि जिस पर मैंने विश्वास किसा उसी का प्रचार भी किया। ईश्वर भी मेरे साथ था। उसकी शक्ति प्रचार के काम में थी और इससे अच्छाई के लिए बहुत प्रभाव डाला गया। इस प्रचार के दौरान बहुत से लोगों को बाईबिल का अध्ययन करने के लिये प्रेरणा दी गई, उसके जरिये, विश्वास से, और यीशु के लोहू के छिड़काये जाने के कारण ईश्वर के साथ समझौता हुई। (प्लिस पृ० २५६, २५५, २७७, २८०, २८१) मैं घमंडियों के मजाक का पक्ष नहीं

करता था और जब दुनिया हमारे विरूद्ध उठी तो उससे भी नहीं डरा। मैं न उनके पक्ष में हूँगा और न मैं अपना कर्तव्य से भी नहीं भागूंगा और उन्हें चिढ़ाने का अवसर न हूँगा। मैं अपना जीवन को उनके हाथ में कभी न डालूंगा और न झुलूंगा, इसको (जीवन) खोने के डर से, मैं आशा करता हूँ कि ईश्वर अपना अच्छा प्रबन्ध से ऐसा ही करे। जेम्स ह्वाईट, विलियम मिल्लर की जीवनी पृष्ठ ३१५ - GCH 138.1

आधारित वचन निर्गमन २०:८-११, मत्ती ५:१८, २४:२० प्रकाशित वाक्य १४:९

अध्याय 29 - पाठ २९ - एक मजबूत बेदी

मैंने एक मजबूत संगठित दल को देखा जो विश्वास में दृढ़ थे। वे उनको नजदीक आने नहीं दे रहे थे जो विश्वास में अस्थिर होकर डगमगा रहे थे। ईश्वर ने इनके विश्वास को ग्रहण किया था। मुझे तीन कदम दिखाये गए - पहिला, दूसरा और तीसरा दूत के समाचार थे। दूत ने कहा - हाय! उस व्यक्ति को जो इस संवाद को रोके या उसको बिगाड़े। इस संवाद को सच्चे रूप से समझने का अर्थ ही प्रमुख है। मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य उस पर निर्भर करता है जिस प्रकार से वह संवाद पाता है। मैं इस संवाद के द्वारा नीचे उतारा गया और देखा कि लोगों में अपना अनुभव कितना दाम देकर खरीदा था। बहुत दुःख और संघर्ष उठा कर उन्हें प्राप्त हुआ था। धीरे-धीरे ईश्वर ने उन्हें आगे अगुवाई कर एक ठोस मजबूत चबूतरा (बेदी) पर ला कर खड़ा किया। मैंने फिर देखा कि लोग वहाँ पहुँचे और चबूतरा पर चढ़ने के पहले उसकी नींव की जाँच की। कुछ लोगों ने तो बड़ी खुशी से मंच पर प्रवेश किया। दूसरों ने उसकी नींव की आलोचना कर इसमें कुछ गलती दिखाई। उन्होंने चाहा की इस में सुधार हो ताकि दूसरे लोग भी आवें और खुश हों। कुछ लोग तो तर्क की, इसकी जाँच की और इसमें गलती दिखा कर इसकी नींव जो डाली गई है उसे गलत कहा। मैंने देखा कि करीब सभी लोग जो चबूतरा में मजबूती से खड़े थे, मिलकर वो इसकी शिकायत कर रहे थे, उन्हें चेतावनी दी। उन्होंने इसे ईश्वर का अद्‌भुत काम कह कर स्वीकार किया जिसने उन्हें मजबूत चबूतरा (सच्चाई की नींव) पर ला खड़ा किया है। सब अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठा कर एक स्वर से ईश्वर की महिमा के गीत गाये। इसका प्रभाव उनलोगों पर पड़ा जिन्होंने शिकायत कर चबूतरा छोड़ा था। वे फिर आकर ऊपर उठे। GCH 139.1

मुझे यीशु के पहला आगमन की पुकार की ओर दिखाया गया। यूहन्ना बपतिस्मा देनेहारा को एलिया नबी की आत्मा और शक्ति से यीशु के आने की तैयारी करने भेजा गया था। जिन लोगों ने यूहन्ना की गवाही को ग्रहण नहीं किया था वे लोग यीशु की शिक्षा का भी कोई फायदा नहीं उठा सके। यीशु को मसीह कह कर स्वीकार की पुकार का विरोध करने में उन्हें बहुत कठिन लगा। यूहन्ना का संवाद को इनकार करने से शैतान ने उन्हें और भी दूर भटका दिया, जिससे वे उसको क्रूस पर चढ़ाने से भी नहीं हिचके या रूके। ऐसा करने के द्वारा वे ऐसी परिस्थिति में पड़े जिससे पेन्तीकोष्ट के दिन उन्हें पवित्रात्मा नहीं मिला और उसकी आशिष से भी वंचित रह गए तथा स्वर्ग का पवित्र स्थान के विषय भी शिक्षा नहीं मिली। मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो भागों में विभक्त हो जाने का अर्थ था कि अब यहूदियों की बिलदान करने की विधि को ईश्वर ग्रहण नहीं करेगा। महान बलिदान चढ़ाया गया और उसे ग्रहण भी किया। पेन्तीकोष्ट के दिन चेलों पर पवित्रात्मा उतर कर उनके मनों को पृथ्वी का महापवित्र स्थान से स्वर्ग का महापवित्र स्थान की ओर अगुवाई कर ले गया। यीशु अपना लोहू लेकर उसमें घुस गया और अपना बहाया हुआ लोहू से चेलों को अभिषिक्त कर उनका प्रायश्चित का काम किया। यहूदी लोग अब पूर्ण धोखा और अंधकार में पड़ गए हैं। उद्धार के लिये जो उन्हें ज्योति मिलनी चाहिए उसे उन्होंने खो दी है। अब

तक वे अपना मेम्ने का बलिदान चढ़ा कर व्यर्थ की विधि पर विश्वास कर रहे थे। पवित्र स्थान में यीशु की विचवाई से उन्हें कुछ लाभ नहीं मिलेगा। स्वर्ग का पवित्र स्थान की विधि को पृथ्वी पर का पवित्र स्थान में पूरा किया जाता था। अभी स्वर्ग का पवित्र स्थान के विषय उन्हें कुछ ज्ञान नहीं था। GCH 140.1

यहूदियों ने यीशु को इन्कार कर उसे क्रूस पर चढ़ाया इसे बहुत लोग भयानक दृष्टि से देखते हैं। जब वे यीशु का तिरस्कृत कहानी को पढ़ते हैं तो वे सोचते हैं कि खीस्त को वे प्रेम करते हैं और पतरस जैसा इनकार नहीं किये हैं और न उसे यहूदियों की तरह क्रूस पर चढ़ाये हैं। परन्तु ईश्वर ने उसके पुत्र पर जो उनके द्वारा सहानुभूति प्रकट की गई है उसे देखा है और साबित भी किया है कि उसे प्यार करने का कैसा स्वांग या ढोंग रचा गया है। GCH 141.1

सुसमाचार को ग्रहण करने वालों के प्रति सारा स्वर्ग ऊपर से बहुत विकल होकर देखता है। बहुत लोग जो यीशु से प्रेम करने का स्वांग रचते हैं और उसके क्रूसघात की कहानी को पढ़ कर आँसू भी बहाते हैं, वे इस संवाद को ग्रहण करने के बदले गुस्सा होते हैं। और यीशु का आने का सुसमाचार का मजाक उड़ाते हैं। वे कहते हैं यह भ्रम है। जो उसके आने की बाट जोहते हैं उनसे शामिल नहीं होते हैं। उन्हें घृणा करते हैं। उनको मंडली में भी शामिल नहीं करते हैं। जिन्होंने पहिला दूत का संवाद को इनकार किया था, उन्हें दूसरा दूत का संवाद से कुछ फायदा नहीं मिला। वे आधी रात की पुकार का संवाद से भी फायदा नहीं उठा सके। इस संवाद को यदि वे ग्रहण करते तो उन्हें यीशु का महापवित्र स्थान की सेवकाई से फायदा होता था। दो दूतों के सुसमाचार को नहीं ग्रहण करने से उन्हें तीसरा दूत के समाचार का भी कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि यह तो महापवित्र स्थान में सब के लिये प्रायश्चित का काम करता है। मैंने दूसरे नाम धराई मंडलियों को देखा कि इन्होंने भी इस संवाद का क्रूसघात किया याने इनकार किया जैसा यहूदियों ने यीशु को क्रूसघात किया था। इसलिये यीशु स्वर्ग का महापवित्र स्थान में प्रवेश किया है, उसका इन्हें कुछ ज्ञान नहीं है। इस तरह से वहाँ यीशु जो मध्यस्था (विचवाई) का काम कर रहा है, उसे उनको भी कुछ फायदा होने वाला नहीं है। जैसे यहूदी लोग व्यर्थ अपना बलिदान चढ़ा रहे हैं वैसा ही ये लोग भी पवित्र स्थान का पहिला भाग में व्यर्थ प्रार्थना रूपी बलिदान चढ़ा रहे हैं। यीशु पहिले ही इस स्थान को छोड़ चुका है। शैतान, इन नाम धराई क्रिश्चियनों की दशा को देख कर हँसता है, उन्हें अपने भ्रम का जाल में हँसा चुका है। उन्हें धार्मिक चरित्र पहनने का झूठा आश्वासन देकर अपना बना लिया है। अपनी शक्ति से वह उन्हें आश्चर्य काम कराता और चिन्ह भी दिखलाता है। ये सब झूठा ताज्जुबजनक काम हैं। किसी को यह इस रीति से और किसी को दूसरी रीति से ट्गता है। विभिन्न लोगों को विभिन्न भ्रमक वस्तुओं से ट्गता हैं। किसी एक धोखा को वे डरावना देखते हैं तो दूसरा को ग्रहण कर लेते हैं। किसी को प्रेतवाद (यानी मरा हुआ व्यक्ति से बात कर सकना) से ठ्णता है। किसी के पास वह ज्योति का दूत के समान आ कर ठगता है और अपना प्रभाव चारों ओर फैलाता है। मैंने झूठा धर्मसुधार का काम को चारों ओर फैलते हुए देखा। मंडलियों को जागृति

में लायी गई और लोग सोचने लगे कि ईश्वर उनके बीच में अद्‌भुत रीति से काम कर रहा है जबकि ईश्वर नहीं पर दूसरी आत्मा काम करती है। इसका अन्त हो जायेगा और अन्त में मंडली को पहले से भी बुरी गति में छोड़ दी जायेगी। GCH 141.2

मैंने देखा कि इस एडवेंटिस्ट मंडलियों में भी कुछ लोग नाम के लिये क्रिश्चियन हैं। नामधराई कलीसिया या गिरी हुई मंडली में भी कुछ सच्चे पादरी प्रचारक हैं जिन्हें ईश्वर का क्रोध I रूपी प्याला को उंडेला जाने के पहले बुला लाना है, कदाचित वे इस सच्चाई को ग्रहण कर सकें। शैतान को मालूम है कि तीसरा दूत का संवाद जोर से पुकारे जाने के पहले इनमें ६ रार्मिक उत्तेजना या जागरण उत्पन्न कर उन्हें जिन्होंने पहले सच्चाई को त्याग दिया था, उनके मन में भ्रम डालेगा कि ईश्वर हमारे साथ है। वह सच्चे भक्तों को ठगने की आशा करता है। उन्हें अगुवाई करेगा और सोचवायेगा कि ईश्वर उनके साथ मंडली में काम कर रहा है। परन्तु उसका यह धोखेबाज काम अधिक देर तक ठहर न सकेगा। सच्चाई की ज्योति बहुत तेज चमकेगी और जो लोग ईश्वर की सच्चाई की खोज में या सच्ची मंडली की खोज में हैं वे उन गिरी हुई, पतित मंडली से निकल कर शेष मंडली में या एडवेंटिस्ट मंडली में शामिल होंगे। GCH 143.1

आधारित वचन प्रकाशित वाक्य २२:१६-२१ GCH 143.2

अध्याय 30 - पाठ ३० - प्रेतवाद

मैंने भ्रम पैदा करने वाली चालाकी शैतान में देखा। शैतान को यह शक्ति या क्षमता प्राप्त है कि वह मरे हुए मित्र या परिजनों के रूप को हमारे सामने लाकर उपस्थित कर दें। वह उन मरे हुए मित्रों या सम्बन्धित लोगों को ऐसी स्थिति में दिखायेगा, उनसे उन्हीं के स्वर में बात करायेगा जब वे जीवित दशा में थे। ऐसा लगेगा कि हम उनसे बात कर रहें। हैं। ये सब काम तो दुनियाँ के लोगों को ठगने का है और इस भ्रम-जाल में फँसा कर उस पर विश्वास करवाना है। GCH 144.1

मुझे बताया गया कि ऐसी स्थिति में ईश्वर के लोगों को वर्तमान सच्चाई सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। उन्हें बाईबिल से यह ज्ञान हासिल कर लेना चाहिए। मृतकों की दशा से उन्हें पूरा परिचित रहना है। क्योंकि शैतान की आत्मा उनके सामने, उनके सगे-सम्बन्धी और मित्रों के रूप में हाजिर होगी और बातें करेंगी। वे भरसक अपनी शक्ति से सहानुभूति प्रगट कर उनके सामने आश्चर्य कर्म भी करेंगे और कहेंगे उसे कर दिखायेंगे। ईश्वर के लोगों को इनका सामना बाईबिल की बातों से करना चाहिये। क्योंकि इसमें कहा गया है कि मरे हुए लोग कुछ भी नहीं जानते सभोपदेशक ९:५ ऐसा काम करने वाला तो भूत और शैतान ही है। GCH 144.2

मुझे दिखाया गया कि हमें अपनी आशा और विश्वास की नींव को ठीक से पहचानना है। इस का कारण हमें बाईबिल से देना होगा। इस प्रकार की भ्रमक शिक्षा को हम फैलते देखेंगे। इसका हमें खुल कर विरोध करना है। जब हम तैयार नहीं रहेंगे तो जाल में फंस कर उसके अधीन हो जायेंगे। हमारे सामने जो इस तरह के भ्रमित विश्वास लाये जायेंगे तो उसका सामना करने के लिये हमें सदा तैयार रहना चाहिए। यदि ऐसा करेंगे तो ईश्वर अपनी शक्तिशाली भुजाओं से हमारी रक्षा करेगा। हमारे ठगे जाने और शैतान के द्वारा लिए जाने के पहले ईश्वर स्वर्ग से दूतों को भेज कर हमारे चारों ओर घेरा डाल कर बचा लेगा। GCH 144.3

मुझे दिखाया गया है कि यह भ्रम बहुत जल्दी चारों ओर फैलता जा रहा है। इसका फैलाव को मुझे बिजली से चलती हुई रेलगाड़ी के समान दिखाया गया है। GCH 145.1

दूतों ने मुझे बताया कि सावधानी से देखो। तब मैंने आँख उठा कर उस रेलगाड़ी की ओर देखा। ऐसा दिखाई दिया कि दुनिया के सब लोग उस पर सवार हुए हैं। उसने मुझे दिखाया कि इस गाड़ी का चालक अच्छा आदमी की तरह दिखाई दिया जिसे देख कर सब यात्री आदर करने लगे। मैं ताज्जुब होकर अपने रखवाला दूत से पूछने लगी कि यह कौन है ? तब उत्तर मिला - यह कोई दूसरा व्यक्ति नहीं पर शैतान है। वह ज्योति-दूत के रूप में ड्राईवर या चालक है। उसने दुनिया को कैद कर लिया है। वे शैतान के बहुत भारी भ्रम में पड़ गए हैं। वे उस पर विश्वास कर रहे हैं। वे विनाश की ओर जा रहे हैं। उसके ऐजेन्ट लोग इसके बाद दूसरा नम्बर में आते हैं वे इंजीनियर हैं। इसके दूसरे एजेन्ट लोग उसकी जरूरत के मुताबिक दूसरे कार्यालयों में हैं। ये सब

के सब बिजली की गति से विनाश या नरक की ओर जा रहे हैं। मैंने स्वर्गदूत से पूछा - क्या कोई नहीं बचा है, जो नहीं जा रहा है ? उसने उत्तर दिया - इसके विपरीत दिशा की ओर देखो। तब मैंने एक छोटा दल (झुंड) को संकीर्ण (पतला) रास्ता पर चलते देखा। ऐसा दिखाई दिया कि सब लोग एकता की बन्धन में हैं और सच्चाई रूपी रस्सी में बँधे हुए हैं। GCH 145.2

यह छोटा दल चिन्ताओं से भरा हुआ दिखाई दिया मानो कि वे बहुत कठिन परीक्षा और संघर्ष से गुजर रहे हैं। ऐसा लग रहा था कि अभी सूर्य बादल से निकल कर उनके चेहरों पर रोशनी डाल रहा था और उन्हें विजय का संकेत दे रहा था कि अब वे जीत की सीमा पर पहुँच गए हैं। GCH 146.1

मुझे दर्शाया गया कि प्रभु ने जगत के लोगों को इस भ्रम जाल से खोज-खबर ले कर पता लगाने का अवसर दिया है। यदि इसका पता लगा कर जानने के लिए और कोई दूसरा उपाय नहीं मिला है तो मसीहियों के लिए यह एक प्रमाण है। सच्चाई और झूठ के बीच शैतान ने कोई फर्क नहीं बताया। पर इस बात (बैबल) से हम जानते हैं कि सत्य क्या है ? और झूठ क्या है? GCH 146.2

थोमस पेन मर कर मिट्टी में मिल गया। उसे १००० वर्ष के बाद जी उठ कर अपना प्रतिफल पाना था। वह था दूसरी मृत्यु का दंड। उसको शैतान ने ऐसा दिखाया कि वह स्वर्ग में है। उसे वहाँ सम्मानित किया गया। शैतान ने उसको इस पृथ्वी पर जीवन भर अपना काम (भरमाने का काम) कराया। अब वह स्वर्ग में भी वही थोमस पेन का रूप में अपना काम करके सम्मानित है। वह वही काम कर रहा है जो पृथ्वी पर करता था। शैतान उसे ऐसा दिखा रहा है जैसा कि वह स्वर्ग में सिखाने का काम कर रहा है। जब पृथ्वी में था तो लोग उसका काम को भयभीत होकर देखते थे क्योंकि उसकी शिक्षा में सच्चाई नहीं थी। उसकी मृत्यु भी भयानक रूप से हुई थी। वह व्यक्ति जो ईश्वर से त्यागा हुआ था और मनुष्यों में भ्रष्टाचार था। उसको वहाँ (स्वर्ग में) सिखाने का काम करते शैतान ने दिखा कर लोगों को भ्रम जाल में डाला है। शैतान, जो झूठ का पिता है वह अपने दूतों को प्रेरितों के रूप में बोलने भेजता है।

वह कहता है कि जब प्रेरित जगत में थे तो उन्होंने ऐसा संवाद दिया जो बाईबिल का एक बचन दूसरा से विपरीत बोला है। इन वचनों को पवित्रात्मा के द्वारा ही दिया गया है। ये झूठे दूत प्रेरितों को तथा उनकी शिक्षाओं को भ्रष्टाचार बता कर उन्हें भी पथभ्रष्ट कहा है। इस प्रकार का भ्रम पैदा कर नाम राई मसीहियों के पास आता है और सारा संसार में ईश्वर का वचन के विरूद्ध बोलता है। इस प्रकार का मत से सीधा आक्रमण कर अपना जाल फेंकता है। इस तरह से लोग बाईबिल को ईश्वर की ओर से दी गई है, उसे सन्देह करते हैं। उसके बाद वह नास्तिक थोमस पेन को उदाहरण के रूप में ला कर उसके मरने पर भी स्वर्ग में ले लिया गया, कहता है। जब वह

जगत में था तो प्रेरितों से घृणा करता था पर अभी स्वर्ग में उनके साथ मिल गया है। वे दुनिया को शिक्षा देने के लिये दिखाई देते रहते हैं। GCH 146.3

शैतान अपने हर दूतों को इस जगत में कुछ न कुछ काम करने के लिये नियुक्त करता रहता है। वह उन्हें चतुर, चालाक और धूर्त बनने की सलाह देता है। वह किसी प्रेरित बन कर वैसा ही काम करने और बोलने कहता है। जबकि दूसरों को नास्तिक और दुष्ट व्यक्ति बन कर ईश्वर को स्राप देने कहता है। पर अभी अपने को बहुत धर्मी दिखाते हैं। बहुत धर्मी प्रेरितों और दुष्ट नास्तिकों के बीच कोई अन्तर नहीं दिखाता है। उन दोनों को एक ही तरह की शिक्षा देने का काम दिखाता है। इस बात की कोई परवाह नहीं कि शैतान किस से बात करायेगा, जब की उसका लक्ष्य पूरा हो जाये। वह पेन के साथ जगत में बहुत घनिष्ट सम्बन्ध रखता था। उसने उसकी मदद भी की। जो, वह बात बोलता था उसे जानने के लिए इसको आसान हो गया था। उसका एक भक्त चेला जो लिखता था उसको भी पहचानने में आसान था। इसलिए उसने अच्छी तरह से अपना उद्देश्य को पूरा किया। शैतान उसी का हस्तलिपि को व्यवहार में लाता है। अभी अपने दूतों के द्वारा उसी का विचार को लिखवाता है कि यह थोमस पेन की ओर से आया है। जब वह पृथ्वी पर था तो वह उसका विश्वस्त चेला था। यह उसका प्रमुख जरिया था। ये सारी शिक्षाएँ ऐसी दिखाई गई हैं कि मानो प्रेरितों और सन्तों की ओर से आयी हैं साथ में उन दुष्टों से भी जो इस धरती पर ये अभी मर गये हैं। ये सब सीधे शैतान की करिश्मा से आये हैं। GCH 147.1

शैतान के अंधकार के कामों और आश्चर्य कर्मों को खोजने और जानने के लिये लोगों के लिये यह काफी प्रमाण दिये जाते हैं। उसने एक व्यक्ति को पाया और उसे बहुत प्यार भी किया। पर वही व्यक्ति ईश्वर से घृणा करता था। पर उसे पवित्र प्रेरितों और दूतों के साथ सम्मानित रूप से दिखाया। वह क्रिश्चियन और नास्तिक जगत में बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रचार कर रहा है। वह यह भी कहता है - "कोई परवाह नहीं चाहे तुम दुष्ट या पापी बने रहो, कोई परवाह नहीं चाहे, तुम ईश्वर और बाईबिल पर विश्वास रखो या नहीं, जैसा तुम चाहते हो वैसा जीवन बिताओ, आखिरकार स्वर्ग में तुम्हें जगह मिलेगी ही। क्योंकि सब जानते हैं कि थोमस पेन दुष्ट होकर भी स्वर्ग में है तो तुम्हें भी निश्चय स्वर्ग मिलेगा"। यह इतना उज्जवल या स्पष्ट है कि यदि वे चाहें तो इसे देख सकते हैं। शैतान जब से स्वर्ग से नीचे आया है यही ट्य विद्या का काम कर रहा है। थोमस पेन जैसे लोगों को अपने कब्जे में कर लोगों को धोखा दे रहा है। वह अपनी शक्ति और झूठा आश्चर्य कर्म के द्वारा मसीही नींव की जड़ को हिला रहा है। स्वर्ग जाने का सकरा मार्ग की ज्योति को भी बुझा रहा है जिससे वे मार्ग से भटक जाएँ। वह जगत को विश्वास दिला रहा है कि बाईबिल एक साष्ट Iारण कहानी किताब है, ईश्वर प्रेरित वचन इसमें नहीं हैं। इसके बदले दूसरी किताब का प्रचार कर रहा है, वह तो "प्रेतवादी प्रकाशन" की किताब हैं। GCH 148.1

यह जरिया शैतान की देख-रेख में पूर्ण रूप से चल रहा है और वह जगत को विश्वास दिला रहा है कि वह क्या कर सकता है ? इसके द्वारा! जिस किताब के द्वारा उसका और उसके चेलों का न्याय होगा उसे वह ऐसा अंधकार स्थान में रखवाता है जिसे (बाईबिल को) कोई नही पढ़ता है। जगत का उद्धारकत्तो यीशु को एक साधारण आदमी सा मनवाता है। जब रोम सिपाही यीशु की कब्र में पहरा देते थे तो उनके द्वारा यह झूठी रिपोर्ट फैलाई गई कि उसके चेले आकर यीशु की लोथ को उठा कर ले गए। उसके सामर्थ्य से जी उठने की कहानी को उस जमाने के फारसी और शासकों ने छिपा दिया। अमीरों, गरीबों और बुद्धिजीवी सब को शैतान ने अपनी यही किताब "प्रेतवाद प्रकाशन" से ही भ्रम में डाल दिया है। वह इस किताब के द्वारा ट्ण रहा है कि यीशु का जन्म, मरण और पुनरूत्थान में कोई विशेषता नहीं है। इस प्रकार यीशु को बाईबिल के साथ अंधकार जगह में रख देते हैं और जगत को अपना झूठा आश्चर्य कर्म को दिखाकर उसकी बड़ाई करवाते हैं। यीशु के आश्चर्य कर्म से इसकी बड़ाई अधिक करते हैं। इस प्रकार जगत को शैतान ने अपने जाल में रख कर सुरक्षा देने की प्रतिज्ञा की है। लोगों को इसका पता तब तक नहीं लगेगा जब तक कि सांन्तवा स्वर्गदूत अपनी विपत्ति नहीं उंडेलेगा। शैतान अपनी सफलता देख कर कि उसने सारा संसार को अपने जाल में हँसा रखा है, हँसता है। GCH 149.1

आधारित वचन प्रकाशित वाक्य १६:१४, १८:२, १३:१३, १४

अध्याय 31 - पाठ ३१ - लालच

मैंने शैतान और उसके दूतों को सलाह-मशविरा करते देखा। उसने अपने दूतों को कहला भेजा कि विशेष कर जो लोग यीशु के आने की तैयारी कर रहे हैं और सब आज्ञाओं को मानते हैं, उनके पास जाओ। शैतान ने अपने दूतों से कहा कि सब कलीसिया सो रहे हैं। वह अपनी शक्ति और झूठा आश्चर्य कर्म दिखा कर सब को वश में करेगा। परन्तु जो लोग सब्त मानते हैं उनको हम घृणा करते हैं। वे लगातार हमारे विरूद्ध में काम करते हैं और हमारे लोगों को भी छीन कर ले रहे हैं। उन्हें वे ईश्वर का सब्त जिसे हम घृणा करते हैं, मनवा रहे हैं। GCH 150.1

जमींदारों और पैसेवालों के पास जाकर उनकी चिन्ताओं को इसी में डूबाए रखो। यदि तुम लोग ऐसा कर सकोगे तो समझो, हमने उन्हें भी अपने अधीन में कर लिया है। उनको जो पसन्द है, वे उसे माने। तुम सिर्फ पैसे का लालच ज्यादा से ज्यादा उनके मन में डालो ताकि ईश्वर का राज्य को फैलाने के लिये मदद न करें। क्योंकि सुसमाचार के फैलने से हमें घृणा होती है। उनके सामने दुनिया को बहुत ही आकर्षक बना दो जिससे कि वे इस पर दीवाना हो जाएँ और इसकी पूजा करने लगे। जितना सम्भव हो हम जरिया को अपने पास रखें। यदि उनके पास अefि कि जायदाद हो तो अधिक धर्म प्रचार कर हमारा राज्य को तहस-नहस कर हमारे सदस्यों को भी छीन लेंगे। जब वे विभिन्न जगहों में सभा चलाते हैं तो हम खतरे में पड़ जाते हैं। उस वक्त तुम लोगों को बहुत सावधान रहना होगा। जितना भी गड़बगड़ करने सकते हो करो। उनका प्रेम एक दूसरे पर है, उसे गड़बड़ कर दो मनमुटाव करो। उनके प्रचारक और पादरियों को निरूत्साह कर डालो क्योंकि हम उनसे घृणा करते हैं। उनके पास जो तार्किक बहाना है, उसे खोलने मत दो अन्यथा इसके खुलने से विश्वास करना आसान हो जायेगा। यथा सम्भव उनके पैसों को प्रचार काम में मत लगा कर अपने ही पास रखने बोलो जिससे प्रचारक-पादरियों के पास पैसे का अभाव होगा और धर्म सभा चलाना मुश्किल होगा। वे हतास-निरास हो कर भाग जायेंगे। हर ईंच पर मलयुद्ध करो। पैसे का लालच और दुनिया की मोह-माया में डालो क्योंकि धन सम्पत्ति से ही चरित्र गठन किया जा सकता है। जब उनके मन में ये भावनाएँ डालेंगे तो उद्धार पाने और अनुग्रह से मुक्ति पाने की सोच से वे दूर रहेंगे। उनके चारों ओर दुनियादारी के सुख-विलासों को भर कर हँसा दो, तब निश्चय ये हमारे हो जायेंगे। सिर्फ उनको ही हमें वश में नहीं करना है परन्तु उन का प्रभाव दूसरों को स्वर्ग ले जाने का है, उसे भी हमें रोकना है। जो लोग उन पर प्रभाव डालना चाहेंगे, तो उनके बीच में कुडकुड़ाहट पैदा करो जिससे वे कम हो जाएँ। GCH 150.2

मैंने देखा कि शैतान ने अपनी योजना का उचित उपयोग किया। जब ईश्वर के लोगों ने अपनी सभा की तो शैतान के दूतों को अपने-अपने कर्तव्य याद आये। वे वहाँ पर जा कर ईश्वर के कामों में बाधा पहुँचाने लगे। वह लगातार ईश्वर के लोगों के बीच काम कर किसी को इधर तो किसी को उधर भटकाने लगा। इस प्रकार भाईयों और बहनों के बीच गड़बड़ी पैदा करने लगा। यदि वे

अस्थिर हो कर स्वार्थी और लोभी बनते हैं तो शैतान उनका पक्ष लेकर बहुत खुश होता है। वह अपनी सारी शक्ति से उन के बीच में अनबन उत्पन्न कर बैरता का पाप में डाल देता है जिसका उन्हें पता नहीं लगता है। जब ईश्वर की सच्चाई की ज्योति आकर कुछ देर के लिये उनके लालच और स्वार्थ को हटा देता है फिर भी वे उसको पूरी तरह से हटा नहीं सकते हैं तो वे बचाव के अधीन से बाहर हो जाते हैं। उसी समय फिर शैतान आकर उनके सब अच्छे गुणों जैसे कृपा और अनुग्रह और क्षमा को उठा ले जाता है। इसके बाद वे सोचते हैं कि मेल-मिलाप होना, एक-दूसरे को क्षमा करना हम से नहीं होगा, बोलते हैं। वे दूसरों की भलाई करने में थक जाते हैं और यीशु ने उनके लिये इतना बड़ा बलिदान किया है उसे भी भूल जाते है। शैतान का कब्जा से छुड़ाने और आशारहित दुःख से उबर कर मुक्ति देने का काम को भूल जाते हैं। GCH 151.1

शैतान ने यहूदा के लालची चरित्र का फायदा उठाते हुए मरियम का यीशु के पाँवों में बहुमूल्य इत्र डाल कर पोंछने से उसे कुडकुड़ाया। यहूदा ने इसे व्यर्थ खर्च कहा। यदि इसे बेचा जाता तो गरीबों की भी मदद होती। वह तो गरीबों की परवाह नहीं करता था। पर चाहता था कि यीश के लिये चन्दा किया जाता तो यहूदा की थैली में यह रकम (रूपये) आते। यहूदा ने तो लालचवश सिर्फ ३० चाँदी के टुकड़ों से यीशु को बेचा। मैंने कुछ लोगों को यहूदा जैसा देखा जो अपने प्रभु यीशु के आने की बाट देख रहे हैं। शैतान ने उन्हें अपने वश में कर लिया है। पर वे जानते नहीं। एक छोटा लालच और स्वार्थीपन को ईश्वर ग्रहण नहीं करेगा। जो ऐसे लोग हैं उनसे ईश्वर घृणा करता है। और उनकी प्रार्थनाओं की भी उपेक्षा करता है। जब शैतान को यह मालूम है कि उसका समय थोड़ा ही है तो वह लोगों को स्वार्थी बनाने में लगा है। वह अधिक से अधिक लोगों को स्वार्थी, लोभी बनाना चाहता है। जब शैतान लोगों को स्वार्थ और लालच से मरा हुआ देखता है तो मन में बहुत खुश होता है। यदि मनुष्यों की आँखें खोली जाती तो वे देख सकते कि शैतान अपना नरकीय विजय यानी चालाकी और धूर्तता से अपनी बातों को मनवा कर उन्हें अपना जाल में फंसा कर खुशी मना रहा है। तब शैतान और उसके दूतगण लोगों के लालची काम के फलों को यीशु के पास ले जा कर घृणा से कहते हैं। कि क्या आप के चेले हैं ? क्या वे रूपान्तर हो कर स्वर्ग जाने को तैयार हैं ? शैतान उनके पथभ्रष्ट को बाईबिल का मार्ग से तुलना करता है, उन पदस्थलों को दिखाता है जिसमें ऐसा करना पाप है बताता है और उन्हें स्वर्गदूतों को चिढ़ाने के लिये उसके पास हाजिर करवाता है। वह कहता है कि क्या ये लोग ख्रीस्त और उसके वचन के मानने वाले हैं ? यीशु के बलिदान और उद्धार का क्या ये ही लोग फल हैं ? स्वर्गदूत घबड़ा कर अपने मुँह फेर लेते हैं। ईश्वर चाहता है कि उसके लोग सदा भलाई के काम में लगे रहें और जब वे उदार दिखाने में थक जाते हैं तो ईश्वर भी उनकी ओर से मुँह फेर लेता है। मैंने देखा कि ईश्वर के लोगों के चरित्र में थोड़ा भी स्वार्थ पाया जाता है। तो वह उस से नाराज होता है। क्योंकि उनके लिये उसने अपना एक लौटा पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा। फिर यीशु ने भी अपने प्राण का बलिदान कर छुड़ाने से वंचित न रहा। हर लोभी, स्वार्थी व्यक्ति सत्य मार्ग से गिर जायेगा। जिस तरह से यहूदा स्कारियोति ने अपना प्रभु को

बेच डाला उसी प्रकार वे अच्छा सिद्धान्त, अच्छा काम और उदार चरित्र को जगत का थोड़ा लाभ के लिये बेचेंगे। इस तरह के सभी लोग ईश्वर के लोगों की गिनती में नहीं आयेंगे। जो लोग स्वर्ग जाना चाहते हैं। उनको अपनी सारी शक्ति से अच्छे सिद्धान्तों को मानना होगा और दूसरों को मानने के लिसे उत्साहित करना होगा। स्वार्थ से अपनी आत्मा को कमजोर बनाने के बदले उदारता से भर देना चाहिये और एक दूसरे की भलाई करने के लिये हर अवसर का लाभ उठाना चाहिए। इस प्रकार से स्वर्ग के सिद्धान्तों से अधि Tक से अधिक परिपूर्ण हो जाना चाहिए। यीशु को मेरे सम्मुख एक सिद्ध नमूना के रूप में दिखाया गया। उसका जीवन निःस्वार्थ था और उसे अपने लिये फायदा उठानेवाला के रूप में नहीं जाना गया। परन्तु उसने हमेशा परहित के लिए जीवन बिताया। GCH 152.1

आधारित वचन। यूहन्ना २:१५, लूका १२:१५, कुलुस्सियों ३:५, ६ GCH 154.1

अध्याय 32 - पाठ ३२ - डगमगाहट

मैंने कुछ मजबूत विश्वासियों को, शोकितों को देखा। वे ईश्वर से अर्जी (प्रार्थना) कर रहे थे। उनके चेहरे मुरझाये हुए थे, गहरी चिन्ता में पड़े थे, जिससे उनका आन्तरिक युद्ध मालूम पड़ता था। उनके चेहरों से तो बहुत दृढ़ता और सच्चाई के लिये चिन्ह दिखाई देते थे परन्तु कपालों से बड़ी-बड़ी पसीने की बूंदे गिर रही थीं। ईश्वर की कृपा या मदद से कभी-कभी उनके चेहरे चमक उठते थे। फिर वही गम्भीर चिन्ता उनके चेहरे से दिखाई देती थी। GCH 155.1

ब्रूरे दूत उनके चारों ओर घेरे हुए थे और यीशु को नहीं देख सकने के लिये अंधकार फैला रहे थे। इस अंधकार के द्वारा वे यीशु को नहीं दिखाना चाहते थे ताकि वे घबड़ा कर उस पर विश्वास करना छोड़ दें और कुडकुड़ाने लगे। उनका एक मात्र सुरक्षा ऐसी दशा में यह था कि वे स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठा कर देखें । परमेश्वर के लोगों के ऊपर स्वर्गदूत मंडरा रहे थे, उनको बचाने के लिये। जब चिन्तित लोगों के ऊपर बुरे-बुरे दूतों का विषैला वातावरण फैलाया जा रहा था तब स्वर्गदूत भी इस विषैला अंधकार को हटाने के लिये अपने पंखों से धूक रहे थे, हवा दे रहे थे। GCH 155.2

मुझे दिखाया गया कि कुछ लोग शोकित होकर प्रार्थना करने में शामिल नहीं हुए। वे बेपरवाह और अनजान दिखाई दिये। वे इस अंधकार से निकलना नहीं चाह रहे थे। इसलिये काला बादल जैसा अंधकार ने उन्हें पूरी तरह से ढक लिया। स्वर्गदूत इन्हें छोड़ कर उनके पास गए जो गिड़गिड़ा कर ईश्वर से बचाने के लिये प्रार्थना कर रहे थे। मुझे दिखाया गया कि ईश्वर के दूतगण उन लोगों की मदद करने दौड़ते हुए गए जो अपनी सारी शक्ति लगा कर बूरे दूतों से लड़ रहे थे तथा ईश्वर को मदद के लिये लगातार पुकार रहे थे। परन्तु दूतों ने उन्हें छोड़ दिए जिन्होंने बुरे दूतों से अपने को छुड़ाने के लिये कुछ कोशिश न की। वे मेरी दृष्टि से ओझल हो गए। GCH 155.3

जब प्रार्थना करने वालों का यह दल लगातार तन-मन से विनती कर रहा था तो यीशु की ओर से एक ज्योति आई और उन्हें उत्साहित किया। उनके चेहरों में रोशनी पड़ रही थी। GCH 156.1

मैंने जो हिलाना देखी तो उसका अर्थ भी पूछी। उसका आन्तरिक अर्थ यही बताया गया - लौदीकिया जो अन्तिम मंडली है उसको सच्चा गवाही देने के लिये निर्भय होकर खडा हो जाना चाहिये या, तैयार होना है। जो लोग सुनेंगे उनके दिलों में इस साक्षी का प्रभाव होगा। इससे रहन-सहन का स्तर ऊँचा होगा। सच्चाई को बिना टेढ़ा-मेढ़ा कर सीधा बताना होगा। इस सीधी सच्चाई की बात को कोई-कोई सुनना पसन्द नहीं करेंगे। वे इसके विरूद्ध खड़े होंगे। यही समय होगा जो ईश्वर के लोगों को हिलाने का काम करेगा। GCH 156.2

मैंने देखा कि सच्ची साक्षी देने का काम में आधा भी ध्यान नहीं दिया गया है। गम्भीर साक्षी जिस पर मंडली का मंजिल आधारित है या टिका हुआ है। उस पर बहुत कम ध्यान दिया गया है

जिससे इसको थोड़ा ही ऊपर उठाया गया है। यह साक्षी सच्चा पश्चात्ताप लायेगा और जो सचमुच में ग्रहण करेंगे, वे मानेंगे और शुद्ध होंगे। GCH 156.3

स्वर्गदूत ने कहा - 'इसे लिख लो' । मैंने तुरन्त सुना कि मधुर बाजा की आवाज जैसा चारों तरफ आवाज गूंज रही थी जो एक स्वर का गीत था। जितने गीत मैंने सुने थे उनमें से यह उत्तम था। ऐसा लग रहा था कि इसमें दया, सहानुभूति और पवित्र आनन्द से भरा हुआ है और मन को ऊपर उठा रहा है। इसने मुझे रोमांचित कर डाला। दूत ने कहा - "इसे देखो तब मेरा ध्यान उस दल की ओर गया जिस दल के लोगों को मैंने पहले हिलाया हुआ देखा था। मैंने उनको देखा जो पहले शोकित होकर रोते और प्रार्थना करते देखा था। मैंने उनके चारों ओर रक्षा करने वाले दूतों की दुगुना संख्या देखी। वे सिर से पैर तक अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थे। वे लोग कदम तल से जा रहे थे जैसा सिपाही या सैनिक लोग चलते हैं। उनके चेहरों से पता चलता था कि उन्होंने भयंकर युद्ध कर विजय पाई है। कितना कठिन समय में गुजरे थे उनके चेहरे से पता लगता था। उनके रूप रंग से भी पता चलता था कि वे कितनी वेदनाओं को सह कर पार हुए हैं पर अब स्वर्गीय गौरव की ज्योति उनके चेहरे से झलक रही थी। उनको विजय मिली थी। वे कृतज्ञ थे और उनमें पवित्र आनन्द था। GCH 156.4

इस दल की संख्या तो कम थी। कुछ लोग हिलाये गये और रास्ते किनारे गिर गये। लापरवाही और अनजान लोग जो इस दल में शामिल नहीं हुए, जिनको उद्धार का इनाम मिलना था, वे दल में शोक करने लगे, लगातार विनती करने लगे, पर नहीं मिला। उन्हें, पीछे अंधकार में छोड़ दिये गए। उनकी संख्या की गिनती तुरन्त उन लोगों के द्वारा की गई जिन्होंने सच्चाई को मजबूत से पकड़ा था। वे लोग भी इनके दर्जे में आ रहे थे। अब तक बुरे दूत उनके पीछे पड़े हुए थे पर वे इन्हें कुछ न कर सके। GCH 157.1

मैंने सुना कि जो लोग हथियार-बाँधे थे उन्होंने सच्चाई को बड़ी शक्ति से पेश किया। इसका काफी प्रभाव हुआ। मैंने कुछ स्त्रियों को अपने पतियों के द्वारा रोकते हुए देखा और कुछ बच्चे माता-पिताओं के द्वारा बाधा दिए गए। कुछ विश्वासी लोगों को सच्चाई सुनने से रोक दिए गए। अब वे जो सच्चाई प्रगट की गई थी उसे खुशी से ग्रहण करने लगे। उनके रिश्तेदारों की ओर से जो डराना, धमकाना हो रहा था उसका भय मिट गया। उन्हें सच्चाई सुनने का पूरा अवसर मिला। यह उनके लिए जीवन से भी अधिक मूल्यवान हो गया। अब सच्चाई के लिए भूखे और प्यासे बन गए। मैंने पूछा इस बड़ी बदलाहट का क्या कारण है ? तब दूत ने उत्तर दिया - आखिरी वर्षा इसका कारण है। प्रभु की उपस्थिति से उत्साहित दूत की पुकार है। GCH 157.2

इन चुने हुए लोंगो में बड़ी शक्ति आ गई। दूत ने कहा - 'इन्हें देखो ?' मेरा ध्यान दुष्टों या अविश्वासियों की ओर गया, वे तो गड़बड़ी में थे। परमेश्वर के लोगों में जोश और शक्ति थी। इसे देख दूसरे लोग क्रोधित हुए। चारों ओर घबड़ाहट और असमझ फैली हुई थी। जिन लोगों के पास

बल और ज्योति थी उनके विरूद्ध कारवाई हुई। चारों ओर अंधकार छाया था फिर भी वे ईश्वर की कृपा से स्थिर खड़े थे। वे ईश्वर पर भरोसा रखे हुए थे। वे भी घबड़ाए हुए थे। इसके बाद वे ईश्वर से गिड़गिड़ा कर विनती कर रहे थे। रात और दिन वे लगातार विनती कर रहे थे। मैंने ये शब्द सुने - हे! ईश्वर तेरी इच्छा पूरी हो। यदि तेरी इच्छा हो तो इन्हें संकट से बचा लो। हमारे चारों ओर बैरी घेरे हुए हैं उनसे बचा ले। वे हमें मार डालने के लिये तैयार हैं। पर तेरा हाथ उनसे बचा लेगा। ये ही बातें मुझे स्मरण हो रही हैं। वे अपनी अयोग्यता का पूर्ण रूप से महसूस कर रहे हैं। इसलिये पूर्ण रूप से अपने को ईश्वर में सौंप देना चाहते हैं। सब कोई गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करने में लगे हैं। ये याकूब की तरह संकट से बचने के लिये कुश्ती लड़ रहे थे। GCH 158.1

तन-मन से प्रार्थना शुरू करने के तुरन्त बाद में स्वर्गदूत सहानुभूति के साथ उन्हें बचाने आये। तब कप्तान दूत ने उन्हें ठहरने की आज्ञा दी और कहा ईश्वर की इच्छा अभी पूरी नहीं हुई है। उन्हें इस प्याला से पीना है, उन्हें इसका बपतिस्मा लेना है यानी इस संकट से गुजरना है। GCH 159.1

इसके बाद मैंने ईश्वर की पुकार सुनी। इसने आकाश और पृथ्वी को डगमगा दिया। एक बड़ा भूकम्प हुआ। बड़े-बड़े मकान इधर-उधर गिरने लगे। इसके बाद मैंने विजय की आवाज सुनी जो संगीत के समान स्पष्ट था। मैंने इस दल को देखा। थोड़ी देर पहले उदास थे और जंजीर से बाँधे हुए थे। उनका यह बन्धन टूट गया। उनके ऊपर एक गौरवमय ज्योति चमकी। वे उस वक्त कितना सुन्दर दिखाई दे रहे थे। सब शिथिलता और चिन्ता के चिन्ह गायब थे। सब के चेहरों से स्वास्थ्य और सुन्दरता झलक रही थी। उनके शत्रु उनके चारों ओर मुर्दा की नाई गिरे पड़े थे। यीशु की ज्योति के सामने वे ठहर न सके। यीशु को आते देख कर वे खुशी से चिल्ला उठे और कहने लगे देखो वह आ गया। इसी की आशा हम कर रहे थे। वे देखते ही क्षण भर में पलक मारते ही महिमा और अमरता में बदल गए। १ कुरिन्थी १५:५२ कजें खुली और सन्त लोग पहिले जी उठे और अमरता में बदल गए। पर दुष्ट पापी लोग जी नहीं उठे। मृत्यु पर विजय पाने की जय ध्वनि करने लगे। ये सन्त प्रभु के साथ स्वर्ग चले गए। GCH 159.2

आधारित वचन योएल २:१२-१७, जकर्याह १२:१० प्रकाशित वाक्य १:५, १ कुरिन्थी १५:५२ GCH 159.3

अध्याय 33 - पाठ ३३ - बाबुल के पाप

जब से दूसरा दूत का समाचार सुनाया गया तो विभिन्न मंडलियों की स्थिति को देखने का मौका मिला। वे बुराई में खराब से खराब होते जा रहे थे। फिर भी वे अपने को खीस्त के चेले बोलते थे। संसार के लोगों के बीच से उन्हें ईसाई कह कर पहचान पाना कठिन था। उनके पादरी बाईबिल से तो वचन पढ़ते थे पर साधारण उपदेश देते थे। प्राकृतिक हृदय के लिये कोई बाध् Iाजनक नहीं था। काले हृदय के लिये आत्मा, सच्चाई की शक्ति और यीशु का उद्धार करना उन्हें अच्छे नहीं लगते थे। साधारण उपदेश में शैतान भी आराम से रहता है, पापी लोग भी डर से नहीं काँपते हैं और न उन्हें व्याय जो जल्द आने वाला है उसके विषय भी कुछ डर रहता है। दुष्ट पापी लोग भी धर्म का चोगा (वस्त्र) पहने हुए सन्तुष्ट रहते हैं और इसकी मदद और सहायता करते हैं। स्वर्गदूत ने कहा कि जब तक से तैयार न हो तब तक इन्हें कोई जीत नहीं सकता है। अंधकार की शक्ति को नहीं दबा के रख सकता है। शैतान ने इन्हें सम्पूर्ण रूप से कब्जा कर लिया है। लोगों की बोली - वचन ईश्वर की सच्चाई प्रगट करने के बदले चुप बैठी है। स्वर्गदूत ने कहा - संसार से मित्रता कर और संसार की इच्छा पर चलकर ईश्वर के शत्रु बन गए हैं। यीशु के समय की सच्चाई जब शक्ति के साथ पेश की गई तो जगत की आत्मा इसके विरूद्ध उठ कर सताने की चेष्टा करने लगी। बहुत अधिक संख्या में जो नामधराई का ईसाई बने थे, वे सच्चे रूप से ईश्वर का चरित्र को नहीं जानते थे। लोगों का बुरा स्वभाव नहीं बदला था। लोगों का काला दिल ईश्वर का दुश्मन बना हुआ था। ईसाई नाममात्र के लिये थे पर वे शैतान के शिष्य थे। GCH 160.1

मैंने देखा कि जैसे यीशु पवित्र स्थान छोड़ कर महापवित्र स्थान में प्रवेश किया तो मंडलियाँ उसी प्रकार त्यागी गई जैसे यहूदी लोग। वे व्यर्थ ही मन्दिर की विधि का पालन के लिये भेड़ बकरियों का बलिदान करते थे। मैंने मंडली में फैला हुआ भ्रष्टाचार को देखा। वे तो अपने को ईसाई होने का दावा कर रहे थे। उनके नाम, प्रार्थनाएँ और चेतावनियाँ ईश्वर के सामने घृणित ठहरते थे। दूत ने कहा - 'ईश्वर उनकी उपासना के लिये जमा होने को भी पासन्द नहीं करेगा।' विवेक को बिना चेतावनी दिए झूठ, छल और स्वार्थ के कामों को करने में लीन हैं। इन सब बुराईयों को करके वे धर्म का पोशाक को फेंकते हैं। मुझे साधारण मंडली का गर्व को भी दिखाया गया। उनके दिल-दिमाग में ईश्वर का स्थान नहीं था। पर उनका काला मन अपने पर निर्भर था। वे अपने बेचारे नाशवान शरीर को सिंगारते-सजाते हैं और उसे देखकर घमंड करते और सन्तुष्ट होते हैं। यीशु और उसके दूत उन्हें गुस्सा से देखते हैं। दूत कहता है कि उनके पाप और गर्व स्वर्ग तक पहुँच गए हैं। उनका भाग्य का निर्णय हो चुका है। न्याय और बदला लेना तो अभी रूका हुआ है पर तुरन्त ही किया जायेगा। प्रभु ने कहा बदला लेना मेरा काम है और शीघ्र नैं इसका प्रतिफल हूँगा। तीसरा दूत का डरावना संवाद सुनाया जायेगा और लोग महसूस करेंगे। उन्हें ईश्वर के क्रोध का कटोरा पीना पड़ेगा। असंख्य बुरे दूत जगत के चारों ओर फैल रहे हैं। मंडलियाँ और उसके सदस्यों को ये लोग घेर रहे हैं। इस तरह के धर्म मानने वालों को देख कर शैतान और उसके दूत खुश नजर

आते हैं। क्योंकि ईसाईयों ने धर्म का पोशाक तो पहना है पर उसमें कुकर्म और खून हो रहे हैं। GCH 161.1

सारा स्वर्ग मनुष्यों को गुस्सा से देख रहा था क्योंकि ये ही मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि में हैं पर भ्रष्टाचार में पड़ कर नीच बन गये हैं। अपने को ये सब से नीच स्तर का खूनी बना डाले हैं। प्रभु के चेलों की यह दुर्दशा देख कर यीशु की सहानुभूति भी उनको संवाद दिया था। वे दयनीय या गम्भीर पापों में सम्पूर्ण रूप से डूब कर मानव आत्मा के साथ गुलामी का कारोबार करते हैं। स्वर्गदूतों ने इसे लिख रखा। यह किताब में लिखा गया है। धर्मभक्त कैदी व्यक्तियों, कैद स्त्रियों, माता-पिता, बच्चों और भाई-बहनों के आँसू बोतल में बन्द कर स्वर्ग में रखे गये हैं। कष्ट, वेदना मनुष्यों को दुःख दर्द पहुँचाने के काम जगह-जगह चलाये जाते, उन्हें खरीद कर बिक्री किये जाते। ईश्वर अपना गुस्सा को थोड़ी देर के लिये रोके रखेगा। उसका क्रोध इन जातियों के ऊपर भड़क रहा है, विशेष कर उनके ऊपर जो अपने को ईसाई कहते हैं पर इस प्रकार के कारोबार में फंसे हुए हैं, और चला रहे हैं। इस तरह का अन्याय, अत्याचार और कष्ट जो यीशु के नम्र और दीन चेलों पर हो रहा है, उसे वह अनजाने निर्दय हो कर देख रहा है। इनमें से बहुत लोग इन्हें घृणा कर सन्तुष्ट होंगे। इन सब अवर्णनीय दुःख कष्टों को दे कर भी वे ईश्वर की उपासना करते हैं। यह तो एक गम्भीर मजाक है जिससे शैतान खुश होकर यीशु और उसके दूतों को ताना मार कर कहता है - क्या यीशु के चेले ऐसे ही होते हैं ? GCH 162.1

इन नामधराई मसीहियों ने मार्तिरों के कष्ट को पढ़ा तो उनकी आखों से आर्से गिर पड़े। वे आश्चर्य कर कहने लगे कि लोग अपने भाईयों को सताने के लिये इतने कठोर दिल वाले बन गए थे। पर असल में तो वे भी अपने पड़ोसियों को गुलाम बनाते थे। सिर्फ इतना ही नहीं, उन्होंने अपने दिल को कठोर बनाकर अपने साथियों को प्रतिदिन क्रूरता से सताते थे। वे अमानुषिक रूप से तथा अत्याधिक क्रोध से लोगों को सताते थे उसको, यीशु के चेलों को पोप के लोग और गैर मसीही सताते एवं उससे तुलना करते हैं। स्वर्गदूत कहता है कि पोप के लोग और गैर मसीही लोगों का सताना न्याय के वक्त सहा जा सकेगा परन्तु इस समय के लोगों का नहीं। सताये गए लोगों का रोना और चिल्लाना स्वर्ग तक पहुँच गया। स्वर्गदूतगण इस कठोर व्यक्तियों का, ईश्वर के प्रतिरूप में बनाये गए लोगों को सताना देख कर आश्चर्य से मुँह फाड़ कर देखते थे। स्वर्गदूत बोला ऐसे लोगों के नाम खून से लिखे गए हैं, क्योंकि इन पर जलते हुए आँसुओं और मानसिक दुःखों का बोझ को सहना पड़ा था। ईश्वर का गुस्सा इस जगत के लोगों पर जो ज्योति पा चुके हैं, तब तक ठंडा न होगा जब तक कि उसका गुस्सा का प्याला न पीलें । जब तक कि बाबुल का बदला पूरी रीति से न चुकायेगा। उसके कर्मों की सजा दो गुनी दी जायेगी। GCH 162.2

मैंने देखा कि गुलाम का मालिक को इसका जबाब देना चाहिए किस मतलब से उसने मनुष्यों को अज्ञानता में रख छोड़ा है। इन सारे गुलामों के पाप को इसी मालिक पर डालना चाहिये। ईश्वर पाप के गुलामों को स्वर्ग नहीं ले सकता है। केवल करूणामय ईश्वर ही क्षमा पाकर कोई भी गुलाम

स्वर्ग जा सकेगा। उसका मालिक सातवाँ विपत्ति का कष्ट भोगेगा। वह दुष्टों के साथ जी उठ कर दूसरी भयानक मृत्यु भोगेगा। उसी समय ईश्वर का गुस्सा ठंडा होगा। GCH 163.1

आधारित वचन प्रकाशित वाक्य १८ अध्याय GCH 163.2

अध्याय 34 - पाठ ३४ - जोरों की पुकार

मैंने देखा कि दूतगण स्वर्ग में इधर-उधर तेजी से घूम रहे थे। वे कभी स्वर्ग से नीचे पृथ्वी पर आते थे और कभी पृथ्वी से ऊपर स्वर्ग की ओर जाते थे। वे कुछ प्रमुख घटना को पूरा करना चाहते थे। मैंने एक दूसरा स्वर्गदूत को देखा जिसे पृथ्वी पर आने के लिये हुक्म दिया गया। तीसरा दूत के साथ मिल कर उसके संवाद को बलवान और जोरदार बनाने कहा। जैसे वह उतरा तो उसे अधिक शक्ति और महिमा दी गई। पृथ्वी प्रकाश से भर गयी। इसके आगे और पीछे प्रकाश उजियाला करता गया और उसने बड़े जोर से पुकार कर कहा –

"बाबुल, बड़ा बाबुल गिर पड़ा"। यह प्रेतों-दुष्टात्माओं और घृणित पक्षियों का अड्डा बन गया है। बाबुल के गिरने का संवाद दूसरा दूत से सुनाया था। उसे फिर कुछ बुराईयों को जोड़ कर सुनाया गया जो १८४४ ई० में मंडलियों में घुस गई थीं। इस दूत का काम ठीक समय पर हुआ और तीसरा दूत का काम में जोर डाला गया। परमेश्वर के लोगों को चारों ओर तैयार किया जिससे वे परीक्षा के समय स्थिर खड़े रह सकें। मैंने उन पर रोशनी चमकती हुई देखी। वे एक साथ मिल कर निर्भय हो कर बड़ी शक्ति से संवाद पेश करने लगे। उस महान दूत की मदद करने के लिये स्वर्ग से दूसरे दूत भेजे गए। मैंने उनको चारों ओर प्रचार करते देखा। हे! मेरे लोगो वहाँ से निकल जाओ जिससे तुम उसके पापों का भागीदार न बनोगे। उसकी विपत्ति तुम पर न गिर पड़े। क्योंकि उसके पाप तो स्वर्ग तक पहुँच गए हैं। ईश्वर ने उसके पापों को स्मरण कर लिया है। इस संवाद ने तो तीसरा दूत का संवाद को और बढ़ाया जैसा १८४४ ई० में दूसरा दूत ने "आधी रात की पुकार" बोल कर संवाद दिया था उसी में इसको भी जोड़ा गया। ईश्वर की आत्मा धीरज धर कर प्रतीक्षा करने वालों पर ठहरी हुई थी। अब वे इस चेतावनी का संवाद को - 'बाबुल गिर पड़ा वहाँ से निकल आओ, को बिना डर जोर से फैलाने लगे। ऐसा करने से या वहाँ से निकल कर वे अपने को भयानक विनाश से बचा सकते हैं। GCH 164.1

प्रतीक्षा कर रहे लोगों पर ज्योति पड़ी और इसका प्रकाश चारों ओर दिखाई देने लगा। जिन लोगों ने पहले दूतों की पुकार सुन कर इनकार किया था वे अब इसको ग्रहण कर पतित मंडली से निकाल कर आये। जबसे ये समाचार सुनाये गये थे बहुत वर्षों के बाद लोग अपनी जिम्मेदारी को समझे और जब उनपर ज्योति पड़ी तो जीवन और मरण को चुनने का मौका मिला। कुछ लोगों ने जीवन को चुना और उनके साथ मिल गए। जिन्होंने सब आज्ञाओं को मानने को निर्णय लिया था। तीसरा दूत के इस सुसमाचार से लोगों को परखा और अनमोल आत्माओं ने अपना चर्च छोड़ कर इस सत्य को ग्रहण किया। ईमानदारों के बीच में यह वचन बहुत जोर से काम करने लगा जबकि ईश्वर की ओर से भी एक शक्ति काम कर रही थी। वह इनलोगों के रिश्तेदारों और मित्रों को इन्हें भड़काने से रोक रखी थी। आखिरी पुकार, बेचारे गुलामों के लिये भी हुई। उनमें से जो लोग ईश्वर के खोजी थे वे नम्रभाव से ईश्वर के सन्मुख आकर छुटकारा का गीत आनन्द से गाने

लगे। उनके मालिक आश्चर्य और डर के कारण उन्हें स्वीकार करने से रोक न सके। बहुत बड़ा आश्चर्य काम के साथ मरीजों को चंगा किया गया और विश्वास करने वालों के बीच अद्‌भुत कामों के चिन्ह दिखाई दिए। इसमें ईश्वर का हाथ था। सन्त लोग अपना विवेक का सहारा लेकर सब आज्ञाओं को मानने से नहीं डरे। उन्होंने तीसरा दूत का संवाद को जोरों से फैलाया। तीसरा दूत का यह संवाद “आधी रात की पुकार” से भी बढ़ कर शक्ति के साथ पूरा होगा। GCH 165.1

ईश्वर के दासों को स्वर्ग से शक्ति मिली। पवित्रता की ज्योति से भरपूर होकर चमकते चेहरों के साथ, संवाद को प्रचार करने निकले। अनमोल आत्माओं को जो चारों ओर विनाश हो रहे चर्चा में थे, उन्हें जल्दी से निकाल लिये गये जैसा लूत को सदोम आमोरा के विनाश से निकाला गया था। ईश्वर के लोगों को पवित्रात्मा की मदद से परीक्षा के समय स्थिर खड़े रहने के लिये दृढ़ किया गया। बहुत से लो ग एक साथ चिल्ला उठे - सन्तों का धीरज इसी में है कि परमेश्वर की अब आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास करते हैं। GCH 166.1

आधारित वचन प्रकाशन वाक्य १४:१२-१८, योएल २:९-११ GCH 166.2

अध्याय 35 - पाठ ३५ - तीसरा दूत के समाचार बन्द हुए

जब तीसरा दूत के समाचार बन्द हो रहे थे तो मुझे दिखाया गया। ईश्वर की आत्मा लोगों पर थी। उन्होंने अपना काम पूरा किया था और परीक्षा की घड़ी के लिये तैयार थे। प्रभु की ओर से उन्हें आखिरी वर्षा जो पवित्रात्मा की मिलनी थी, मिल चुकी थी। जीवता वचन उन्हें मिल चुका था। आखिरी बड़ी चेतावनी चारों ओर दी जा रही थी। इससे पृथ्वी के लोगों के बीच में खलबली मच गई थी और उनमें गुस्सा चढ़ रहा था जो अब तक इसको ग्रहण नहीं किये थे। GCH 167.1

मैंने देखा कि स्वर्ग में दूत इधर से उधर दौड़ लगा रहे थे स्वर्गदूत लेखनी बगल में लेकर यीशु के पास लौट आये और बताया कि उसका काम खत्म हो गया। सन्तों की गिनती हो गई। उन पर मोहर छाप लगा दिया गया। इस वक्त यीशु मन्दिर में सन्दूक के सामने खड़े होकर सेवकाई का काम कर रहा था। हाथ में धूप जलाने का वर्त्तन था उसे नीचे गिरा दिया। हाथ पर उठा कर जोर से कहा - "यह पूरा हुआ। जैसे यीशु ने गम्भीर शब्द से पुकारा वैसे ही सब दूतों ने अपने मुकुट उतार दिए। जो अन्याय है अन्याय करता रहे और जो पापी है, पापी बना रहे और जो धर्मी है, धर्मी बना रहे और जो पवित्र है, पवित्र बना रहे। GCH 167.2

मैंने देखा कि सब मामलों के लिये या मुत्यु का निर्णय कर लिया गया। यीशु ने अपने लोगों के पापों को मिटा डाला। उसको राज्य मिल गया। अपनी प्रजाओं के लिये उसने उद्धार का काम पूरा कर लिया। जब यीशु मन्दिर में सेवकाई का काम कर रहा था उस समय मरे हुए धर्मी लोगों और जीवित धर्मियों का न्याय हो रहा था। राज्य की प्रजाओं को चुना गया। मेम्ने का विवाह खत्म हो गया। स्वर्ग और पृथ्वी का राज्य यीशु को दिये गये। यीशु अब प्रभुओं का प्रभु, राजाओं का राजा बन कर शासन करेगा। GCH 167.3

जैसे ही यीशु महापवित्र स्थान से निकला तो उसके शरीर की घंटी बज उठी। जब उसने मन्दिर छोड़ा तो पृथ्वी के लोगों पर अंधेरा छा गया। अब इसके बाद पापियों के लिये ईश्वर के पास बिचवाई करने का कोई न रहा। जब तक यीशु पापियों और ईश्वर के बीच में खड़ा था तो लोगों की भीड़ लगी थी, पर जैसे ही वह हट गया तो उस भीड़ को भी हटायी गई। अब उन पर शैतान का कन्ट्रोल था। तब यीशु मन्दिर में बिचवाई कर रहा था तो विपत्ति का आना कठिन था परन्तु जैसे ही वहाँ का काम समाप्त हुआ, वैसे ही बिचवाई का काम खत्म हो गया। ईश्वर का गुस्सा भी उनके ऊपर भड़का, जिन्होंने उसका उद्धार को तुच्छ जाना, उसकी चेतावनी को इनकार किया। यीशु के बिचवाई के बाद सन्त लोग ईश्वर की देख रेख में थे। हरेक मामला का फैसला हो गया। सब रत्नों का हिसाब हो गया। यीशु स्वर्गीय मन्दिर से बाहर निकला। कुछ देर वहाँ ठहर कर उन सब के पापों का पाप को पिता ने शैतान के सिर में डाल दिया। उसे पापों की सजा उठानी चाहिये। GCH 168.1

इसके बाद मैंने देखा कि यीशु ने अपना पुरोहित का पोशाक उतार कर राजा का वस्त्र पहन लिया। उसके सिर पर मुकुट के ऊपर मुकुट थे। वह स्वर्गदूतों से घिरा हुआ था। स्वर्ग से पृथ्वी की ओर आने की तैयारी करने लगा। पृथ्वी के लोगों पर विपत्ति के ओले पड़ने लगे थे। कुछ लोग ईश्वर को कोस कर कुडकुड़ा रहे थे। दया की मधुर आवाज अब नहीं सुनाई पड़ रही थी। आखिरी चेतावनी भी दी गई थी। जब स्वर्ग के सब लोग उनके उद्धार की चिन्ता कर रहे थे तो उन्होंने इसमें कोई रूचि नहीं दिखाई। अब तो उनके लिये जीवन या मरण का निर्णय कर लिया गया। बहुतों को उद्धार पाने की बहुत इच्छा हुई पर उन्हें नहीं मिला। उन्होंने जीवन को नहीं चुना। अब उद्धार पाने का समय बित चुका था। यीशु पहले ही कह चुका था - यह पूरा हुआ है। अब मेहरबानी की मधुर आवाज खत्म हो चली थी। अब चारों ओर डर छा गया। उन्हें भयानक आवाज सुनाई पड़ी। उद्धार पाने के लिए बहुत देर हो गयी। GCH 168.2

स्वर्गदूत कहता है कि जिन्होंने पहले ईश्वर के वचन को सुनने से इन्कार किया था अब वे उसकी खोज के लिए उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम दौड़ लगा रहे थे। अब तो प्रभु के वचनों को जमा करने के बदले दुनिया के धन को जमा करने में लगे थे। यीशु को इनकार कर उसके चेलों को भी घृणा करते थे। अतः अब पापी हमेशा पापी बना रहेगा प्रका० वा० २२:११ ।। GCH 169.1

अधिकांश लोगों पर विपत्ति का बादल गिरा तो उनका गुस्सा सन्तों पर पड़ने लगा। यह तो दुःख का एक डरावना दृश्य था। माता-पिता अपने बच्चों को घुड़क रहे थे और बच्चे अपने माता-पिताओं को, भाई बहनों को और बहने भाईयों को दोष दे रहे थे। चारों ओर रोने-चिल्लाने की आवाज गूंज रही थी। मंडली के सदस्य अपने पदारी-प्रचारकों को गाली दे कर कह रहे थे कि तुम्हीं लोगों ने हमें सत्य को मानने से रोका। अन्यथा हम बच जाते। कोई कह रहे थे कि तुम लोग जानते हुए भी हमें चेतावनी नहीं दी। जब चेतावनी दी जा रही थी तो तुम लोगों ने बताया कि कुछ फर्क नहीं होगा और कहा शान्ति, शान्ति धीरज रखो। तुम लोगों ने इस न्याय के विषय नहीं बताया। जब ये प्रचार करते थे तो कहा कि ये लोग पागल हैं, झूठे प्रचारक और नबी हैं। मैंने देखा कि ये पादरी और प्रचारक सिर झुका कर खड़े थे। वे ईश्वर के क्रोध से बचने वाले नहीं थे। उनके दुःख तो अपने मंडली सदस्यों से दस गुना अधिक था। GCH 169.2

आधारित वचन यहेजकेल ९:२-११, प्रकाशित वाक्य २२:११ GCH 170.1

पाठ ३६ - याकूब की विपत्ति का समय

मैंने सन्तों को शहर और गाँवों को छोड़ते हुए देखा। वे एक साथ मिल कर नगरों से दूर एकान्त या निर्जन जगह में रहने लगे। उनके लिये स्वर्ग के दूतों ने भोजन-रोटी और जल का

इन्तजाम किया। परन्तु दुष्ट पापी लोग भूख और प्यास से तड़प रहे थे। इस जगह के नेतागण और प्राचीन लोग मिल कर सलाह कर रहे थे और शैतान भी उसके दल के लोगों के पास कुछ को लेकर हाजिर था। मैंने शैतान और उसके दल के लोगों के पास कुछ कागज देखे थे। उसमें लिखे हुए थे कि ये सन्त लोग जब तक सब्त को नहीं छोड़ते और पहिला दिन को गिरिजा नहीं करते तब तक सुरक्षित नहीं हैं। इस कागज को चारों तरफ बाँटते देखा। उन्हें समय दिया जायेगा छोड़ने के लिए, नहीं छोड़ने से उन्हें कत्ल किया जायेगा। इस संकट की घड़ी में सन्त लोग शान्त होकर ईश्वर पर भरोसा रखे हुए थे कि वह उन्हें छुड़ायेगा। कोई-कोई जगह में तो समय पूरा होने के पहले दुष्ट लोग सन्तों के पास मार डालने के लिए पहुँच गये। ऐसे समय में ईश्वर के स्वर्गदूत आकर उन्हें बचा लेते हैं। शैतान को बहुत इच्छा थी कि उसे यीशु के सन्तों को मौत के घाट उतारने का अच्छा मौका है। लेकिन यीशु ने अपने दूतों को भेज कर उनकी रक्षा की। जो लोग उसकी व्यवस्था का पालन कर रहे थे उनके जीवन को अपनी वाचा के मुताबिक बचा कर अपनी इज्जत रख ली। इससे ईश्वर की महिमा प्रगट हुई। जो लोग बहुत दिन से यीशु की प्रतीक्षा कर रहे थे उनको स्वर्ग लेने के द्वारा वह भी गौरवान्वित किया जायेगा यानी यीशु भी सम्मानित होगा। क्योंकि बिना मृत्यु चखे वे स्वर्ग को उठा लिए जायेंगे। GCH 171.1

थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि सन्त लोग एक भयानक संवेदना से गुजर रहे हैं। ऐसा दिखाई दे रहा था कि वे जगत में दुष्टों की बड़ी भीड़ से घिरे हुए हैं। कुछ लोग सोच रहे थे कि ईश्वर ने उन्हें अन्त में दुष्टों के हाथ से मारे जाने के लिए छोड़ा है। पर यदि उनकी आँखें खोली जाती तो वे देख सकते कि ईश्वर के दूत उनके चारों ओर घेरा डाले हुए हैं। इसके बाद दुष्टों का बड़ा दल आया जो क्रोध से भरा था। फिर बुरे दूतों का दल भी वहाँ पहुँचा। ये सन्तों को मार डालने के लिये ही वहाँ दौड़ कर आये थे। उन सन्तों को मारने के लिये पहुँचने के पहने ईश्वर के दूतों का बड़ा दल को पार करना था। इन पवित्र दूतों का दल से गुजरना बहुत कठिन था। ईश्वर के दूत उन्हें पीछे ढकेल रहे थे और बुरे दूतों को तो पछाड़ कर गिराते थे। सन्तों के लिये यह समय एक बड़ा डरावना और वेदनापूर्ण था। बचाव के लिये वे ईश्वर से रात और दिन विनती कर रहे थे। बाहरी दिखावट से ऐसा लगता था कि उन्हे बचने का कोई सम्भवना नहीं थी। क्योंकि दुष्ट लोग जीतते हुए चले आ रहे। थे। वे उनको चिढ़ा रहे थे कि क्यों कर ईश्वर तुम्हें नही बचाने आता है ? पर सन्त लोग उनकी बातों को अनसुनी कर रहे थे। वे ईश्वर से याकूब की तरह मलयुद्ध कर रहे थे यानी लगातार विनती कर रहे थे। स्वर्गदूत तो चाहते थे कि उन्हें जल्दी से छुड़ा लें परन्तु आदेश यह था कि उनके कप्तान की ओर से थोड़ी देर के लिये उन्हें इस तकलीफ से जाने दो और उन्हें अनुभव करने दो। दूत विश्वासपूर्वक उनकी पहरा कर रहे थे। जब समय आया तो ईश्वर ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर उन्हें आश्चर्य रूप से बचा लिया। ईश्वर अपने बदनाम गैर ईसाईयों के मुँह से सुनना नहीं चाहता है। ईश्वर अपने नाम की महिमा के लिये हरेक को छुड़ा लेगा जो धीरज से उस की बाट देखते हैं और जिनके नाम जीवन की किताब में लिखे गए है। GCH 172.1

मुझे नूह की ओर इशारा किया गया। वर्षा हुई और बाढ़ भी आई। नूह और उसके परिवार के लोग जहाज के भीतर गये और ईश्वर का दूत ने दरवाजा बन्द कर दिया। जब नूह लोगों को विश्वासपूर्वक चेतावनी देता था तो लोग उसे पागल कह कर उसका मजाक करते थे। जैसे पानी पृथ्वी पर भर गया और एक के बाद एक लोग डूबने लगे तब लोगों ने देखा कि नूह और उसके परिवार जो जहाज के अन्दर ये सुरक्षित तैर रहे थे। ईश्वर के लोग जगत को चेता रहे थे कि ईश्वर का क्रोध का दिन आने वाला है। इसलिये उसकी बातों को सुन कर बचने के लिये चले आओ। पर उन्होंने भी ढिठाई से नूह की बात नहीं सुनी और जलप्रलय में डूब कर मर मिटे। इस वक्त भी ईश्वर के लोग विश्वश्ता से जगत को चेता रहे थे। पर अधिकांश लोग उस चेतावनी को इनकार करते रहे। पर कुछ विश्वासी लोग निकले जो उसके आने की बात को धीरज से देख रहे थे, वे पशु की आज्ञा नहीं मानते थे उसके मूरत की छाप अपने माथे और हाथ पर नहीं लेते थे। उनको यीशु बिना मृत्यु चखे स्वर्ग ले जायेगा। यदि ईश्वर सन्तों का मार्ग दिये जाने का अधिकार शैतान और उसके बरे दतों को देता तो वे बहुत खुश होते। शैतान की शक्ति का क्या यहीं विजय का दिन होता ? उस आखिरी लड़ाई में शैतान अपनी शक्ति को दिखाकर घमंड से फूल जाता। जो लोग यीशु के आने की बाट धीरज से जोह रहे थे और उसके साथ स्वर्ग जाना चाहते थे उनकी आशा पानी में फिर जाती। सन्तों का स्वर्ग जाने का विचार को लोग मजाक में उड़ा रहे थे पर वे देखेंगे कि सचमुच सन्त लोग यीशु के साथ स्वर्ग जायेंगे। GCH 173.1

जब सन्तों ने शहर और गाँवों को छोड़ दिया तो वे निर्जन जंगल में रहने चले गये तो दुष्टों ने उनका पीछा किया। जब उन्हें तलवारों से कत्ल करने के लिये तलवारें उठाने लगे तो उनकी तलवारें टूट कर गिर पड़ीं। ईश्वर के दूतों ने उन्हें बचा लिया। रात दिन ईश्वर से विनती करने का मीठा फल उन्हें मिल गया। GCH 174.1

आधारित वचन उत्पत्ति ७:१ यशा ३३:१६, ४९:१० प्रकाशन वाक्य १४:१४

अध्याय 36 - पाठ ३७ - सन्तों को छुटकारा मिला

ईश्वर ने आधी रात को अपने लोगों को छुड़ाना चाहा। जब दुष्ट लोग सन्तों का मजाक उड़ा रहे थे उसी वक्त अचानक सूर्य अपनी तेज रोशनी के साथ दिखाई दिया और चाँद आकाश में था। दुष्टों ने ताज्जुब के साथ यह दृश्य देखा। जल्दी-जल्दी आश्चर्यजनक चिन्ह दिखाई देने लगे। ऐसा लग रहा था कि सब काम अपने दैनिक स्वभाव से उल्टा चल रहे थे। छोटी नदियों का बहना बन्द हो गया। घोर अंधकार का बादल छा गया और एक दूसरे से टकराने लगे। बादलों के बीच में से ईश्वर की आवाज ऐसी निकली जैसे बहुत से पानी के गिरने का शब्द होता है अर्थात् जलप्रपात। इस आवाज से स्वर्ग और पृथ्वी काँप उठी। इसके बाद एक भयंकर भूकम्प हुआ। कब्रे हिलने लगीं और जो लोग तीसरा दूत के समाचार ग्रहण कर चुके थे और सब्त मानते थे वे महिमा से भर कर ईश्वर की शान्ति का वाचा सुनने के लिए जी उठे। GCH 175.1

आकाश कभी खुलता था और कभी बन्द होता था। इससे सनसनी घबड़ाहट फैल गई थी। पहाड़, छोटी नदी के घास (सरकंडों) के समान हिलने लगे और चट्टानें टूट कर चारों ओर छिटकने लगीं। समुद्र का पानी भी खौलने लगा और वहाँ से पत्थर निकल कर जमीन में फैलने लगे। ईश्वर ने यीशु के आने की बात कही और सदा का वाचानुसार अपने लोगों को छुड़ाया। उसने सिर्फ एक बात कही। इसके बाद वह रूक गया। उसकी बातें पृथ्वी की छोर तक फैलने लगी। परमेश्वर के लोग अपनी आँखों को उठा कर स्वर्ग की ओर ताक रहे थे। ईश्वर की बातों को सुनने में ध्यान लगाए हुए थे। ईश्वर की आवाज बादल के गर्जन के समान सारी पृथ्वी को दहला दे रही थी। यह बहुत ही गम्भीर था। हर वाक्य के अन्त में सन्त लोग “ग्लोरी हल्लेल्लूयाह” बोल कर चिल्ला रहे थे। उनके चेहरे महिमा की रोशनी से भर गये थे। उनके चेहरे ऐसे ही चमक रहे थे जैसा मूसा का चेहरा, जब वह सिनाई पर्वत से लौट रहा था तो चमक रहा था। यीशु के चमकीले चेहरे को दुष्ट लोग नहीं देख सक रहे थे। न अन्त होने वाला आशीर्वाद उनको जो ईश्वर का आदर करते थे, उसका सब्त को मानते थे, दिया गया तो वे पशु पर विजय पाने और उसकी मूरत को न पूजने के कारण खुशी से जयघोष करने लगे। GCH 175.2

इसके बाद जुबिली का आरम्भ हुआ जिस में पृथ्वी को विश्राम देना था। मुझे दिखाया गया कि धर्मीदास (गुलाम) लोग जय का गीत गाते हुए जी उठे। उन्होंने अपने क्रूर मालिकों का बंधन को तोड़ फेंका। वे (मालिक) अकबका गये। क्या करना है उसे भूल गए। इसके बाद एक छोटा बादल जो मनुष्य के हाथ के बराबर लम्बा था दिखाई दिया। उस पर मनुष्य का पुत्र (यीशु) बैठा था। GCH 176.1

यह बादल दूर पर था इसलिये छोटा दिखाई दिया था। दूतों ने बताया कि यह तो यीशु के आने का चिन्ह है। जैसे ही यह बदल नजदीक आता गया तो हमने इसको बहुत ही गौरवपूर्ण देखा जिसमें यीशु सवार होकर आ रहा था। उज्जवल, चमकदार मुकुट पहने हुए दूतों का बड़ा समूह यीशु के

साथ आ रहा था। इस दृश्य की सुन्दरता का वर्णन करने के लिये कोई शब्द नहीं मिल रहे थे। महिमा का जीवित बादल और अपूर्व ऐश्वर्य जब नजदीक आता गया तो हमने उसकी छवि को स्पष्ट देखा। उसने काँटों का ताज नहीं पर महिमा का ताज पहना था। उसके कपाल और जाँघ पर "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु" लिखा हुआ था। उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान और पाँव चोखा तम्बा के समान और आवाज, बाजा की आवाज के समान सुन्दर थी। उसके चेहरे तो दिन दोपहर का सूर्य की रोशनी के समान थे। उसके सामने पृथ्वी काँप उठी और स्वर्ग कागज की नाई लपेट दिया गया। हरेक पहाड़ और टापू अपनी-अपनी जगह से हट कर दूर चले गए। पृथ्वी के राजा, बड़े आदमी, धनी आदमी, प्रधान कप्तान, महान लोग हरेक गुलाम और बन्धुए और स्वतन्त्र लोग अपने को पहाड़ों की गुफाओं और चट्टानों की खोह में छिपाने लगे। उनसे ये लोग कहने लगे कि हम पर गिर पड़ो और जो गद्दी पर बैठ कर आ रहा है उसके चेहरे से और उसके क्रोध से बचा लो। क्योंकि उसका भयानक क्रोध का दिन आ गया है और कौन उसके सामने खड़ा रह सकता है ? GCH 176.2

इसके पहले जिन्होंने ईश्वर के विश्वासी लोगों को नाश किया था, उनके चेहरों में अभी ईश्वर की महिमा को देख रहे थे। उन्होंने उन्हें महिमा से भरा हुआ देखा। इस भयंकर और डरावना दृश्य के बीच सन्तों की यह आवाज सुनने को मिली कि देखो यही हमारा प्रभु है जिसको बहुत दिनों से देखना चाह रहे। थे (यशाः२५:९) वह आ गया। जब ईश्वर का पुत्र बड़े जोर से सोये हुउ सन्तों को जगाने के लिये पुकारा तो धरती हिल गई। इसका जवाब स्वरूप वे अमरता की महिमा का वस्त्र पहने हुए अपनी-अपनी कब्रों से उठ खड़े हुए। वे चिल्ला कर कहने लगे - जय, जय, हे मृत्यु तेरी जय कहाँ, हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा ? इसके बाद जीवित सन्त और जी उठे सन्तों ने एक साथ अपनी आवाज बुलन्द कर कहा 'जय ! जो रूग्न शरीर कमजोर होकर मर गया था वह अब पूर्ण स्वस्थ और तन्दरूस्त अमर शरीर लेकर जी उठा। जीवित सन्त लोग तुरन्त क्षण भर में बदल गए। वे जी उठे सन्तों के साथ स्वर्ग चले गए। वहाँ बादलों में वे प्रभु से मिल गए। यह क्या ही महिमा पूर्ण भेंट और मुलाकात थी। जिन मित्रों को मृत्यु ने अलग किया था वे फिर एक साथ मिल गए। अब उन्हें जुदाई होनी न पड़ेगी। GCH 177.1

अग्निरथ के दोनों तरफ चक्के थे। जैसे ही यह अग्निरथ ऊपर की ओर उठने लगा, तब पहिया से आवाज निकली 'पवित्र' और डैने जैसे उड़ने लगे तो आवाज आई 'पवित्र' और अग्निस्थ के चारों ओर दूतों का समूह से आवाज आई - पवित्र, पवित्र, पवित्र सर्व-शक्तिमान प्रभु ईश्वर। जो सन्त बादल से होकर स्वर्ग की ओर जा रहे थे वे कहने लगे - महिमा हल्लेलूय्याह। रथ स्वर्ग की ओर पवित्र नगर को जा रहा था। पवित्र नगर में प्रवेश करने के पहिले सन्तों को एक वर्गाकार में जमा किया गया और बीच में यीशु था। वह सब का प्रधान था। लोगों की ऊँचाई यीशु के कंधे बराबर थी। उसका गौरव और सुन्दर सलोना चेहरा सब को दिखाई दे रहा था। GCH 178.1

आधारित वचन प्रकाशित वाक्य १५:१-४, ६:१२-१७ GCH 178.2

अध्याय 37 - पाठ ३८ - सन्तों को पुरस्कार मिलता है

मैंने दूतों का एक बड़ा दल को नगर से सन्तों के लिये मुकुट लाते हुए देखा। उसमें उनके नाम लिखे हुए थे। जैसे यीशु ने मुकुट लाने के लिये पुकारा तो दूत मुकुट को ला कर यीशु पास लाए। यीशु ने अपने हाथों से सन्तों के सिर पर मुकुट रखे। इसी तरह से वीणा बाजा भी लाये गये और यीशु ने हरेक सन्तों को दिया। सबसे पहले कप्तान दूत ने वीणा बाजा को बजाया। इसके बाद सब लोग निपुण अंगुलियों की तरह वीणा की तारों पर अंगुली रख कर बहुत ही मधुर स्वर से गीतों को बजाये। इसके बाद मैंने देखा कि यीशु सन्तों को नगर के फाटक की ओर अगुवाई कर ले चले। इसके बाद यीशु ने फाटक का चमकीला दरवाजा को पकड़ कर खोल दिया और कहा - "प्रवेश करो"। इस पवित्र नगर में आँखों को लुभाने वाली सभी चीजें थी चारों ओर सौन्दर्यपूर्ण नजारा देखने को मिला। सन्तों के चेहरे भी महिमा से चमक रहे थे। यीशु इन सन्तों को देख कर सन्तुष्ट हो कर बोला - "मैंने अपने दुःख भोगने का काम को सफल किया है।" इस बड़ा गौरव को पाकर अनन्त काल तक सुख भोग करो। तुम्हारे सब शोक-दुःख समाप्त हो गए। अब न कोई मृत्यु न शोक, न रोना और न पीड़ा भोगना पड़ेगा। मैंने देखा कि उद्धार पाये हुए लोगों ने अपने सिरों को झुका कर अपने मुकुटों को यीशु के पाँव तले रखना शुरू किया। तब यीशु ने उन्हें अपने हाथों से उठाया। इसके बाद वे अपने सोने के वीणा से इतना मधुर धुन बजाया कि सारा स्वर्ग आनन्द से लहरा उठा। GCH 179.1

फिर मैंने यीशु के उद्धार प्राप्त किये हुए लोगों को जीवन के पेड़ के पास ले जाते हुए देखा। इसके बाद यीशु का ऐसा मधुर शब्द-ध्वनि जो मृतक मनुष्य के कानों में कभी नहीं सुना गया, सुनाई दिया। इस पेड़ की पत्तियाँ, यहाँ के नागरिकों को चंगा करने के लिये है और फल खाने के लिये हैं। इसमें से तुम सब खाओ। जीवन के पेड़ पर बहुत ही सुन्दर फल थे जिसको सन्त लोग बिना हिचकिचाहट के खा सकते थे। उस नगर में बहुत सुन्दर सिंहासन था। सिंहासन से स्वच्छ नदी का जीवन जल बह रहा था। यह तो बिलौर के समान स्वच्छ था। जीवन की नदी के दोनों छोरों (किनारों) पर जीवन का पेड़ लगा हुआ था। नदी के दोनों किनारों पर सुन्दर-सुन्दर पेड़ थे जिसमें बारहों महीने फल लगते थे। ये भी भोजन के लिये बहुत उपयुक्त थे। स्वर्ग की सुन्दरता का वर्णन मनुष्य नहीं कर सकता है। जैसे-जैसे एक के बाद दूसरा सुन्दर दृश्य आते रहे तो मैं इसमें डूब कर खो गई। मुझे बहुत ही अद्‌भुत और ऐश्वर्यमय दृश्य को दिखाया गया। मैं लिखना बन्द कर दी और आश्चर्य से बोल उठी - क्या यही अपार प्रेम है! क्या यही अद्‌भुत प्यार है! मनुष्यों की सबसे अच्छी भाषा भी स्वर्ग की बखूबी वर्णन नहीं कर सकती है, यीशु का अथाह प्रेम को भी नहीं वर्णन कर सकती है। GCH 180.1

आधारित वचन प्रकाशित वाक्य २:१०, २१:४, २२:१-६ मशा : ६५:१७-२५

अध्याय 38 - पाठ ३९ - पृथ्वी उजाड़ की दशा में

मैंने पृथ्वी पर दृष्टि की तो क्या देखा कि दुष्ट लोग मरे पड़े थे और उनके शव यहाँ-वहाँ बिखरे हुए थे। पृथ्वी के निवासियों को ईश्वर का क्रोध को सातवाँ दूत की विपत्ति के रूप में सहना पड़ा। उन्होंने गुस्सा होकर ईश्वर को साप दिया था। झूठे नबी और पादरी लोग ही ईश्वर का क्रोध के कारण थे। उनकी आँखें भीतर घुस गई थीं और उनकी जीभ मुँह के अन्दर अटकी थी। जबकि पाँवों के बल खड़े थे। ईश्वर की आवाज से जगत के सन्त छुड़ाए गए तब दुष्ट पापियों का गुस्सा एक दूसरे पर उतरने लगा। पृथ्वी ऐसी लगी मानो वह खून से भर गई। लाशें पृथ्वी पर एक छोर से दूसरी छोर तक भर गयीं। GCH 181.1

पृथ्वी उजाड़ की दशा में थी। शहर नगर और गाँव भूकम्प से नष्ट-भ्रष्ट हो गये थे। उनका ढेर यहाँ वहाँ दिखाई पड़ रहा था। पहाड़ भी अपने स्थानों से हट गए थे। वहाँ गहरी खाई पड़ गई थी। समुद्र से उबड़-खाबड़ पत्थर भी निकल आये थे और पृथ्वी पर छा गये थे। पहाड़ के पत्थर और चट्टानें भी टूट कर पृथ्वी पर इधर-उधर बिखर गई थीं। पृथ्वी उजड़ा हुआ बन के समान दिखाई देती थी। बड़े-बड़े पेड़ उखड़ गये थे और उनकी डालियाँ काट-छाँट कर इधर-उधर पड़ी थी। यही पर अब शैतान का घर था जिसे उसको १००० वर्ष अकेला बिताना था। यहाँ उसे कैदी की तरह रहना होगा। उसे उजड़ी हुई पृथ्वी पर ऊपर नीचे घुमना होगा। उसे ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने का प्रभाव को देखना पड़ेगा। शाप का नतीजा जिसको उसने लाया था उसे १००० वर्षों तक उसे भोगना होगा। उसे अकेला इस पृथ्वी पर रहना होगा। दूसरी दुनियाँ में उसे जाने की अनुमति नहीं है। वहाँ के लोग पाप में नहीं गिरे हैं। उन्हें भरमाने की अनुमति शैतान को नहीं दी गई है। इस अकेला जीवन में शैतान को बहुत दुःख झेलना होगा। जब से वह गिरा है तब से उसका बुरा काम पृथ्वी पर लगातार बढ़ रहा था। उसकी शक्ति छीन ली गई थी। जब से वह गिरा है तब से उसे अपना काम करने के लिये इजाजत दे दी गई थी। इसको अपना भविष्य को बहुत ही भयानक और डरावना के रूप में भी देखने का मौका दिया गया था। लोगों को जो पाप करवाया था और स्वयं किया था उसकी भी सजा भी भोगने का दृश्य दिखाया गया था। GCH 181.2

इसके बाद मैंने स्वर्गदूत और उद्धार पाए हुए लोगों की पुकार सुनी। ये ऐसे लगे मानो दस हजार बाजाओं की मधुर आवाज हो। क्योंकि इनमें कोई जीवित न रह गया था जो शैतान के द्वारा फुसलाया जाता। दूसरे जगत के निवासी तो उसकी उपस्थिति और परीक्षाओं से दूर थे। GCH 182.1

मैंने सिंहासन देखा जिसमें यीशु और उद्धार प्राप्त व्यक्ति बैठे थे। सन्तों को राजा और याजकों की तरह राज्य करने का मौका मिला। मरे हुए पापियों का व्याय (फैसला) किया गया और उनके कामों को ईश्वर की व्यवस्था से तुलना किये गए। जैसा उन्होंने काम किया था वैसा ही उनका फैसला हुआ। यीशु ने सन्तों के साथ फैसला किया कि उन्हें उनके कामों के अनुसार क्या दंड

मिलना है। उनके नाम तो जीवन की किताब से हटा दिए गए थे और मृत्यु की किताब में थे। शैतान और उसके दूतों को भी यीशु और सन्तों के द्वारा फैसला सुनाया गया। शैतान की सजा तो उनसे बड़ी थी जिनको उसने पाप करवाया था। उसकी सजा इतनी बड़ी थी कि दूसरे दुष्टों की सजा से तुलना नहीं किया जा सकता था। जिनको उसने ट्ण कर पाप करवाया था वे तो जल्दी ही आग में जल कर भस्म हो गए पर शैतान सब से आखिरी तक जलकर दुःख सहता रहा। GCH 182.2

एक हजार वर्षों के समाप्त होने पर दुष्टों का व्याय करना खत्म हुआ। यीशु स्वर्गीय नगर येरूशलेम को छोड़ कर पृथ्वी की ओर अपने लाखों दूतों के साथ आने लगा। उसके साथ सन्त लोग भी आ रहे थे। यीशु उतर कर जैतून पर्वत पर अपना पाँव जैसे ही रखा कि यह पर्वत एक बड़ा मैदान बन गया। तब यह एक बहुत सुन्दर नगर सा बन गया जिस की बारह नींव और बारह फाटक थे। तीन-तीन फाटक चारों ओर थे। हरेक फाटक में एक-एक दूत खड़े थे। इस्राएल के बारह गोत्रों में हरेक गोत्र के लिए एक-एक फाटक से प्रवेश करना था। यह जय घोष सुनाई पड़ी कि बड़ा नगर। ऐश्वर्यमय नगर स्वर्ग से उतर कर आ रहा है। यह अद्भुत सुन्दर और चमकवान नगर, नया यीरूशलेम जिसे यीशु ने हमारे लिये तैयार किया था, आखिरकार पृथ्वी पर उतर आया। GCH 183.1

आधारित वचन प्रकाशित वाक्य १६:१-२१, २०:२, ७:१५, ४

अध्याय 39 - पाठ ४० - दूसरा पुनरुत्थान

यीशु के साथ पवित्र दूतों का दल और उद्धार प्राप्त सन्त लोग स्वर्ग का पवित्र नगर को छोड़ कर आने लगे। पवित्र दूतगण यीशु के चारों ओर होकर आगवानी कर रहे थे और उद्धार प्राप्त सन्त ने मरे हुए दुष्टों को चिल्ला कर कहा - 'उठो'। जब वे मुर्दो में से जी उठे तो जैसे वे कमजोर, दुबले-पतले रोगी थे वैसे ही उठे। उनमें कोई बदलाहट नहीं थी। क्या ही भयानक दृश्य था यह। पहिले जब सन्त लोग जी उठे। तो अमरता से भरपूर होकर उठे थे। परन्तु दुष्टों का जी उठना के समय साप के चिन्ह उनके चेहरों से झलक रहे थे। राजा और नबाब, छोटे-बड़े बुद्धिमान और अनपढ़ सब नीच दशा में जिलाए गए। सबने यीशु को देखा। जिन्होंने उसे मारा था, हँसी-ठट्टा किया था, काँटों का मुकुट पहनाया था और उसके पंजर को बेधा था, सबने उसे अब महिमा का राजा के रूप में देखा। जिन्होंने उसके चेहरे पर थूका था, वे उभी उसका तेजोमय चेहरा को देख कर डर रहे थे। जिन्होंने उसके पाँवों और हथेलियों पर काँटियाँ ठोकी थी, वे अब उसके चिन्हों को देख रहे थे। जिन्होंने बर्डी से उसके पंजर को निर्दयता के साथ बेधा था, वे उसके चिन्ह को शरीर में देख रहे थे। उनको अब पूरा मालूम हो गया था कि वही यीशु को उन्होंने क्रूस पर चढ़ाया था, उसकी ठट्टा उड़ायी थी, वही है, दूसरा कोई नहीं। इसके पश्चात एक दुःख का सिलसिला जारी होता है, वे उसके सामने से डर कर भागने लगे। GCH 184.1

सब कोई चट्टानों और पहाड़ों से कहने लगे कि यीशु के तेजोमय चेहरे से हमें छिपा लो। एक समय वे उसी का मजाक करते थे। अब डरे हुए हैं। जब सब कोई उसकी महिमा की रोशनी से मर गए तो एक साथ चिल्ला उठे - "धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है। इसके बाद सन्त और दूतगण लोग यीशु के साथ नगर की ओर चले गए। अभी विनाश होने वाले दुष्ट रोते कलपते चिल्लाने लगे। अपने नेताओं को दोष देने लगे। मैंने देखा कि शैतान फिर अपना काम शुरू करने लगा। अपनी प्रजाओं के पास जाकर कहने लगा - आप तो कप्तान थे, बहादुर थे, लड़ाकू थे चलो एक साथ मिल कर सन्तों के विरूद्ध लड़ाई करें। वह अनगिनत लोगों को बहकाता है। वहाँ महान लड़ाकू, नेपोलियन, हिटलर जैसे और भी थे सब को लड़ने के लिये ले जाता है। जी उठने पर उनके मन में वही चाह थी जैसी पहले थी कि राज्य को विजय कर राज्य करें। वे देखते हैं कि उन पर चढ़ाई कर जीत जायेंगे। उनके बदले ये वहाँ महिमा के साथ राज्य करेंगे। GCH 184.2

शैतान उन्हें ठगने में सफल हो जाता है। वे लड़ाई करने के लिये राजी हो जाते हैं। उस अनगिनत सेना में बहुत कारीगर लोग भी थे। वे हथियार बनाने लग जाते हैं। अपने कप्तान शैतान के साथ वे जाते हैं। उसके पीछे राजा और बड़ा समूह उमड़ पड़ता है। हर दल अपना कप्तान के साथ जाता है। वे सब उस पवित्र नगर की ओर आगे बढ़ते हैं। यीशु तुरन्त फाटकों को बन्द कर देता है। शत्रु चारों ओर से इस नगर को घेर लेते हैं। बड़ा युद्ध होने की सम्भावना से सब प्रकार के लड़ने के अस्त्र-शस्त्र उनके पास थे। यीशु और उसके सन्त चमकीले मुकुट पहन कर नगर की

चोटी पर चढ़ गए। यीशु उनको कहता है - हे पापी लोग धर्मियों का पुरस्कार को देखो। हे सन्तो! दुष्टों का प्रतिफल भी देख लो। असंख्य दुष्ट लोग दीवार पर सन्तों की अपार महिमा का मुकुट को देखते हैं। उनके चेहरों से महिमा की रोशनी भी फूट पड़ती हैं। जब यीशु का अतुलनीय महिमा और ऐश्वर्य को देखते हैं तो उनके दिमाग या होश उड़ जाते हैं। उनको मालूम होता है कि उन्होंने इतना बड़ा गौरव और महिमा का धन को खो दिया हैं। वे जानते हैं कि अब उन्हें कुछ न मिलेगा। वे उस खुशहाल सन्तों का दल को देखते हैं। और ईष्र्या करते हैं। पर ये अपने को नगर के बाहर पाते हैं। GCH 185.1

आधारित वचन १ थिस्सुलोनी ४:१६, १७,

प्रकाशित वाक्य ६:१५, १६, ९०:७-९ GCH 186.1

अध्याय 40 - पाठ ४१ - दूसरी मृत्यु

शैतान भीड़ के बीच पहुँच कर उन्हें लड़ाई करने के लिए उत्साहित करता है। इसी समय आकाश से आग की वर्षा होती है जिससे बड़े लोग, लाचार, दुःखित, राजा, लड़ाकू सब के सब एक साथ जल कर मरते हैं। मैंने देखा कि कोई-कोई जल्द ही मर गए पर कुछ लोग देर तक जल कर तड़पते रहे। जैसा उन्होंने अपने शरीर के द्वारा पाप किये थे वैसे ही वे जलकर भस्म हो गए। कुछ लोगों के शरीर बहुत दिनों तक जलते रहे। स्वर्गदूत ने कहा - जीवन का कीड़ा नहीं मरेगा। उनकी आग तब तक नहीं बुझेगी जब तक एक छोटा अंश भी जल कर खत्म न हो जाये। GCH 187.1

शैतान और उसके दूतों को अधिक समय तक जलना पड़ा। शैतान न केवल अपने पापों के लिये सजा पा रहा था पर जितने लोगों को उसने पाप करवाया था सबके पापों के लिए भी सजा पा रहा था। मैंने देखा कि शैतान और उसके दूत जल गए और ईश्वर अपना न्याय से सन्तुष्ट हुआ। सब दूतगण और सब उद्धार प्राप्त सन्त लोग ऊँची आवाज से बोले - आमीन। GCH 187.2

दूत ने कहा - शैतान जड़ है और उसके साथी डालियाँ हैं। अब जड़ और डालियाँ जलायी जायेगीं । ये अनन्त मृत्यु में मर गए। वे फिर कभी भी नहीं उठेंगे। अब ईश्वर का राज्य में कोई पाप नहीं पनपेगा। यह राज्य तो पापरहित और पवित्र होगा। मैंने उस आग को देखा जो दुष्टों को जलाया था। उसने पृथ्वी के जितने कूड़े-कचरे को जला कर साफ कर दिया। फिर मैंने देखा कि पृथ्वी को जला कर साफ कर दिया गया। वहाँ साप का एक भी अंश नहीं था। इसमें पहले जो उबड़-खाबड़ या ऊँचा-नीचा था, वह सम्पूर्ण रूप से समतल हो गया। सारा भूमण्डल पवित्र था। अब बड़ा वाद-विवाद सदा के लिये अन्त हो गया। चारों ओर देखा - जिधर भी देखा सब तरफ सुन्दरता और पवित्रता भी। उद्धार पाये हुए सब लोग क्या छोटे, क्या बड़े, क्या बूढे, क्या बच्चे, अपने-अपने चमकीले मुकुट को यीशु के पाँवों के पास लाकर, उसकी उपासना और स्तुति निमित्त घुटना टेकने लगे। उन्होंने उस प्रभु की उपासना की जो अनन्त काल से है। और रहेगा। यह सुन्दर महिमापूर्ण पृथ्वी अनन्त काल तक सन्तों का निवास स्थान बन गयी। राज्य और पराक्रम और महिमा जो आकाश के नीचे है प्रभु परमेश्वर के सन्तों को सौंप दिया गया। वे युगानुयुग तक इस राज्य में रहेंगे। GCH 187.3

आधारित वचन दानियेल ७:२६, २७, मरकुस ९:४४, ४८, २

पतरस ३:९-१३ प्रकाशित वाक्य २०:६-१०

हम सभी चीजों के अंत की प्रतीक्षा कर रहे हैं

